Daksh®
Super Success Series

Common Question Bank for All Exams.

हिन्दी व्याकरण

परीक्षा–25 25™

Topicwise Previous Year Questions (PYQ)

2011 से अगस्त 2026 तक के व्याख्या सहित प्रश्न
एवं
RPSC, RSSB द्वारा पूछे जा रहे नये पैटर्न के Question समाहित

3000+
Objective Questions
100% Solved & Explained

RSSB, RPSC
एवं
अन्य सभी बोर्ड/विभागों द्वारा आयोजित प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए

Buy Online at :
WWW.DAKSHBOOKS.COM

— आचार्य संदीप मालाकार —

दक्ष®

दिव्य तपस्वी

आचार्य श्री 108

सुंदर सागर जी महाराज

नमोस्तु गुरुदेव

आपके मंगलमय वचनों से जीवन में सद्‌बुद्धि, शांति एवं सम्यक् मार्ग की प्रेरणा मिलती है।

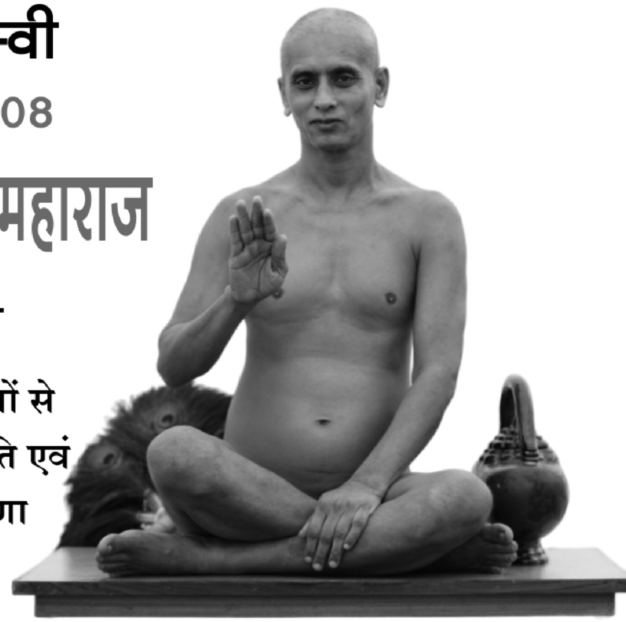

प्रकाशक :

कॉलेज बुक सेन्टर A-19, सेठी कॉलोनी, जयपुर-302 004

© **सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन**

Code No.: D-980

- *प्रकाशक की अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भी अंश का किसी भी प्रणाली के सहारे पुन:उत्पत्ति का प्रयास अथवा किसी भी तकनीकी तरीके (इलेक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल, फ़ॉटोकॉपी, रिकॉर्डिंग, डिजिटल, वेब) के माध्यम से अथवा इस पुस्तक का नाम, टाईटल, चित्र, रेखाचित्र, नक्शे, डिजाईन, कवर डिजाईन, सैटिंग, शिक्षण-सामग्री, विषय-वस्तु, पूर्ण या आंशिक रूप से किसी भी भाषा में हूबहू या तोड़-मरोड़ कर या अदल-बदल कर प्रकाशन या वितरण नहीं किया जा सकता है। इस पुस्तक के पूर्ण प्रतिलिप्याधिकार (Copyright) प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं।*
- *पुस्तक का कम्पोजिंग कार्य कम्प्यूटर द्वारा कराया गया है। पुस्तक के लेखन व प्रकाशन कार्य में लेखक, प्रूफ रीडर, कम्प्यूटर ऑपरेटर एवं प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरतने के बावजूद भी अधूरी या पुरानी जानकारी का होना/कुछ ग़लतियों/कमियों का रह जाना मानवीय भूलवंश सम्भव है, जिसके लिए पुस्तक प्रकाशन से जुड़े मुद्रक, लेखक एवं प्रकाशक उत्तरदायी नहीं होंगे। पाठकों के सुझाव सादर आमंत्रित हैं।*
- *सभी विवादों का न्यायक्षेत्र जयपुर, राजस्थान होगा।*

Daksh®

Common Question Bank for All Exams.

हिन्दी व्याकरण

[Hindi Grammar]

परीक्षा-25[25]™

विगत वर्षों (2026-2011) के (PYQ) अध्यायवार व्याख्या सहित प्रश्न

EXAM REVIEW

	Exam Name	Exam Year
1.	Grade 1st (Teacher) Hindi	**2026**, 2016
2.	Grade 2nd (Teacher) Hindi	**2026**, **2025**, 2024, 2023, 2022, 2019, 2018, 2017, 2014
3.	REET (Level-1 & Level-2)	**2026**, **2025**, 2025, 2021, 2018, 2016
4.	PTET (Pre. Teacher Education Test / Pre B.Ed.)	**2025**, 2024
5.	D.El.Ed. / BSTC	**2025**, 2024
6.	CET (10+2 Level)	2024, 2023
7.	CET (Graduation / General Level)	2024, 2023
8.	LDC (Lower Division Clerk)	2026, 2024, 2018, 2016, 2014, 2011
9.	Rajasthan High Court (LDC)	2022, 2017
10.	Stenographer	2024, 2021, 2013
11.	Fourth Class	**2025**
12.	PSI / SI (Police Sub Inspector)	**2026**, 2021, 2018
13.	Platoon Commander-I	**2025**
14.	Patwar / Patwari	**2025**, 2021, 2016
15.	VDO (Village Development Officer)	**2025**, 2022
16.	Agriculture Supervisor	**2026**, 2021, 2019, 2015
17.	Jr. Accountant	2024, 2016, 2015, 2011
18.	Women Supervisor	2024
19.	Supervisor (Female) (Anganwadi)	2019
20.	Hostel Superintendent	2024
21.	Driver	**2025**
22.	Conductor	**2025**

-● **आचार्य संदीप मालाकार** ●-
NET, साहित्याचार्य, शिक्षा शास्त्री

DAKSH PUBLICATIONS
(A Unit of College Book Centre)
WWW.DAKSHBOOKS.COM

विभिन्न परीक्षाओं के पाठ्यक्रम का अध्यायवार वर्गीकरण

क्र.सं.	अध्याय का नाम	CET (10+2)	CET Graduation	LDC	Stenographer	Fourth Class	Patwar	VDO (Village Dev. Officer)	PSI & Platoon Commander-I	LDC-High Court	Agriculture Supervisor	Jr. Accountant	Women Supervisor (Anganwadi)	Hostel Superintendent	Driver & Conductor	REET (Level-1 & Level-2)	Grade 1st Teacher	Grade 2nd Teacher	D.El.Ed. / BSTC	PTET (Pre B.Ed.)
1	वर्णमाला व वर्ण विचार	x	x	x	✓	✓	x	✓	x	x	x	x	x	✓	x	✓	x	✓	x	✓
2	शब्दकोश पठन	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	✓	x	x	x
3	उपसर्ग	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
4	प्रत्यय	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
5	पर्यायवाची शब्द	✓	✓	✓	x	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
6	विलोम शब्द	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
7	संधि	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
8	समास	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	x	✓	✓	✓	✓	✓
9	संज्ञा	✓	✓	✓	x	✓	x	✓	✓	x	x	✓	x	✓	x	✓	x	✓	x	✓
10	सर्वनाम	✓	✓	x	x	✓	x	✓	✓	x	x	x	x	✓	x	✓	x	✓	x	✓
11	विशेषण	✓	✓	✓	x	✓	x	✓	✓	x	x	✓	x	✓	x	✓	x	✓	x	✓
12	क्रिया	✓	✓	✓	x	✓	x	✓	✓	x	x	x	✓	✓	x	✓	x	✓	x	✓
13	अव्यय (अविकारी शब्द)	✓	✓	x	x	✓	x	✓	✓	x	x	x	x	✓	x	✓	x	✓	x	✓
14	लिंग	x	x	x	x	✓	x	✓	✓	x	x	x	x	✓	x	✓	x	x	x	✓
15	वचन	x	x	x	x	✓	x	✓	✓	x	x	x	x	✓	x	✓	x	x	x	✓
16	काल	x	x	x	x	✓	x	✓	✓	x	x	x	x	✓	✓	✓	x	x	x	✓
17	तत्सम, तद्भव, देशज व विदेशज	x	x	x	x	✓	x	✓	✓	x	x	x	x	✓	✓	✓	x	✓	x	✓
18	शब्द युग्म	✓	x	✓	x	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	x	✓	✓	✓	✓	✓
19	अनेकार्थक शब्द	✓	✓	✓	✓	✓	x	✓	x	✓	x	✓	✓	✓	x	✓	✓	✓	x	✓
20	समानार्थक शब्द	x	x	x	x	✓	x	✓	✓	x	x	x	x	✓	✓	✓	x	x	x	✓
21	वाक्यांश के लिए एक शब्द	✓	✓	✓	x	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
22	विराम चिह्न	x	✓	x	✓	✓	x	✓	✓	x	x	x	x	✓	x	✓	x	x	x	✓
23	वाच्य	x	x	✓	x	✓	x	✓	✓	✓	x	✓	✓	✓	x	✓	x	x	x	✓
24	कारक	x	✓	x	x	✓	x	✓	✓	x	x	x	x	✓	x	✓	x	x	x	✓
25	वृत्ति	x	x	x	x	x	x	x	✓	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x
26	पक्ष	x	x	x	x	x	x	x	✓	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x
27	शब्द शुद्धि	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
28	वाक्य विचार (अंग व भेद)	x	x	x	x	✓	x	✓	✓	x	x	x	x	✓	x	✓	x	✓	✓	✓
29	वाक्य शुद्धि	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
30	वाक्य रूपान्तरण (अनुवाद)	x	x	✓	x	x	x	✓	x	x	x	✓	x	x	✓	x	x	x	x	✓
31	मुहावरे	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	x	✓	✓	✓
32	लोकोक्तियाँ	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	x	✓	✓	✓
33	शब्द शक्तियाँ	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	✓	✓	x	x
34	हिन्दी भाषा का विकास व बोलियाँ	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	✓	x	x
35	राजभाषा हिन्दी के प्रावधान	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	✓	x	x
36	व्यावहारिक/कार्यालयी पत्र	✓	✓	✓	✓	x	x	x	x	x	x	✓	x	x	x	x	✓	x	x	x
37	पारिभाषिक शब्दावली	✓	✓	✓	✓	x	✓	✓	✓	x	✓	✓	✓	x	x	x	x	x	x	x
38	छन्द	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	✓	✓	x	x
39	अलंकार	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	✓	✓	x	x
40	अपठित गद्यांश	x	x	x	x	✓	x	✓	x	x	x	x	x	✓	x	x	✓	✓	x	✓
41	अपठित पद्यांश	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	✓	✓	x	x

अनुक्रमणिका

अध्याय नं. *अध्याय का नाम* .... *पृष्ठ संख्या*

हिन्दी व्याकरण (HINDI GRAMMAR) भाग-1

1	**वर्ण विचार** (वर्ण भेद, स्वर, व्यंजन, अनुस्वार व विसर्ग, उच्चारण स्थान, प्रयत्न)	7
2	**शब्दकोश पठन** (स्वर, अनुस्वार, विसर्ग व व्यंजन क्रमानुसार शब्दकोश में शब्दों का क्रम निर्धारण)	15
3	**उपसर्ग** (तत्सम, तद्‌भव, विदेशी उपसर्ग)	19
4	**प्रत्यय** (कृत् व तद्धित प्रत्यय के भेद व उदाहरण, विदेशी भाषाओं के प्रत्यय)	30
5	**विलोम शब्द**	41
6	**पर्यायवाची शब्द**	52
7	**संधि** (स्वर, व्यंजन व विसर्ग संधि के भेद, नियम, संधि-विच्छेद व उदाहरण)	64
8	**समास** (समास के भेद, समास-विग्रह व उदाहरण)	87
9	**संज्ञा** (व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक संज्ञा के भेद व उदाहरण)	109
10	**सर्वनाम** (पुरुषवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, प्रश्नवाचक, संबंधवाचक, निजवाचक सर्वनाम के भेद व उदाहरण)	116
11	**विशेषण** (गुणवाचक, परिमाणवाचक, संख्यावाचक, सार्वनामिक विशेषण)	122
12	**क्रिया व क्रिया-विशेषण** (क्रिया के भेद व उदाहरण, क्रिया से क्रिया-विशेषण का निर्माण)	132
13	**अव्यय (अविकारी शब्द)** (क्रिया विशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक अव्यय एवं निपात)	144
14	**लिंग**	149
15	**वचन**	155
16	**काल** (वर्तमानकाल, भूतकाल, भविष्यत्‌काल के भेद व उदाहरण)	160
17	**तत्सम, तद्भव, देशज व विदेशज शब्द**	166
18	**शब्द-युग्म** (श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द)	176
19	**अनेकार्थक शब्द**	185
20	**समानार्थक शब्द**	192
21	**वाक्यांश के लिए एक शब्द**	195
22	**विराम चिह्न** (पूर्णविराम, अल्पविराम, विस्मयादिबोधक, कोष्ठक, निर्देशक, हंसपद, लाघव चिह्न, उद्धरण व विवरण चिह्नों के उदाहरण)	209

अध्याय नं. अध्याय का नाम .... पृष्ठ संख्या

23 वाच्य (कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य) 218
24 कारक 225
25 वृत्ति (आज्ञार्थक, इच्छार्थक, संभावनार्थक, सामर्थ्य सूचक, बाध्यता सूचक, निश्चयार्थक, संकेतार्थक वृत्ति के उदाहरण) 230
26 पक्ष (आरंभद्योतक, सातत्यबोधक, प्रगतिबोधक, पूर्णताबोधक, नित्यताबोधक, आवृत्तिमूलक) 233
27 शब्द शुद्धि 236
28 वाक्य रचना (वाक्य के अंग, वाक्य के प्रकार - सरल, संयुक्त, मिश्रित वाक्य) 250
29 वाक्य शुद्धि (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, अव्यय, लिंग, वचन, काल, पदक्रम की अशुद्धियाँ व उदाहरण) 265
30 वाक्य रूपान्तरण (सरल, संयुक्त व मिश्र वाक्यों का हिन्दी से अंग्रेजी व अंग्रेजी से हिन्दी में रूपान्तरण) 286
31 मुहावरे (अर्थ व वाक्य प्रयोग) 290
32 लोकोक्तियाँ (अर्थ व वाक्य प्रयोग) 306

हिन्दी व्याकरण (HINDI GRAMMAR) भाग-2

33 शब्द-शक्तियाँ (अभिधा, लक्षणा, व्यंजना के भेद व उदाहरण) 319
34 हिन्दी भाषा का उद्भव व विकास, हिन्दी भाषा की बोलियाँ व देवनागरी लिपि का परिचय 322
35 राजभाषा हिन्दी के संवैधानिक प्रावधान (राजभाषा संबंधी आयोग व समितियाँ) 327
36 व्यावहारिक पत्र लेखन व कार्यालयी पत्रों से संबंधित ज्ञान (कार्यालयी पत्र के अंग, औपचारिक, अनौपचारिक एवं अन्य पत्रों के भेद व उदाहरण) 329
37 पारिभाषिक शब्दावली (अंग्रेजी के पारिभाषिक (तकनीकी) शब्दों के समानार्थक हिन्दी शब्द) 338
38 छन्द 352
39 अलंकार 357
40 अपठित गद्यांश 361
41 अपठित पद्यांश 367

1 वर्ण विचार

(वर्ण भेद, स्वर, व्यंजन, अनुस्वार व विसर्ग, उच्चारण स्थान, प्रयत्न)

वर्ण व अक्षर

◈ **स्वर वर्गीकरण के संबंध में असंगत विकल्प है—**

(A) सभी स्वर अल्पप्राण होते हैं।
(B) अनुनासिक स्वर का चिह्न (ँ) चन्द्रबिन्दु कहलाता है।
(C) 'ऋ' का उच्चारण तालु से होता है।
(D) सभी स्वर घोष होते हैं।

Ans.–[C] [Grade 2nd • 13.07.2026]

व्याख्या—**'ऋ'** स्वर का उच्चारण स्थान **मूर्धा** होता है। व्याकरण नियम—संस्कृत के सूत्र **'ऋटुरषाणां मूर्धा'** के अनुसार ऋ , ट वर्ग (ट, ठ, ड, ढ, ण), र और ष का उच्चारण मूर्धा से होता है। तालु से उच्चारण **इ, ई** स्वरों का होता है।

◈ **निम्न में से अंतस्थ वर्ण है—**

(A) य् (B) च् (C) क् (D) श्

Ans.–[A] [Grade 2nd • 13.07.2026]

व्याख्या—**'य्'** वर्ण **अंतस्थ व्यंजन** की श्रेणी में आता है। जिन वर्णों का उच्चारण स्वर और व्यंजन के मध्य स्थित होता है उन्हें अंतस्थ व्यंजन कहते हैं। हिंदी वर्णमाला में इनकी कुल संख्या चार है—**य्, र्, ल्, व्**। शेष विकल्पों में **'च्'** व **'क्'** स्पर्श व्यंजन तथा **'श्'** ऊष्म व्यंजन है।

◈ **'इ, ई' स्वर हैं—**

(A) ओष्ठ्य (B) कंठ्य (C) तालव्य (D) मूर्धन्य

Ans.–[C] [Grade 2nd • 13.07.2026]

व्याख्या—**'इ, ई'** स्वरों का उच्चारण **तालु** से होता है, इसलिए इन्हें **तालव्य** स्वर कहा जाता है।
नियम—जिन वर्णों का उच्चारण जीभ के तालु से स्पर्श करने पर होता है, वे तालव्य कहलाते हैं।
उदाहरण—इ, ई, च-वर्ग (च, छ, ज, झ, ञ), य, श। अन्य उच्चारण स्थान—ओष्ठ्य (उ, ऊ), कंठ्य (अ, आ), मूर्धन्य (ऋ)।

◈ **संयुक्त स्वर का उदाहरण है—**

(A) अ (B) आ (C) इ (D) ए

Ans.–[D] [PTET • 15.06.2025]

व्याख्या—'ए' संयुक्त स्वर है। यह **'अ + इ'** के मेल से बना है। संयुक्त स्वर वे होते हैं जो दो स्वरों के मेल से बनते हैं। हिंदी में चार संयुक्त स्वर हैं – **ए, ऐ, ओ, औ**। **'अ'** तथा **'आ'** एवं **'इ'** मूल स्वर हैं।

◈ **निम्नलिखित में ह्रस्व स्वर नहीं है—**

(A) उ (B) ऋ (C) अ (D) ए

Ans.–[D] [Stenographer • 05-10-2024]

व्याख्या—हिंदी वर्णमाला में उच्चारण में लगने वाले समय के आधार पर स्वरों को ह्रस्व और दीर्घ में बाँटा गया है। **'अ', 'इ', 'उ' और 'ऋ' ह्रस्व स्वर हैं। 'आ', 'ई', 'ऊ', 'ए', 'ऐ', 'ओ', 'औ'** दीर्घ स्वर हैं। दिए गए विकल्पों में **'अ', 'उ'** और **'ऋ'** ह्रस्व स्वर हैं। 'ए' एक दीर्घ स्वर है (यह **'अ'** + **'इ'** के मेल से बना संयुक्त स्वर भी है)। अतः **'ए'** ह्रस्व स्वर नहीं है।

◈ **नीचे दो कथन दिए गए हैं :**

कथन - I : 'ह' अनुनासिक वर्ण है।
कथन - II : 'उ' घोष वर्ण है।
उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नलिखित विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर चुनें :

(A) कथन I और II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, किन्तु कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, किन्तु कथन II सत्य है।

Ans.–[D] [CET Gr. Level • Shift-1st • 28-09-2024]

व्याख्या—यह विकल्प सही है क्योंकि कथन I गलत है जबकि कथन II सही है।

✧ कथन I असत्य है क्योंकि **'ह'** एक **'ऊष्म व्यंजन'** है, अनुनासिक नहीं। **'अनुनासिक वर्ण'** वे होते हैं जिनका उच्चारण नाक और मुँह दोनों से होता है। जैसे – **ङ, ञ, ण, न, म**। **'ह'** का उच्चारण काकल (गले के अंदर) से होता है और यह एक **'सघोष महाप्राण ध्वनि'** है।

✧ कथन II सत्य है क्योंकि **'उ'** एक घोष वर्ण है। स्वर वर्ण (**अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ**) घोष वर्णों की श्रेणी में आते हैं। घोष वर्ण वे होते हैं जिनके उच्चारण में स्वर तंत्रियों में कंपन होता है।

◈ **निम्नलिखित में से दीर्घ स्वर नहीं है—**

(A) आ (B) ऋ (C) ई (D) ऐ

Ans.–[B] [PTET Pre. Tea. Edu. • 9.06.2024]

व्याख्या—हिंदी भाषा में दीर्घ स्वर वे होते हैं जिनका उच्चारण अपेक्षाकृत अधिक समय तक किया जाता है। **'आ', 'ई'**, और **'ऐ'** दीर्घ स्वर हैं, जबकि **'ऋ'** एक दीर्घ स्वर नहीं माना जाता।

✧ आ = अ + अ
✧ ई = इ + इ
✧ ऐ = आ + ई

◈ **सुमेलित कीजिए—**

(1) मूल स्वर	(i) ख, छ, फ, स
(2) दीर्घ स्वर	(ii) आ, ई, ऊ, ऐ
(3) अल्पप्राण व्यंजन	(iii) अ, इ, उ, ऋ
(4) अघोष व्यंजन	(iv) य, र, ल, व

नीचे दिए गए विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए—

(A) 1-ii, 2-iii, 3-iv, 4-i (B) 1-i, 2-ii, 3-iii, 4-iv
(C) 1-iii, 2-ii, 3-iv, 4-i (D) 1-i, 2-ii, 3-iv, 4-iii

Ans.–[C] **[CET Gr. Level • 7.01.2023]**

व्याख्या—उपरोक्त को सही सुमेलित करने पर निम्न उत्तर होगा—

(1) मूल स्वर	**(iii) अ, इ, उ, ऋ**
(2) दीर्घ स्वर	**(ii) आ, ई, ऊ, ऐ**
(3) अल्पप्राण व्यंजन	**(iv) य, र, ल, व**
(4) अघोष व्यंजन	**(i) ख, छ, फ, स**

ध्वनि

◈ **'ध्वनि' और 'वर्ण' के बारे में कौन-सा कथन सही है?**

(A) ध्वनि लिखी जाती है, वर्ण बोला जाता है।
(B) ध्वनि और वर्ण में कोई अंतर नहीं है।
(C) ध्वनि सुनने योग्य आवाज़ है, जबकि वर्ण उसका लिखित रूप है।
(D) ध्वनि केवल वाक्यों में होती है।

Ans.–[C]

व्याख्या—भाषा की सबसे छोटी इकाई को बोलने/सुनने में ध्वनि और लिखने में वर्ण कहते हैं।
व्याकरण नियम—मुँह से निकलने वाली आवाज़ 'ध्वनि' (श्रव्य) है। जब उसी ध्वनि को लिखने के लिए कोई चिह्न बना दिया जाता है, तो वह 'वर्ण' बन जाता है।
उदाहरण—जब हम बोलते हैं 'क', तो वह ध्वनि है। जब कागज़ पर लिखते हैं 'क', तो वह वर्ण है।

स्वर के भेद

◈ **जब एक ही स्वर के ह्रस्व या दीर्घ रूप साथ-साथ आएँ तो दोनों स्वरों के स्थान पर कौनसा स्वर हो जाता है?**

(A) ह्रस्व स्वर (B) दीर्घ स्वर
(C) अर्द्ध स्वर (D) पूर्ण स्वर

Ans.–[B] **[CET Gr. Level • Shift-2nd • 27-09-2024]**

व्याख्या—हिंदी व्याकरण की दीर्घ संधि का नियम है कि जब दो सजातीय (एक ही वर्ग के) स्वर, चाहे वे ह्रस्व (छोटे) हों या दीर्घ (बड़े), एक दूसरे के बाद आते हैं, तो वे मिलकर अपने दीर्घ रूप में परिवर्तित हो जाते हैं।
उदाहरण के लिए—अ + अ = आ (धर्म + अर्थ = **धर्मार्थ**); इ + ई = ई (कवि + ईश्वर = **कवीश्वर**); उ + उ = ऊ (भानु + उदय = **भानूदय**)।

◈ **हिन्दी वर्णमाला में स्वरों की कुल संख्या कितनी है?**

(A) 10 (B) 11 (C) 12 (D) 13

Ans.–[B] **[Stenographer Paper-II • 21.3.2021]**

व्याख्या—हिन्दी वर्णमाला में स्वरों की कुल संख्या **11** है—
अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ एवं **ऋ**।
अनुस्वार **(अं)** और विसर्ग **(अः)** को **अयोगवाह** कहा गया है।

अनुस्वार

◈ **'गङ्गा' शब्द में लगे 'अनुस्वार' का उच्चारण किस अक्षर की तरह होगा?**

(A) म् (B) न् (C) ण् (D) ङ्

Ans.–[D]

व्याख्या—'गंगा' में अनुस्वार का उच्चारण क-वर्ग के पाँचवें अक्षर 'ङ्' जैसा होता है।
व्याकरण नियम—अनुस्वार के ठीक बाद जिस वर्ग **(क, च, ट, त, प)** का अक्षर आता है, बिंदु का उच्चारण उसी वर्ग के पाँचवें अक्षर (पंचमाक्षर) में बदल जाता है।
उदाहरण—'गंगा' में बिंदु के बाद 'ग' (क-वर्ग) है, इसलिए 'ङ्' की आवाज़ आएगी। 'चंचल' में 'च' के कारण 'ञ्' की आवाज़ आती है।

अनुनासिक

◈ **अनुनासिक का संबंध होता है—**

(A) केवल नाक से (B) केवल मुख से
(C) नाक और मुख से (D) इनमें से कोई नहीं

Ans.–[C] **[Stenographer Paper-II 21.3.2021]**

व्याख्या—अनुनासिक का संबंध **'नाक'** और **'मुख'** से होता है। **''मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः''** – सूत्र के अनुसार **'मुख'** और **'नासिका'** (नाक) से बोले जाने वाले वर्ण **अनुनासिक** कहलाते हैं। जैसे—**ङ्, ञ्, ण्, न्, म्** ।

मात्राएँ

◈ **हिंदी का वह कौन-सा स्वर है जिसकी अपनी कोई 'मात्रा' नहीं होती, लेकिन वह हर पूर्ण व्यंजन में छिपा होता है?**

(A) आ (B) इ (C) अ (D) उ

Ans.–[C]

व्याख्या—'अ' स्वर का कोई मात्रा चिह्न नहीं होता, इसलिए इसे उदासीन स्वर कहते हैं।
व्याकरण नियम—पूरे व्यंजन को बोलने के लिए 'अ' की ज़रूरत होती है। अगर व्यंजन में से 'अ' को हटाना हो, तो मात्रा न होने के कारण अक्षर के नीचे हलंत (्) लगाना पड़ता है।
उदाहरण—पूरा अक्षर 'क' है। अगर इसे आधा दिखाना हो तो 'क्' लिखा जाएगा।

व्यंजन वर्ण

◈ **निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है?**

a. जिसके खण्ड न हो सकें, उस मूल ध्वनि को वर्ण कहते हैं।
b. 'सबेरा' शब्द में तीन ध्वनियां हैं और इन ध्वनियों के खण्ड नहीं किए जा सकते हैं।
c. हिन्दी वर्णमाला में 43 वर्ण हैं, जिसमें 10 स्वर और 34 व्यंजन हैं।
d. स्वरों का उच्चारण स्वतंत्रता से होता है।
e. व्यंजन स्वर की सहायता के बिना नहीं बोले जा सकते हैं।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए—

(A) a और b (B) b और c

(C) a और d (D) d और e

Ans.–[B] [REET • Hindi (L-2) • 19.01.2026]

व्याख्या—**'सबेरा'** शब्द में केवल तीन ध्वनियाँ नहीं हैं, बल्कि इसमें **छह मूल ध्वनियाँ (स् + अ + ब् + ए + र् + आ)** हैं, जिनके आगे खण्ड नहीं किए जा सकते। मानक हिन्दी वर्णमाला में कुल **52 वर्ण** माने जाते हैं (**11 स्वर, 33 मूल व्यंजन, 4 संयुक्त व्यंजन** आदि)। **व्याकरणिक नियम–वर्ण** भाषा की वह सबसे छोटी इकाई है जिसके टुकड़े नहीं किए जा सकते।

❖ **सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए—**

सूची I	सूची II
a. अंतःस्थ	I. ह
b. ऊष्म	II. ल
c. संयुक्त व्यंजन	III. ढ़
d. द्विगुण व्यंजन	IV. क्ष

नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें—

(A) a-II, b-I, c-IV, d-III (B) a-I, b-II, c-III, d-IV

(C) a-III, b-IV, c-II, d-I (D) a-IV, b-II, c-I, d-III

Ans.–[A] [REET • Hindi (L-2) • 19.01.2026]

व्याख्या—**अंतःस्थ व्यंजन (य, र, ल, व)** स्वर और व्यंजन के मध्य स्थित होते हैं। अतः **'ल'** एक **अंतःस्थ** व्यंजन है। **ऊष्म व्यंजन (श, ष, स, ह)** के उच्चारण में वायु रगड़ खाकर ऊष्मा पैदा करती है, अतः **'ह'** ऊष्म व्यंजन है। **संयुक्त व्यंजन (क्ष, त्र, ज्ञ, श्र)** दो व्यंजनों के मेल से बनते हैं। **द्विगुण/उत्क्षिप्त व्यंजन** (ड़, ढ़) के उच्चारण में जीभ झटके से नीचे आती है।

❖ **निम्नलिखित में असत्य कथन की पहचान कीजिए—**

(A) अनुस्वार तीव्र और अनुनासिक धीमी ध्वनि है।

(B) विसर्ग तालव्य वर्ण है।

(C) संयुक्त व्यंजन के पूर्व ह्रस्व स्वर का उच्चारण कुछ झटके के साथ होता है, जिससे दोनों व्यंजनों का उच्चारण स्पष्ट हो जाता है।

(D) दो महाप्राण व्यंजनों का उच्चारण एक साथ नहीं हो सकता है।

Ans.–[B] [REET • Hindi (L-2) • 19.01.2026]

व्याख्या—विसर्ग का उच्चारण कण्ठ (गले) से होता है और इसकी ध्वनि **'ह'** के समान निकलती है। तालव्य वर्ण वे होते हैं जिनका उच्चारण तालु से होता है। (जैसे- **'च'** वर्ग, **'इ', 'ई', 'य', 'श'**)। **'अ', 'आ', 'क'–वर्ग, 'ह'** और **विसर्गः** का उच्चारण स्थान कण्ठ होता है। विसर्ग का प्रयोग – **प्रातः, दुःख, अंततः।**

❖ **व्यंजन वर्णों के संबंध में कौनसा विकल्प सुमेलित नहीं है?**

(A) श, ष—संघर्षहीन (B) य, व—अर्धस्वर

(C) च, छ—स्पर्श संघर्षी (D) ग, घ—स्पर्श व्यंजन

Ans.–[A] [CET Gr. Level • 7.01.2023]

व्याख्या—व्यंजन वर्णों के संबंध में विकल्प (A) सुमेलित नहीं है।
श, ष—संघर्षहीन (अशुद्ध)
इसका सही शुद्ध रूप है—श, ष = ऊष्म वर्ण

✧ **ऊष्म वर्ण**—जिन वर्णों के उच्चारण में मुख से **'ऊष्मा'** निकलती है वे **'ऊष्म व्यंजन'** कहलाते हैं। इनके उच्चारण में श्वास का जोर अधिक रहता है ये चार प्रकार के होते हैं—**श, स, ष, ह।**

✧ **स्पर्श संघर्षी**—जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय प्राणवायु मुख्य अवयवों को स्पर्श करती हुई संघर्ष के साथ बाहर निकलती है वे **'स्पर्श संघर्षी व्यंजन'** कहलाते हैं। ये चार हैं—**च, छ, ज, झ।**

✧ **संघर्षी व्यंजन**—जिन वर्णों के उच्चारण में मुख के अंगों के आपस में पास या निकट आने से वायु मार्ग संकरा या संकीर्ण हो जाता है तथा हवा **'घर्षण'**, **'रगड़'** के साथ निकलती है वे **'संघर्षी व्यंजन'** होते हैं। ये चार हैं—**श्, ष्, स्, ह्।** इनको **'ऊष्म व्यंजन'** भी कहा जाता है।

✧ **संघर्षहीन व्यंजन**—जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय प्राणवायु बिना किसी संघर्ष के मुख से बाहर निकल जाए वे **''संघर्षहीन व्यंजन''** कहलाते हैं। ये दो हैं—**'य'** एवं **'व'**। इनका दूसरा नाम **'अर्द्धस्वर'** भी है।

❖ **असंगत विकल्प चुनिए—**

(A) ब—ओष्ठ्य, घोष, अल्पप्राण

(B) य—तालव्य, अल्पप्राण, घोष

(C) ष—अल्पप्राण, मूर्धन्य, अघोष

(D) ई—अग्र, संवृत्त, अवृत्तमुखी

Ans.–[C] [CET Gr. Level • 7.01.2023]

व्याख्या—उपरोक्त में से असंगत विकल्प (C) है— **'ष'**—अल्पप्राण, **मूर्धन्य, अघोष।**

(1) सभी ऊष्म वर्ण महाप्राण होते हैं—**श, ष, स, ह**। अतः यह वर्ण महाप्राण है।

(2) यह मूर्धन्य व्यंजन वर्णों के अंतर्गत आता है।
'ट' वर्ग—**(ट, ठ, ड, ढ, ण)** 'र्' एवं 'ष्' आदि वर्ण मूर्धा से बोले जाते हैं।

✧ **अघोष**—जिन व्यंजनों के उच्चारण के गले में कम्पन नहीं होता वे अघोष वर्ण होते हैं। वर्गों के 'पहले' व 'दूसरे' वर्ण एवं **श, ष, स** वर्ण अघोष होते हैं एवं विसर्ग **(:) अघोष** है।

स्पर्श व्यंजन

❖ **वर्गानुसार हिन्दी के स्पर्श व्यंजनों के उच्चारण स्थान का सही क्रम है—**

a. कंठ b. तालु c. दंत d. ओष्ठ e. मूर्द्धा

नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें—

(A) a, b, c, d, e (B) b, c, e, a, d

(C) a, b, e, c, d (D) a, c, b, d, e

Ans.–[C] [REET • Hindi (L-2) • 19.01.2026]

व्याख्या—हिन्दी वर्णमाला में **स्पर्श व्यंजनों** के उच्चारण स्थानों का वैज्ञानिक और सही क्रम मुख के भीतर (गले) से बाहर (होंठ) की ओर होता है। **कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त, और ओष्ठ**। यही क्रम क्रमशः पाँचों वर्गों अर्थात् **'क–वर्ग', 'च–वर्ग', 'ट–वर्ग', 'त–वर्ग' और 'प–वर्ग'** पर लागू होता है। जिन व्यंजनों के उच्चारण में जीभ मुख के विभिन्न अवयवों का पूरी तरह स्पर्श करती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं। इनकी कुल संख्या **25** (**'क'** से **'म'** तक) होती है।

अन्तस्थ व्यंजन

◈ नीचे दो कथन दिए गए हैं—
कथन - I : 'र' अन्तःस्थ व्यंजन वर्ण है।
कथन - II : 'ई' का उच्चारण स्थान तालु है।
उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नलिखित विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर चुनें—
(A) कथन I और II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, किन्तु कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, किन्तु कथन II सत्य है।
Ans.–[A] [CET (Graduation) • Shift-1st • 27-09-2024]

व्याख्या—कथन I सत्य है। हिंदी वर्णमाला में **'य, र, ल, व'** को **'अन्तःस्थ व्यंजन'** कहा जाता है क्योंकि इनके उच्चारण में श्वास का अवरोध बहुत कम होता है और जीभ मुख के किसी भाग को पूरी तरह स्पर्श नहीं करती, जिससे इनका उच्चारण स्वर और व्यंजन के मध्य का होता है। कथन II भी सत्य है। **'इ'** और **'ई'** स्वरों का उच्चारण स्थान **'तालु'** है। इनके उच्चारण के समय जीभ का मध्य भाग ऊपरी कठोर तालु को स्पर्श करता है।

ऊष्म व्यंजन

◈ **हिंदी में 'श, ष, स, ह' को 'ऊष्म व्यंजन' क्यों कहा जाता है?**
(A) क्योंकि हवा बिना किसी रुकावट के बाहर आती है।
(B) क्योंकि बोलते समय हवा मुँह में रगड़ खाकर गरमी पैदा करती है।
(C) क्योंकि ये अक्षर हमेशा नाक से बोले जाते हैं।
(D) क्योंकि इन्हें बोलने में स्वर-तंत्रियों में कंपन नहीं होता।
Ans.–[B]

व्याख्या—**व्याकरण नियम**—जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय फेफड़ों से आने वाली हवा मुँह के अंदर संकरे रास्ते से रगड़ खाती हुई बाहर निकलती है, जिससे ऊष्मा पैदा होती है, उन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं।
उदाहरण—हिंदी वर्णमाला में कुल 4 ऊष्म व्यंजन हैं—**श, ष, स, ह**।

संयुक्त व्यंजन

◈ **केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा मानक हिंदी वर्णमाला में संयुक्त व्यंजन के रूप में स्वीकृत लिपि चिह्न नहीं है—**
(A) ज्ञ (B) द्य (C) क्ष (D) त्र
Ans.–[B] [Grade 1st • Hindi • 31.05.2026]

व्याख्या— केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा जारी मानक हिंदी वर्णमाला में **स्वतंत्र लिपि चिह्न** के रूप में **केवल 4 संयुक्त व्यंजनों** को ही मान्यता दी गई है। **व्याकरण नियम** – दो अलग-अलग व्यंजनों के योग से बनने वाले वर्ण 'संयुक्त व्यंजन' कहलाते हैं। मानक वर्णमाला में स्वीकृत 4 संयुक्त व्यंजन निम्न प्रकार है–
1. **क्ष** = क् + ष + अ (जैसे- क्षत्रिय)
2. **त्र** = त् + र् + अ (जैसे- त्रिशूल)
3. **ज्ञ** = ज् + ञ् + अ (जैसे- ज्ञानी)
4. **श्र** = श् + र् + अ (जैसे– श्रमिक) **'द्य' (द् + य)** एक संयुक्ताक्षर (जैसे- विद्या) अवश्य है। इसे मानक वर्णमाला सूची में अलग से **'संयुक्त व्यंजन'** का स्वतंत्र स्थान प्राप्त नहीं है।

◈ **इनमें संयुक्त व्यंजन कौन–सा है?**
(A) ढ़ (B) ज्ञ (C) ङ (D) ड़
Ans.–[B] [Stenographer Paper-II • 21.3.2021]

व्याख्या—इनमें संयुक्त व्यंजन **'ज्ञ'** है। इसका सही स्पष्टीकरण निम्न प्रकार है— ज + ञ = **ज्ञ**
इसके अतिरिक्त संयुक्त व्यंजन हैं—**क्ष, त्र** एवं **श्र**।
क् + ष् + अ = **क्ष**
त् + र् + अ = **त्र**
श् + र् + अ = **श्र**

उत्क्षिप्त व्यंजन

◈ **प्रयत्न के आधार पर 'ड़' व्यंजन है—**
(A) पार्श्विक (B) उत्क्षिप्त (C) नासिक्य (D) लुंठित
Ans.–[B] [Grade 1st • Hindi • 31.05.2026]

व्याख्या— यहाँ **'ड़'** या **'ढ़'** आधार पर उत्तर **'उत्क्षिप्त'** होगा।)
व्याकरण नियम – प्रयत्न के आधार पर जिन व्यंजनों के उच्चारण में जीभ की नोंक पहले ऊपर उठकर मूर्धा को छुए और फिर झटके के साथ नीचे आए, उन्हें **उत्क्षिप्त व्यंजन (फेंका हुआ या ताड़नजात)** कहते हैं। हिंदी में **'ड़' और 'ढ़'** उत्क्षिप्त व्यंजन माने जाते हैं। अन्य **महत्वपूर्ण उदाहरण—**
✧ **पार्श्विक** – 'ल' **(हवा जीभ के बगल से निकलती है।)**
✧ **लुंठित/प्रकंपित** – 'र' **(जीभ में कंपन होता है।)**
✧ **नासिक्य** – **'ङ्, ञ्, ण्, न्, म्' (हवा नाक से निकलती है।)**

लुंठित व्यंजन

◈ **प्रकम्पित ध्वनि है—**
(A) र (B) य (C) व (D) ल
Ans.–[A] [Grade 1st • Hindi • 31.05.2026]

व्याख्या— **प्रकंपित या लुंठित व्यंजन** – जिन ध्वनियों के उच्चारण में जीभ की **नोंक में प्रकंपन** कंपन होता है और हवा जीभ के ऊपर से लुढ़कती हुई निकलती है, उन्हें **प्रकंपित/लुंठित ध्वनि** कहते हैं। इसका एकमात्र **उदाहरण 'र'** है।
अन्य विकल्पों के नियम—
✧ **य** और **व** = इन्हें **अर्धस्वर** कहा जाता है क्योंकि इनका उच्चारण स्वर और व्यंजन के बीच का होता है।
✧ **ल** = इसे **पार्श्विक ध्वनि** कहा जाता है, क्योंकि इसके उच्चारण में जीभ तालु को छूती है और हवा जीभ के दोनों पार्श्व (बगलों) से निकल जाती है।

पार्श्विक व्यंजन

◈ **उच्चारण प्रयत्न के आधार पर सूची–I को सूची–II से सुमेलित कीजिए—**

सूची–I (व्यंजन प्रकार)	सूची–II (वर्ण)
(a) लुंठित/प्रकंपित	1. ल
(b) पार्श्विक	2. र
(c) उत्क्षिप्त	3. य, व
(d) संघर्षहीन/अर्धस्वर	4. ड़, ढ़

कूट: (A) a–2, b–1, c–3, d–4 (B) a–2, b–1, c–4, d–3
(C) a–1, b–2, c–4, d–3 (D) a–4, b–3, c–2, d–1
Ans.–[B]

व्याख्या—उपरोक्त का सही सुमेलन निम्न प्रकार है–
- ✧ **लुंठित/प्रकंपित** – 'र' वर्ण के उच्चारण में जीभ की नोंक वायु से रगड़ खाकर कम्पन करती है।
- ✧ **पार्श्विक** – 'ल' वर्ण के उच्चारण में जीभ श्वास-वायु के मार्ग में खड़ी हो जाती है और वायु बगल **(पार्श्व)** से निकलती है।
- ✧ **उत्क्षिप्त** – **'ड़'** और **'ढ़'** को उत्क्षिप्त या ताड़नजात व्यंजन कहते हैं, इसमें जीभ झटके से नीचे गिरती है।
- ✧ **अर्धस्वर/संघर्षहीन** – **'य'** और **'व'** ऐसी ध्वनियाँ हैं जो न पूर्ण स्वर हैं न व्यंजन।

अल्पप्राण

❖ **वह ध्वनि जिसके उच्चारण में श्वास की मात्रा कम निकलती है, कहलाती है—**

(A) अर्द्धस्वर (B) अव्यय
(C) अविकारी (D) अल्पप्राण

Ans.–[D] [PTET Pre. Tea. Edu. • 9.06.2024]

व्याख्या—वह ध्वनि जिनके उच्चारण में शब्द की मात्रा कम निकलती है, वे अल्पप्राण वर्ण कहलाते हैं। सभी स्वर एवं वर्गों प्रथम, तृतीय व पॉचवां वर्ण एवं अन्तस्थ व्येंजन 'अल्पप्राण' कहलाते हैं।

महाप्राण

❖ **प्राण वायु की मात्रा के आधार पर सुमेलित कीजिए—**

सूची-I (प्रकार)	**सूची-II (परिभाषा/उदाहरण)**
(a) अल्पप्राण	1. वर्ग का दूसरा और चौथा वर्ण
(b) महाप्राण	2. वर्ग का पहला, तीसरा और पाँचवाँ वर्ण
(c) ऊष्म व्यंजन	3. महाप्राण की श्रेणी में आते हैं
(d) अंतःस्थ व्यंजन	4. अल्पप्राण की श्रेणी में आते हैं

कूट: (A) a–2, b–1, c–3, d–4 (B) a–1, b–2, c–3, d–4
(C) a–2, b–1, c–4, d–3 (D) a–1, b–2, c–4, d–3

व्याख्या—उपरोक्त का सही सुमेलन निम्न प्रकार है–
- ✧ **अल्पप्राण** – जिन व्यंजनों में श्वास की मात्रा कम लगती है (वर्ग का 1, 3, 5 वाँ वर्ण)।
- ✧ **महाप्राण** – जिन व्यंजनों में श्वास की मात्रा अधिक लगती है (वर्ग का 2, 4 वाँ वर्ण)।
- ✧ **ऊष्म व्यंजन** – **'श, ष, स, ह'** महाप्राण व्यंजनों में आते हैं।
- ✧ **अंतःस्थ व्यंजन** – **'य, र, ल, व'** अल्पप्राण व्यंजनों में आते हैं।

वत्स्र्य व्यंजन

❖ **'वत्स्र्य व्यंजन' का उच्चारण मुख के किस भाग से होता है?**

(A) होंठों से (B) गले से
(C) ऊपरी दाँतों और मसूड़ों से (D) नरम तालु से

Ans.–[C]

व्याख्या—**व्याकरण नियम**—**'वत्स्र्य'** का अर्थ होता है मसूड़ा। जिन व्यंजनों को बोलते समय जीभ की नोंक ऊपरी दाँतों के पीछे मसूड़ों को स्पर्श करती है, उन्हें **'वत्स्र्य व्यंजन'** कहते हैं।
उदाहरण—हिंदी में **न्, र्, ल्, स्** मुख्य रूप से वत्स्र्य व्यंजन माने जाते हैं।

मूर्धन्य व्यंजन

❖ **ट-वर्ग (ट, ठ, ड, ढ, ण) के अलावा, इनमें से कौन-सा वर्ण 'मूर्धन्य व्यंजन' है?**

(A) श (B) ष (C) स (D) ह

Ans.–[B]

व्याख्या—'ष' एक मूर्धन्य व्यंजन है, जबकि 'श' तालव्य और 'स' **'दंत्य/वत्स्र्य'** है।
व्याकरण नियम—मूर्धा मुँह का कठोर (खुरदरा) हिस्सा होता है। जिन वर्णों को बोलते समय जीभ पीछे की ओर मुड़कर मूर्धा को छूती है, वे मूर्धन्य कहलाते हैं।
उदाहरण—ट-वर्ग के सभी अक्षर **(ट, ठ, ड, ढ, ण)**, **'ष'** और **'ऋ'** स्वर मूर्धन्य ध्वनियाँ हैं।

अयोगवाह

❖ **'अयोगवाह' वर्णों की सबसे बड़ी पहचान क्या है?**

(A) ये पूरी तरह से स्वर होते हैं।
(B) ये स्वर और व्यंजन के बीच की कड़ी हैं ।
(C) ये केवल व्यंजनों के साथ जुड़ते हैं।
(D) ये मुँह बंद करके बोले जाते हैं।

Ans.–[B]

व्याख्या—**व्याकरण नियम**—ये ऐसे वर्ण हैं जो व्यंजनों की तरह स्वरों के बिना बोले नहीं जा सकते, लेकिन स्वरों की तरह इनकी मात्राएँ होती हैं। इसलिए इन्हें न तो शुद्ध स्वर माना जाता है और न ही शुद्ध व्यंजन।
उदाहरण—अनुस्वार (ं) जैसे 'अं' और विसर्ग (:) जैसे 'अः' अयोगवाह कहलाते हैं।

घोष व्यंजन

❖ **निम्नांकित में से कौनसा वर्ण घोष वर्ण है?**

(A) क (B) थ (C) ल (D) स

Ans.–[C] [Stenographer • Paper-2nd • 05-10-2024]

व्याख्या—उपरोक्त वर्णों का सही स्पष्टीकरण निम्न है–
- ✧ **'क'** वर्ग का पहला वर्ण है, अतः यह **अघोष** है।
- ✧ **'थ'** त-वर्ग का दूसरा वर्ण है, अतः यह **अघोष** है।
- ✧ **'ल'** एक अंतस्थ व्यंजन है और सभी अंतस्थ व्यंजन **(य, र, ल, व) घोष** होते हैं।
- ✧ **'स'** एक **ऊष्म व्यंजन** है, और **श, ष, स अघोष** होते हैं (**'ह'** अपवाद है, जो घोष है)। अतः, **'ल'** एक **घोष वर्ण** है।

अघोष व्यंजन

❖ **निम्नलिखित में अघोष वर्ण है—**

(A) ड (B) अ (C) क (D) ह

Ans.–[C] [Stenographer • Paper-2nd • 05-10-2024]

व्याख्या—उपरोक्त विकल्पों में, **'क'** वर्ग का पहला वर्ण है, इसलिए यह एक अघोष वर्ण है। **'ड' ट-वर्ग** का तीसरा वर्ण है, जो कि **'घोष'** है। **'अ'** एक स्वर है और **सभी स्वर घोष होते** हैं। **'ह'** एक घोष व्यंजन है।
अघोष वर्ण–जिन वर्णों के उच्चारण में स्वर-तंत्रियों में कंपन नहीं होता, वे अघोष वर्ण कहलाते हैं। प्रत्येक व्यंजन वर्ग का पहला और दूसरा व्यंजन (जैसे– क, ख; च, छ) तथा **श, ष, स अघोष** वर्ण होते हैं।

◈ **निम्नलिखित में से कौनसी ध्वनियाँ अघोष हैं?**

a. छ b. ज c. त d. न e. प

नीचे दिए गए विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए—

(A) केवल b, c और d (B) केवल a, c और e
(C) केवल a, d और e (D) केवल b, d और e

Ans.–[B] [CET Gr. Level • Shift-2nd • 27-09-2024]

व्याख्या—हिंदी व्याकरण में, **'अघोष व्यंजन'** वे होते हैं जिनके उच्चारण में स्वर-तंत्रियों में कंपन नहीं होता। प्रत्येक व्यंजन वर्ग का पहला और दूसरा वर्ण (जैसे – **क, ख, च, छ; त, थ; प, फ**) तथा **'श'**, **'ष'**, **'स'** अघोष वर्ण होते हैं। उपरोक्त विकल्पों में, **'छ'** (च वर्ग का दूसरा), **'त'** (त वर्ग का पहला) और **'प'** (प वर्ग का पहला) अघोष व्यंजन हैं। जबकि **'ज'** (तीसरा) और **'न'** (पाँचवाँ) **घोष/सघोष** व्यंजन हैं।

◈ **निम्नलिखित में से अघोष वर्ण नहीं है—**

(A) क (B) च (C) य (D) स

Ans.–[C] [PTET Pre B.Ed. • 9.06.2024]

व्याख्या—उपरोक्त में से अघोष वर्ण 'य' नहीं है।
अघोष वर्ण—जिन वर्णों के उच्चारण में गले में या स्वर तंत्रियों में कम्पन या गूँज उत्पन्न नहीं होती वे अघोष वर्ण होते हैं। वर्णों के पहले व दूसरे कम्पन तथा विसर्ग (:) अघोष वर्ण होते हैं। सभी स्वर घोष वर्ण हैं।

वर्णों के उच्चारण स्थान

◈ **सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए—**

सूची I	सूची II
a. कंठ्य	I. ओ, औ
b. तालव्य	II. ज, झ
c. कंठोष्ठ्य	III. ख, ग
d. दंतोष्ठ्य	IV. व

नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें—

(A) a-I, b-II, c-III, d-IV (B) a-II, b-I, c-IV, d-III
(C) a-III, b-II, c-I, d-IV (D) a-IV, b-III, c-II, d-I

Ans.–[C] [REET • Hindi (L-2) • 19.01.2026]

व्याख्या—कण्ठ्य ध्वनियों **(ख, ग)** का उच्चारण कण्ठ से होता है। **तालव्य** ध्वनियों **(ज, झ)** का उच्चारण जीभ के तालु को छूने से होता है। **कंठोष्ठ्य** ध्वनियाँ **(ओ, औ)** कण्ठ और होंठ दोनों के संयुक्त प्रयास से बोली जाती हैं। **दन्तोष्ठ्य** ध्वनि **(व)** का उच्चारण निचले होंठ और ऊपरी दाँतों के स्पर्श से होता है।

◈ **निम्नलिखित में से गलत कथन है—**

(A) ओ, औ कण्ठतालव्य स्वर हैं।
(B) इ, ई तालव्य स्वर हैं।
(C) 'ऋ' मूर्धन्य स्वर है।
(D) सभी स्वर सघोष हैं।

Ans.–[A] [Grade 1st • Hindi • 31.05.2026]

व्याख्या—**विकल्प (A) गलत कथन है** क्योंकि हिंदी वर्णमाला में **'ओ' और 'औ' कण्ठोष्ठ्य** स्वर होते हैं। **'ए' और 'ऐ' कण्ठतालव्य** स्वर कहलाते हैं।

व्याकरण नियम –

✧ **कण्ठोष्ठ्य** – ओ, औ (कण्ठ और होंठ दोनों के प्रयोग से)।
✧ **तालव्य** – इ, ई (तालू से उच्चारित)।
✧ **मूर्धन्य** – 'ऋ' मूर्धन्य स्वर होता है। 'क' एक कण्ठ्य व्यंजन है)।
✧ **घोषत्व** – हिंदी व्याकरण के अनुसार **सभी स्वर सघोष (घोष)** ध्वनियाँ होते हैं।

◈ **निम्नलिखित में से 'झ' का उच्चारण स्थान है—**

(A) कण्ठ-तालु (B) कण्ठ
(C) तालु (D) दन्त

Ans.–[C] [Stenographer • Paper-2nd • 05-10-2024]

व्याख्या—**'झ'** च-वर्ग **(च, छ, ज, झ, ञ)** का चौथा व्यंजन है। च-वर्ग के सभी वर्णों का उच्चारण तालु से होता है। उच्चारण के समय जिह्वा का मध्य भाग कठोर तालु को स्पर्श करता है, इसलिए इन वर्णों को **'तालव्य'** कहा जाता है।

◈ **सूची-I के साथ सूची-II का मिलान कीजिए।**

सूची-I (वर्ण)	सूची-II (उच्चारण स्थान)
(a) ओ	(i) कण्ठ
(b) ए	(ii) दन्त ओष्ठ
(c) व	(iii) कण्ठ तालु
(d) ह	(iv) कण्ठ ओष्ठ

नीचे दिए गए विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए :

(A) (a-ii), (b-iv), (c-iii), (d-i)
(B) (a-iv), (b-iii), (c-ii), (d-i)
(C) (a-i), (b-iii), (c-ii), (d-iv)
(D) (a-iv), (b-i), (c-iii), (d-ii)

Ans.–[B] [Stenographer • Paper-2nd • 05-10-2024]

व्याख्या—उपरोक्त विकल्पों का सही स्पष्टीकरण निम्न प्रकार है–

(a) **'ओ'** स्वर का निर्माण **'अ'** + **'उ'** से होता है। **'अ'** का उच्चारण स्थान कण्ठ है और **'उ'** का ओष्ठ। अतः **'ओ'** का उच्चारण स्थान **'कण्ठ-ओष्ठ'** है।
(b) **'ए'** स्वर का निर्माण **'अ'** + **'इ'** से होता है। **'अ'** का उच्चारण स्थान कण्ठ है और **'इ'** का तालु। अतः **'ए'** का उच्चारण स्थान **'कण्ठ-तालु'** है।
(c) **'व'** वर्ण का उच्चारण करते समय निचले होंठ और ऊपरी दाँतों का स्पर्श होता है, अतः इसका उच्चारण स्थान **'दन्त-ओष्ठ'** है।
(d) **'ह'** वर्ण का उच्चारण सीधे कण्ठ से होता है, अतः इसका उच्चारण स्थान **'कण्ठ'** है।

◈ **निम्नलिखित में से किस वर्ण का उच्चारण स्थान दंत-ओष्ठ है?**

(A) व (B) ऐ (C) फ (D) ल

Ans.–[A] [Stenographer • Paper-2nd • 05-10-2024]

व्याख्या—**'व'** वर्ण का उच्चारण करते समय निचले होंठ (ओष्ठ) का स्पर्श **ऊपरी दाँतों (दंत)** से होता है। इसलिए, **'व'** का उच्चारण स्थान **'दंत-ओष्ठ'** कहलाता है। **'फ'** का उच्चारण स्थान ओष्ठ है। **'ल'** का **'दंत/वर्त्स्य'** है और **'ऐ'** का **'कण्ठ-तालु'** है।

❖ **नीचे दो कथन दिए गए हैं :**
कथन - (I) : **'ह'** वर्ण का उच्चारण स्थान कंठ हैं।
कथन - (II) : **'ऋ'** तथा **'ठ'** दोनों वर्णों का उच्चारण स्थान मूर्धा है।
उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नलिखित विकल्पों में से सही उत्तर चुनें।
(A) कथन (I) असत्य है, किन्तु कथन (II) सत्य है।
(B) कथन (I) और (II) दोनों सत्य हैं।
(C) कथन (I) और (II) दोनों असत्य हैं।
(D) कथन (I) सत्य है, किन्तु कथन (II) असत्य है।
Ans.–[B] [CET (Graduation) • Shift-2nd • 28-09-2024]

व्याख्या—दोनों कथन हिंदी वर्णमाला के उच्चारण स्थानों के संबंध में व्याकरण की दृष्टि से सही हैं।
कथन (I) : **'ह'** वर्ण का उच्चारण स्थान कंठ है। व्याकरण के नियम **'अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः'** के अनुसार, **'अ'**, **'आ'**, **'क'**-वर्ग **(क, ख, ग, घ, ङ)**, **'ह'** और **विसर्ग (:)** का उच्चारण कंठ से होता है।
कथन (II) : **'ऋ'** तथा **'ठ'** दोनों वर्णों का उच्चारण स्थान **'मूर्धा'** है। नियम **'ऋटुरषाणां मूर्धा'** के अनुसार, **'ऋ'**, **'ट'**-वर्ग **(ट, ठ, ड, ढ, ण)**, **'र'** और **'ष'** का उच्चारण स्थान मूर्धा होता है।

❖ **'फ' का उच्चारण स्थान है—**
(A) दन्त (B) कंठ (C) मूर्धा (D) ओष्ठ
Ans.–[D] [Stenographer Paper-II 21.3.2021]

व्याख्या—**'फ'** का उच्चारण स्थान **'ओष्ठ'** है। इसके अतिरिक्त ओष्ठ से अन्य कई व्यंजन बोले जाते हैं—**उ, ऊ, 'प' वर्ग (प, फ, ब, भ, म)।**

❖ **'कंठ्य' ध्वनि का उदाहरण है—**
(A) च (B) ट (C) क (D) त
Ans.–[C] [Stenographer Paper-II 21.3.2021]

व्याख्या—उपरोक्त में से **'क'** 'कण्ठ्य' ध्वनि का उदाहरण है।
✧ **''अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः''** – इस सूत्र के अनुसार **अ, आ, 'क'** वर्ग, **(क, ख, ग, घ, ङ), ह** एवं **विसर्ग (:)** का उच्चारण स्थान **कंठ** होता है।

❖ **'ढ' का उच्चारण स्थान है—**
(A) कण्ठ (B) तालु (C) मूर्धा (D) दन्त
Ans.–[C] [REET-2017 (Level-I) 11 Feb.. 2018]

व्याख्या—मूर्धा ऋटुरषाणां मूर्धा सूत्र के अनुसार समस्त टवर्ग के वर्ण अर्थात् ट, ठ, ड, ढ, ण एवं ऋ, र का उच्चारण स्थान मूर्धा होगा।

वर्णों के प्रयत्न

❖ **अक्षरों (ध्वनियों) को बोलने के लिए मुँह द्वारा की गई कोशिश (प्रयत्न) के मुख्य दो भेद कौन-से हैं?**
(A) घोष और अघोष (B) अल्पप्राण और महाप्राण
(C) आभ्यन्तर और बाह्य (D) स्वर और व्यंजन
Ans.–[C]

व्याख्या—**व्याकरण नियम**—वर्णों का उच्चारण करते समय मुँह के अंगों (जीभ, होंठ, तालु आदि) को जो प्रयास करना पड़ता है, उसे व्याकरण में 'प्रयत्न' कहते हैं। इसके भेद हैं— 1. आभ्यन्तर प्रयत्न और 2. बाह्य प्रयत्न।

आभ्यन्तर प्रयत्न

❖ **ध्वनि निकलने से ठीक पहले, मुँह के अंदर होने वाले प्रयत्न को क्या कहते हैं?**
(A) बाह्य प्रयत्न (B) घोष प्रयत्न
(C) आभ्यन्तर प्रयत्न (D) महाप्राण
Ans.–[C]

व्याख्या—**व्याकरण नियम**—वर्ण के उच्चारण काल के प्रारंभ में मुँह से बाहर निकलने से पहले) मुँह के अंदर जो चेष्टा या प्रयास होता है, उसे आभ्यन्तर प्रयत्न कहते हैं। इसके 5 प्रकार माने गए हैं। जैसे- स्पृष्ट, ईषत् स्पृष्ट, विवृत, ईषत् विवृत संवृत आदि।
उदाहरण—**'क'** से **'म'** तक के अक्षरों को बोलने के लिए जीभ मुँह के अलग-अलग हिस्सों को पूरी तरह छूती है, इस प्रयास को **'स्पृष्ट' आभ्यन्तर प्रयत्न** कहते हैं।

बाह्य प्रयत्न

❖ **वर्णों के वर्गीकरण में 'अल्पप्राण' और 'महाप्राण' किस प्रयत्न के अंतर्गत आते हैं?**
(A) आभ्यन्तर प्रयत्न (B) बाह्य प्रयत्न
(C) स्वर प्रयत्न (D) उच्चारण स्थान
Ans.–[B]

व्याख्या—**व्याकरण नियम**—वर्ण के उच्चारण के अंत में जो कोशिश होती है, उसे बाह्य प्रयत्न कहते हैं। हवा कम निकले या ज़्यादा (प्राणत्व), गले में कंपन हो या न हो (घोषत्व), यह बाह्य प्रयत्न है।
उदाहरण—'क' बोलते समय हवा कम निकलती है – **(अल्पप्राण)**, और 'ख' बोलते समय हवा ज़्यादा निकलती है (महाप्राण)।

बलाघात

❖ **बोलते समय किसी अक्षर या शब्द पर दिया गया विशेष ज़ोर क्या कहलाता है?**
(A) संगम (B) अनुतान (C) बलाघात (D) प्रयत्न
Ans.–[C]

व्याख्या—**व्याकरण नियम**—बोलते समय अपनी बात का प्रभाव डालने या सही अर्थ समझाने के लिए जब किसी विशेष शब्द या अक्षर पर सामान्य से अधिक ताकत लगाई जाती है, तो उसे बलाघात कहते हैं।
उदाहरण—''**राम** ने रावण को मारा।''

संगम एवं अनुतान

❖ **उच्चारण के दौरान दो शब्दों के बीच का सूक्ष्म ठहराव क्या कहलाता है?**
(A) अनुतान (B) बलाघात (C) मात्रा (D) संगम
Ans.–[D]

व्याख्या—बोलते समय बीच में आने वाले हल्के-से विराम को 'संगम' कहते हैं।
व्याकरण नियम—एक जैसी ध्वनियों को लगातार बोलने और उनके बीच हल्का-सा ठहराव देकर बोलने से अर्थ में जो बदलाव आता है, वह संगम के कारण होता है।

विविध प्रश्न

❖ **निम्नलिखित में गलत विवरण है—**
(A) उच्चारण के अनुसार स्वरों के दो भेद हैं - सानुनासिक और निरनुनासिक।
(B) कुछ स्वर अल्पप्राण और कुछ महाप्राण हैं।
(C) वर्गीय पंचम व्यंजन (ङ्, ञ, ण, न्, म्) अनुनासिक अल्पप्राण हैं।
(D) सभी वर्गों के द्वितीय – चतुर्थ वर्ण महाप्राण हैं।
Ans.–[B] [Grade-2nd • 08-11-2025]

व्याख्या—यह विवरण गलत है। व्याकरण के नियमानुसार, सभी स्वर (**अ, आ, इ, ई** आदि) **'अल्पप्राण'** और **'सघोष'** होते हैं। किसी भी स्वर का उच्चारण महाप्राण (जिसमें **'ह'** की ध्वनि हो) के रूप में नहीं होता है।

❖ **'य्' वर्ण के सम्बन्ध में असंगत है—**
(A) तालव्य (B) अघोष (C) अल्पप्राण (D) अन्तस्थ
Ans.–[B] [Grade-2nd • 08-11-2025]

व्याख्या—**'य्'** वर्ण के संबंध में यह कथन असंगत है। **'य्'** एक **अन्तस्थ** व्यंजन है, इसका उच्चारण स्थान **'तालु'** (तालव्य) है और यह **'अल्पप्राण'** है। **घोषत्व** के आधार पर यह **'सघोष'** वर्ण है, **'अघोष'** नहीं। अघोष वर्ण वर्ग के पहले और दूसरे व्यंजन होते हैं।

❖ **'ढ' वर्ण सम्बन्धी सही कथन है—**
(A) उत्क्षिप्त, मूर्धन्य, अघोष, अल्पप्राण
(B) मूर्धन्य, स्पर्श, अघोष, महाप्राण
(C) उत्क्षिप्त, मूर्धन्य, सघोष, महाप्राण
(D) उत्क्षिप्त, मूर्धन्य, अघोष, महाप्राण
Ans.–[C] [Grade-2nd • 08-11-2025]

व्याख्या—दिए गए विकल्प 'ढ़' वर्ण की विशेषताओं का वर्णन करते हैं। 'ढ़' वर्ण एक **उत्क्षिप्त (जीभ को झटके से फेंककर उच्चारित)** व्यंजन है। इसका उच्चारण स्थान मूर्धा (मूर्धन्य) है। यह एक **सघोष और महाप्राण** ध्वनि है।

❖ **उच्चारण-स्थल की दृष्टि से इ, उ, ऋ वर्ण का सही क्रम है—**
(A) तालव्य, ओष्ठ्य, मूर्द्धन्य (B) ओष्ठ्य, तालव्य, मूर्द्धन्य
(C) मूर्द्धन्य, ओष्ठ्य, तालव्य (D) तालव्य, मूर्द्धन्य, ओष्ठ्य
Ans.–[A] [Grade-2nd • 08-11-2025]

व्याख्या—उच्चारण-स्थल की दृष्टि से दिए गए वर्णों का सही क्रम यही है—
✧ **इ**—इसका उच्चारण तालु से होता है, अतः यह 'तालव्य' है।
✧ **उ**—इसका उच्चारण होठों की सहायता से होता है, अतः यह **'ओष्ठ्य'** है।
✧ **ऋ**—इसका उच्चारण मूर्धा से होता है, अतः यह **'मूर्धन्य'** है।

❖ **निम्नलिखित विकल्पों में से 'द्वित्व' व्यंजन का सही उदाहरण है**
(A) अशक्त (B) यत्न (C) सच्चा (D) सत्कार
Ans.–[C] [Grade-2nd • 28-12-2024]

व्याख्या—जब एक ही व्यंजन ध्वनि लगातार दो बार आती है, जिसमें पहली ध्वनि स्वर रहित (आधा अक्षर) और दूसरी ध्वनि स्वर सहित (पूरा अक्षर) हो, तो उसे **'द्वित्व व्यंजन'** कहते हैं। जैसे—'सच्चा' शब्द में 'च्' व्यंजन का द्वित्व हुआ है।

❖ **निम्नलिखित में से कौनसा कंठ्य वर्ण नहीं है?**
(A) झ् (B) ह् (C) अ (D) क्
Ans.–[A] [Grade-2nd • 28-12-2024]

व्याख्या—कंठ्य वर्ण वे होते हैं जिनका उच्चारण कंठ (गले) से होता है। हिंदी वर्णमाला में **'अ', 'आ', पूरा 'क' वर्ग (क्, ख्, ग्, घ्, ङ्), 'ह्' और विसर्ग (:)** कंठ्य ध्वनियाँ हैं। **'झ्' 'च'** वर्ग का वर्ण है **(च्, छ्, ज्, झ्, ञ्)** और इसका उच्चारण स्थान तालु है।

❖ **जिन व्यंजनों के उच्चारण में वायु–प्रवाह मुख और नासिक दोनों रन्ध्रों से होकर निकलती है उन्हें कहा जाता है—**
(A) स्पर्श व्यंजन (B) प्रकम्पित व्यंजन
(C) पार्श्विक व्यंजन (D) नासिक्य व्यंजन
Ans.–[D] [Grade-2nd • 13-02-2023]

व्याख्या—जिन व्यंजनों के उच्चारण में वायु प्रवाह मुख और नासिका दोनों रन्ध्रों से होकर निकलती है उन्हें **नासिक्य व्यंजन** कहा जाता है।
✧ **नासिक्य व्यंजन**—जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय प्राण–वायु का अधिकतर भाग नाक द्वारा बाहर निकलता है। उन्हें नासिक्य व्यंजन कहते हैं।
✧ **ङ्, ञ्, ण्, न्, म्** आदि पाँच नासिक्य व्यंजन हैं। नासिक्य व्यंजनों को अनुनासिक व्यंजन भी कहते हैं। प्रत्येक वर्ग का **पाँचवाँ वर्ण** अनुनासिक कहलाता है।

❖ **दन्तोष्ठ्य व्यंजन बताइए—**
(A) व (B) त (C) थ (D) प
Ans.–[A] [Grade-2nd • 22-12-2022]

व्याख्या—**दंतोष्ठ्य व्यंजन** उपरोक्त में से **'व'** है।
'व' वर्ण दंत एवं ओष्ठ से बोला जाता है।
✧ **दंतोष्ठ्य व्यंजन**—वे वर्ण जिनका उच्चारण ऊपर के दाँत एवं नीचे के होठों की सहायता से होता है वे **दन्तोष्ठ्य व्यंजन** कहलाते हैं।

❖ **किस विकल्प के सभी वर्ण 'स्पर्श व्यंजन' नहीं हैं?**
(A) थ, च, फ, ख (B) ध, झ, घ, प
(C) क, ठ, द, भ (D) ग, ज, य, ब
Ans.–[D] [Grade-2nd • 20-02-2019]

व्याख्या—उपरोक्त में से विकल्प (D) के सभी व्यंजन स्पर्श व्यंजन नहीं हैं।
स्पर्श व्यंजन—जिन व्यंजनों के उच्चारण में जीभ का **दाँत, वर्त्स (मसूड़ा), मूर्धा, तालु** या दोनों होठों या गले की अंदर की चमड़ी का स्पर्श होता है तथा कुछ रुकावट के साथ शब्द का उच्चारण होता है और श्वास बाहर आ जाती है, वे **स्पर्श व्यंजन** कहलाते हैं। हिन्दी में, **'क' वर्ग, 'च' वर्ग, 'त' वर्ग, 'प' वर्ग** के व्यंजन स्पर्श व्यंजन हैं।

❖ **निम्न में से कंठ्य व्यंजन है—**
(A) ट (B) त (C) घ (D) प
Ans.–[C] [Stenographer • 30.05.2013]

व्याख्या—उपरोक्त में से **'घ'** में **कंठ्य व्यंजन** है।
✧ **अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः** – सूत्र के अनुसार **अ, आ, 'क' वर्ग (क, ख, ग, घ, ङ), ह** एवं **विसर्ग (:)** का उच्चारण स्थान कंठ होता है।

2 शब्दकोश पठन

(स्वर, अनुस्वार, विसर्ग व व्यंजन क्रमानुसार शब्दकोश में शब्दों का क्रम निर्धारण)

❖ **कोश-क्रम की दृष्टि से सही विकल्प है—**

(A) त्रिशंकु, तृष्णा, त्याज्य, त्वरित
(B) त्याज्य, त्वरित, तृष्णा, त्रिशंकु
(C) त्वरित, त्रिशंकु, तृष्णा, त्याज्य
(D) तृष्णा, त्याज्य, त्रिशंकु, त्वरित

Ans.–[D] [Grade 2nd • 13.07.2026]

व्याख्या—हिंदी शब्दकोश में शब्दों का क्रम वर्णमाला के अनुसार निर्धारित होता है। सर्वप्रथम **स्वर** युक्त व्यंजन आता है, तत्पश्चात **संयुक्त अक्षर** या आधे व्यंजन आते हैं।

शब्दों का वर्ण-विच्छेद—

तृष्णा—त् + **ऋ** + ष् + ण् + आ
त्याज्य—त् + **य्** + आ + ज् + य् + अ
त्रिशंकु—त् + **र्** + इ + श् + अं + क् + उ
त्वरित—त् + **व्** + अ + र् + इ + त् + अ

नियम - व्यंजनों से पूर्व स्वरों का क्रम (ऋ) आता है। आधे व्यंजन 'त्' के बाद जुड़ने वाले अंतस्थ व्यंजनों का वर्णमाला क्रम **य्, र्, ल्, व्** होता है। वर्ण-विच्छेद के आधार पर शब्दकोश क्रम **तृष्णा, त्याज्य, त्रिशंकु, त्वरित** बनता है।

❖ **हिंदी शब्दकोश के अनुसार किस विकल्प में सभी शब्द वर्ण क्रम से हैं?**

(A) श्रद्धा, श्याम, शौच (B) ज्वलंत, ज्योत्स्ना, ज्योतिष
(C) प्रक्षिप्त, प्रख्यात, प्रकृत (D) क्रीड़ा, क्लिष्ट, क्षण

Ans.–[D] [Grade 2nd • 13.07.2026]

व्याख्या—हिंदी शब्दकोश में वर्णों का क्रम सर्वप्रथम **स्वर**, तत्पश्चात **अनुस्वार/विसर्ग** और अंत में **व्यंजन** के अनुसार निर्धारित होता है। **संयुक्त व्यंजनों** का स्थान उनके प्रथम मूल व्यंजन के तुरंत बाद आता है।

क्रीड़ा, क्लिष्ट, क्षण का वर्ण-विच्छेद और शब्दकोश क्रम—

1. **क्रीड़ा**—क् + र् + ई...
2. **क्लिष्ट**—क् + ल् + इ... ('र' वर्ण के बाद 'ल' वर्ण आता है)
3. **क्षण**—क् + ष् + अ... ('क्ष' एक संयुक्त व्यंजन है जिसका निर्माण 'क्' और 'ष्' से होता है, अतः शब्दकोश में यह 'क' वर्ण वाले शब्दों की श्रृंखला के अंत में आता है)।

अन्य शब्दों का वर्ण-क्रमानुसार सटीक क्रम है—

✧ **शौच, श्याम, श्रद्धा** ✧ **ज्योतिष, ज्योत्स्ना, ज्वलंत।**
✧ **प्रकृत, प्रख्यात, प्रक्षिप्त।**

❖ **इन शब्दों को पढ़िए—**

(A) पार्षद (ब) पारिजात (स) पार्थक्य (द) पार्श्वनाथ

शब्दकोश में इन शब्दों का क्रम क्रमशः होगा—

(A) (स), (द), (ब), (अ) (B) (ब), (द), (अ), (स)
(C) (ब), (स), (द), (अ) (D) (ब), (अ), (द), (स)

Ans.–[C] [Grade 1st • Hindi • 31.05.2026]

व्याख्या—हिंदी शब्दकोश में शब्दों का क्रम **वर्णमाला के अक्षरों** और **मात्राओं के क्रमानुसार** होता है। दी गई सूची में सभी शब्द **'पा'** से शुरू होते हैं, इसलिए हमें अगले वर्ण को देखना होगा—

1. **पारिजात (ब)** – पा + **रि (र + इ)** + जा + त। शब्दकोश में पूर्ण वर्ण/मात्रा वाले अक्षर (जैसे – **'रि'**), आधे अक्षरों (रेफ **'र्'**) से पहले आते हैं। इसलिए यह **प्रथम** स्थान पर आएगा।
2. इसके बाद बचे हुए तीनों शब्दों **(पार्थक्य, पार्श्वनाथ, पार्षद)** में **'पा' के बाद आधा 'र्' (रेफ)** है। अतः अब हमें **'र्'** के ठीक बाद वाले व्यंजन को देखना होगा–
   - ✧ पारथक्य में **'थ'** है। ✧ पारश्वनाथ में **'श'** है।
   - ✧ पारषद में **'ष'** है।
3. **व्यंजन वर्णमाला क्रम** – त, **थ**, द... य, र, ल, व, **श**, **ष**, स...। चूँकि वर्णमाला में पहले **'थ'**, **'श'**, और अंत में **'ष'** आता है, इसलिए सही क्रम होगा – **पारिजात (ब) – पार्थक्य (स) – पार्श्वनाथ (द) – पार्षद।**

❖ **किस विकल्प के सभी शब्दकोश क्रमानुसार लिखे गए हैं?**

(A) कवि, चित्रकार, ज्ञानी, ज्योतिषी
(B) कवि, ज्ञानी, चित्रकार, ज्योतिषी
(C) कवि, चित्रकार, ज्योतिषी, ज्ञानी
(D) कवि, ज्योतिषी, ज्ञानी, चित्रकार

Ans.–[A] [Grade 1st • Hindi • 31.05.2026]

व्याख्या—सही उत्तर **(A) कवि, चित्रकार, ज्ञानी, ज्योतिषी** है।
व्याकरण नियम (हिंदी शब्दकोश क्रम) – हिंदी शब्दकोश में शब्द वर्णमाला के अनुसार आते हैं। संयुक्त व्यंजन अपने प्रथम मूल व्यंजन वाले शब्दों के क्रम में आते हैं।

1. **कवि** – **'क'** वर्णमाला में सबसे पहले आता है।
2. **चित्रकार** – **'क'** वर्ग के बाद **'च'** वर्ग का क्रम आता है।
3. **ज्ञानी** – **'ज्ञ'** एक संयुक्त व्यंजन है जो **'ज्' और 'ञ'** के योग से बनता है।
4. **ज्योतिषी** – यह शब्द **'ज्' और 'य'** के योग से शुरू होता है।

✧ **निष्कर्ष** – हिंदी वर्णमाला में **'ञ'** वर्ण, **'य'** वर्ण से पहले आता है। **(च, छ, ज, झ, ञ** ... य, र, ल), इसलिए शब्दकोश में **'ज्ञानी'** शब्द **'ज्योतिषी'** से पहले आएगा।

3 उपसर्ग
(तत्सम, तद्भव, विदेशी उपसर्ग)

❖ **'अनु' उपसर्ग से निर्मित शब्द है—**
(A) अनुचित (B) अनुत्तर (C) अनुनय (D) अनुपम
Ans.–[C] [Grade 2nd • 13.07.2026]

व्याख्या—अनुनय शब्द में **'अनु'** उपसर्ग और **'नय'** मूल शब्द है। अन्य शब्दों का विभाजन निम्न है—
अनुचित—अन् + उचित **अनुत्तर**—अन् + उत्तर
अनुपम—अन् + उपम

❖ **'आ' उपसर्ग से निर्मित शब्द नहीं है–**
(A) आस्था (B) आसक्त (C) आस्तिक (D) आहार्य
Ans.–[C] [Grade 1st • 31-05-2026]

व्याख्या—
✧ **आस्तिक** शब्द का निर्माण **'अस्ति'** (ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास) मूल शब्द में **'इक'** प्रत्यय जुड़ने से हुआ है, इसमें **'आ' उपसर्ग नहीं है।**
✧ **आस्था** शब्द **'आ'** उपसर्ग तथा **'स्था'** धातु के योग से निर्मित है।
✧ **आसक्त** शब्द **'आ'** उपसर्ग तथा **'सक्त'** (अनुरक्त) के योग से निर्मित है।
✧ **आहार्य** शब्द **'आ'** उपसर्ग, **'हृ'** धातु और **'ण्यत्'** प्रत्यय से निर्मित है।

❖ **'सु' उपसर्ग से निर्मित शब्द नहीं है—**
(A) स्वल्प (B) सुन्दर (C) सुरभि (D) सूक्ति
Ans.–[B] [Grade 1st • 03-06-2026]

व्याख्या—
✧ **स्वल्प - सु + अल्प** (यण् संधि)। इसमें **'सु'** उपसर्ग विद्यमान है।
✧ **सूक्ति - सु + उक्ति** (दीर्घ संधि)। इसमें **'सु'** उपसर्ग विद्यमान है।
✧ **सुरभि - सु + रभि**। इसमें **'सु'** उपसर्ग विद्यमान है।
✧ **सुन्दर** - यह एक **रूढ़ (मूल) शब्द** है। इसका निर्माण **'सु'** उपसर्ग से नहीं हुआ है।

❖ **किस शब्द में 'प्र' उपसर्ग है?**
(A) प्रत्यक्ष (B) प्रतिष्ठा (C) प्रभु (D) प्रत्येक
Ans.–[C] [Grade 1st • Hindi • 31.05.2026]

व्याख्या— यह शब्द **'प्र' (उपसर्ग) + 'भू' (मूल शब्द)** से मिलकर बना है।
व्याकरण नियम—अन्य तीनों विकल्पों में **यण् संधि** के नियम (इ/ई + भिन्न स्वर = य्) के कारण **'प्रति' उपसर्ग** का प्रयोग हुआ है, न कि 'प्र' का।
अन्य विकल्पों का विच्छेद (उदाहरण)—
✧ प्रत्यक्ष = **प्रति** + अक्ष ✧ प्रतिष्ठा = **प्रति** + स्था
✧ प्रत्येक = **प्रति** + एक

❖ **'अनुशासन' शब्द में उपसर्ग कौनसा है? सबसे उपयुक्त विकल्प चुनें।**
(A) अ (B) अनु (C) अन (D) सन
Ans.–[B] [LDC 05.07.2026]

व्याख्या— 'अनुशासन' शब्द में **'अनु'** उपसर्ग।
व्याकरण नियम—यहाँ मूल शब्द **'शासन'** है, जिसके पूर्व **'अनु'** (पीछे/अनुसार) उपसर्ग जुड़ने से 'अनुशासन' बना है (अनु + शासन)।
उदाहरण—अनुकरण (अनु + करण), अनुवाद (अनु + वाद)।

❖ **'उपस्थिति' शब्द में कौनसा उपसर्ग है? सबसे उपयुक्त विकल्प चुनें।**
(A) उप (B) ति (C) स्था (D) उ
Ans.–[A] [LDC • 05.07.2026]

व्याख्या—'उपस्थिति' शब्द में **'उप'** उपसर्ग है।
यहाँ मूल शब्द **'स्थिति'** है, जिसके **प्रारंभ में 'उप'** (समीप/गौण) उपसर्ग जुड़कर नया शब्द 'उपस्थिति' (हाजिरी/विद्यमानता) बनाता है। (उप + स्थिति)
उदाहरण—उपयोग (उप + योग), उपनाम (उप + नाम)।

❖ **इनमें से कौन सा शब्द 'पर' उपसर्ग से निर्मित नहीं है?**
(a) पराक्रम (b) पराजय
(c) पराधीन (d) परदेश
(e) परतंत्र
नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए—
(A) (d) और (c) (B) (b) और (d)
(C) (a) और (e) (D) (a) और (b)
Ans.–[D] [Agriculture Supervisor • 18-04-2026]

व्याख्या—
✧ **'पराक्रम'** (परा + क्रम) और **'पराजय'** (परा + जय) दोनों शब्दों में **'परा' उपसर्ग** का प्रयोग हुआ है, न कि 'पर' उपसर्ग का।
✧ अन्य शब्दों जैसे पराधीन (पर + अधीन), परदेश (पर + देश) और परतंत्र (पर + तंत्र) में 'पर' (दूसरा) उपसर्ग लगा है।

❖ **'आगत' शब्द में 'अभि' उपसर्ग जोड़ने से इनमें से किस शब्द का निर्माण होगा?**
(A) अभिगत (B) अभ्यागत
(C) आभ्यागत (D) अभगत
Ans.–[B] [VDO • 02.11.2025]

व्याख्या—व्याकरण नियम—'अभि' उपसर्ग को **'आगत'** में जोड़ते समय यहाँ **यण् संधि** का निर्माण होता है।
उदाहरण—प्रति + आगत = **प्रत्यागत**।

4 प्रत्यय

(कृत् व तद्धित प्रत्यय के भेद व उदाहरण, विदेशी भाषाओं के प्रत्यय)

प्रत्यय के भेद

◈ **'गरीबी' शब्द में प्रत्यय क्या है ? सबसे उपयुक्त विकल्प चुनें।**
(A) बी (B) ई (C) रीबी (D) गर
Ans.–[B] [LDC 05.07.2026]

व्याख्या—'गरीबी' शब्द में **'ई' प्रत्यय** है, अतः **विकल्प (B)** सही है। यहाँ मूल शब्द **'गरीब'** (विशेषण) के अंत में **'ई' (तद्धित प्रत्यय)** जुड़ने से **'गरीबी'** (भाववाचक संज्ञा) शब्द का निर्माण हुआ है।
उदाहरण—दोस्त + ई = **दोस्ती**, बीमार + ई = **बीमारी।**

◈ **'शिक्षक' शब्द में प्रत्यय क्या है? सबसे उपयुक्त विकल्प चुनें।**
(A) शि (B) शिक्षा (C) क (D) अक
Ans.–[D] [LDC 05.07.2026]

व्याख्या—'शिक्षक' शब्द में **'अक' प्रत्यय** है।
व्याकरण नियम—यहाँ **'शिक्ष'** धातु (सिखाना) में **'अक' प्रत्यय** जुड़कर कर्तावाचक शब्द **'शिक्षक'** (शिक्षा देने वाला) बना है
उदाहरण—पाठ + अक = **पाठक**, लेख + अक = **लेखक**

◈ **'राष्ट्र + ईय' प्रकृति- प्रत्यय से बना शब्द क्या है ? सबसे उपयुक्त विकल्प चुनें।**
(A) राष्ट्रीय (B) राष्ट्रिय (C) राश्ट्रिय (D) राष्ट्रीय
Ans.–[A] [LDC 05.07.2026]

व्याख्या—'राष्ट्र' से बना सही शब्द **'राष्ट्रीय'** है।
व्याकरण के अनुसार, जब किसी संज्ञा को संबंधवाचक विशेषण में बदला जाता है, तो उसमें **'ईय' प्रत्यय** जुड़ता है।
उदाहरण—भारत + ईय = **भारतीय**, स्थान + ईय = **स्थानीय**

◈ **नीचे दो कथन दिए गए हैं— कथन I:** जो शब्दांश मूल शब्द के अंत में लगकर, नए शब्द बनाते हैं, वे प्रत्यय कहलाते हैं।
कथन II: प्रत्यय के दो भेद होते हैं- (I) कृत प्रत्यय (II) तद्धित प्रत्यय।
उपर्युक्त कथन के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए—(A) कथन I और II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
Ans.–[A] [Platoon Commander-I • 22-11-2025]

व्याख्या—(A) कथन I और II दोनों सही हैं। प्रत्यय वे अविकारी शब्दांश होते हैं जो किसी मूल शब्द के अंत में जुड़कर नए शब्द का निर्माण करते हैं। प्रत्यय के मुख्य रूप से दो ही भेद होते हैं—**कृत** और **तद्धित प्रत्यय** जो **संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण** के अंत में जुड़ते हैं।

◈ **'उतराई' शब्द में प्रत्यय है—**
(A) उ (B) उत् (C) राई (D) आई
Ans.–[D] [PTET • 15.06.2025]

व्याख्या—**'उतराई'** शब्द में मूल शब्द **'उतर'** है और प्रत्यय **'आई'** है। **'उतर'** क्रिया से **'उतराई'** भाववाचक संज्ञा बनी है। हिंदी में भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए **'आई'**, **'आहट'**, **'पन'** आदि प्रयुक्त होते हैं।

◈ **'क्षत्रिय' शब्द में कौनसा प्रत्यय जुड़ा है?**
(A) इय (B) क्ष (C) य (D) क्षत्रि
Ans.–[A] [Stenographer • Paper-2nd • 05-10-2024]

व्याख्या—**'क्षत्रिय'** शब्द मूल शब्द **'क्षत्र'** से बना है। 'क्षत्र' (जिसका अर्थ शासन या बल है) में जब 'इय' प्रत्यय जुड़ता है तो 'क्षत्रिय' शब्द बनता है, जिसका अर्थ है 'क्षत्र से संबंधित' या 'योद्धा वर्ग'।

◈ **निम्नलिखित में से किस शब्द में प्रत्यय का प्रयोग हुआ है—**
(A) मौसेरा (B) आतप (C) विदेश (D) प्रबंध
Ans.–[*] [Agriculture Supervisor • 03.03.2019]

व्याख्या—उपरोक्त में से प्रत्यय युक्त शब्द हैं—
मौसेरा = मौसा + एरा
विदेश = वि + देश् + अ
प्रबंध = प्र + बंध् + अ
आतप = आ + तप् + अ

◈ **इनमें से किस शब्द में उपसर्ग और प्रत्यय दोनों जुड़े हुए हैं?**
(A) बेरहम (B) बिकाऊ (C) लाजवाब (D) अकथनीय
Ans.–[D] [LDC 23.10.2016]

व्याख्या—**'बेरहम'** शब्द 'बे' उपसर्ग युक्त है, **'बिकाऊ'** शब्द 'आऊ' प्रत्यय युक्त है, **'लाजवाब'** शब्द 'ला' उपसर्ग युक्त है, लेकिन **'अकथनीय'** शब्द 'अ + कथन + ईय' के योग पूर्वक बनने के कारण उपसर्ग व प्रत्यय युक्त है।

◈ **किस शब्द में 'नी' प्रत्यय प्रयुक्त हुआ है?**
(A) नानी (B) जवानी (C) मोरनी (D) चीनी
Ans.–[C] [Jr. Accountant • 2016]

व्याख्या—उपरोक्त में से विकल्प (C) 'मोरनी' में 'नी' प्रत्यय प्रयुक्त हुआ है – मोर + नी = मोरनी
अन्य उदाहरणों में 'नी' प्रत्यय प्रयुक्त नहीं हुआ है।

◈ **इनमें से कौन सा शब्द 'अ' प्रत्यय से नहीं बना है?**
(A) कौशल (B) पांडव (C) लाघव (D) लगाव
Ans.–[D] [Jr. Accountant • 2015]

5 विलोम शब्द

❖ **किस विकल्प में सही विलोम शब्द नहीं है?**

(A) जड़—जंगम (B) खरा—खोटा
(C) क्षुद्र—विशाल (D) अथ—इति

Ans.–[A] [Grade 2nd • 13.07.2026]

व्याख्या—**'जड़'** शब्द का विलोम **'चेतन'** होता है तथा **'जंगम'** शब्द **'स्थावर'** का विलोम है। खोटा शब्द का खरा, विशाल का क्षुद्र तथा इति का विलोम अथ होता है।

❖ **'ग्राह्य' का विलोम शब्द है—**

(A) त्याज्य (B) मुक्त (C) ग्रस्त (D) प्रकट

Ans.–[A] [Grade 1st • 03-06-2026]

व्याख्या—
- ✧ **विलोम शब्द** - विपरीत या उल्टा अर्थ प्रकट करने वाले शब्द।
- ✧ **ग्राह्य** - ग्रहण करने या स्वीकार करने योग्य।
- ✧ **त्याज्य** - त्यागने या छोड़ने योग्य। यह **ग्राह्य** का विलोम शब्द है।
- ✧ **मुक्त** - इसका विलोम **ग्रस्त** या **बद्ध** होता है।
- ✧ **ग्रस्त** - इसका विलोम **मुक्त** होता है।
- ✧ **प्रकट** - इसका विलोम **गुप्त** या **अप्रकट** होता है।

❖ **असंगत विलोम शब्द है—**

(A) विस्तीर्ण – संकीर्ण (B) वैधर्म्य – साधर्म्य
(C) व्यास – समास (D) विकृष्ट – अनाकृष्ट

Ans.–[D] [Grade 1st • Hindi • 31.05.2026]

व्याख्या— सही उत्तर **(D) विकृष्ट — अनाकृष्ट** है।

नियम व कारण –
- ✧ **'आकृष्ट'** (आकर्षित होना) शब्द के विलोम के रूप में **'विकृष्ट'** (दूर हटना/विकर्षण) और **'अनाकृष्ट'** (आकर्षित न होना) दोनों का प्रयोग होता है।

❖ **'संहार' का विलोम शब्द क्या है? सबसे उपयुक्त विकल्प चुनें।**

(A) सृजन (B) विनाश (C) ह्रास (D) प्रगति

Ans.–[A] [LDC 05.07.2026]

व्याख्या—**'संहार'** का अर्थ होता है **'विनाश करना' या 'नष्ट करना'**। सही विलोम **'सृजन'** अर्थ **'निर्माण करना' या 'उत्पन्न करना'** है।
उदाहरण—ब्रह्मा जी सृष्टि का **सृजन** करते हैं और शिव जी **संहार** करते हैं।

❖ **शब्द और विलोम का कौन सा युग्म सही नहीं है ?**

(A) दुर्दान्त – शान्त (B) तप्त – तृप्त
(C) त्यक्त – ग्रहीत (D) धृष्ट – नम्र

Ans.–[B] [Agriculture Supervisor • 18-04-2026]

व्याख्या—**'तप्त'** का अर्थ गर्म या तपा हुआ होता है, जिसका सही विलोम **'शीतल' या 'ठंडा'** होता है। वहीं **'तृप्त'** का अर्थ संतुष्ट होना है, जिसका विलोम 'अतृप्त' होता है।

❖ **'बर्बर' का विलोम शब्द क्या है? सबसे उपयुक्त विकल्प चुनें।**

(A) निर्भ्रान्त (B) असभ्य (C) सभ्य (D) क्रूर

Ans.–[C] [LDC 05.07.2026]

व्याख्या—**'बर्बर'** का अर्थ होता है **'असभ्य, जंगली या क्रूर'** (वह व्यक्ति जिसे शिष्टाचार का ज्ञान न हो)। इसका सही विलोम **'सभ्य'** होगा, जिसका अर्थ **'शिष्टाचार युक्त या सुसंस्कृत'** होता है।
उदाहरण—शिक्षा मनुष्य को **बर्बर** से **सभ्य** बनाती है।

❖ **'नैसर्गिक' का विलोम शब्द क्या है? सबसे उपयुक्त विकल्प चुनें।**

(A) प्राकृतिक (B) कृत्रिम (C) स्वाभाविक (D) जन्मजात

Ans.–[B] [LDC 05.07.2026; LDC • 11-08-2024]

व्याख्या—**'नैसर्गिक'** शब्द 'निसर्ग' मूल शब्द में 'इक' प्रत्यय लगने से बना है। जिसका अर्थ है **'प्रकृति से संबंधित' या 'प्राकृतिक'** इसका सही विलोम **'कृत्रिम'** होगा, जिसका अर्थ **'मनुष्य द्वारा निर्मित या बनावटी'** है।

❖ **'वार्धक्य' का विलोम शब्द क्या है ? सबसे उपयुक्त विकल्प चुनें।**

(A) बुढ़ापा (B) वृद्धावस्था (C) यौवन (D) विकास

Ans.–[C] [LDC 05.07.2026]

व्याख्या—**'वार्धक्य'** शब्द 'वृद्ध' शब्द से बना है, जिसका अर्थ **'बुढ़ापा' या 'वृद्धावस्था'** होता है मानव जीवन की अवस्थाओं के आधार पर बुढ़ापे का विपरीत समय जवानी का होता है अतः इसका सही विलोम **'यौवन'** होगा, जिसका अर्थ **'जवानी या युवावस्था'** है।
उदाहरण—मनुष्य को अपने **यौवन** में ऐसे कार्य करने चाहिए जिससे उसका **वार्धक्य** (बुढ़ापा) सुखद बीते।

❖ **'संकल्प' का विलोम शब्द क्या है? सबसे उपयुक्त विकल्प चुनें।**

(A) संहार (B) विकल्प (C) प्रकल्प (D) विवर्ण

Ans.–[B] [LDC 05.07.2026]

व्याख्या—'संकल्प' का अर्थ है **दृढ़ निश्चय** या किसी एक ही बात पर अडिग रहना इसका उचित विलोम **'विकल्प'** होता है, जिसका अर्थ है **अन्य उपाय** या **चुनने की छूट।**
उदाहरण—जैसे 'सफल' का विलोम 'विफल' होता है, वैसे ही **संकल्प (एक निश्चय)** का विलोम **विकल्प (अनेक रास्ते)** होता है।

❖ **'अथ' का उचित विलोम शब्द होगा—**

(A) प्रारम्भ (B) आदि (C) मध्य (D) इति

Ans.–[D] [VDO 02.11.2025]
[Supervisor (Female) (Anganwadi) 3.03.2019]

6 पर्यायवाची शब्द

❖ **किस विकल्प में 'चंद्रमा' के पर्यायवाची शब्द नहीं हैं?**
(A) सुधाकर, सुधासदन (B) सुधापाणि, सुधाहर
(C) सुधाधर, सुधांग (D) सुधानिधि, सुधाघट
Ans.–[B] **[Grade 2nd • 13.07.2026]**

व्याख्या—**सुधापाणि** और **सुधाहर** चंद्रमा के पर्यायवाची नहीं हैं। चंद्रमा अमृत (सुधा) का भंडार माना जाता है, इसलिए इसके प्रमुख पर्यायवाची **सुधाकर**, **सुधासदन**, **सुधाधर**, **सुधांग**, **सुधानिधि** तथा **सुधापट** हैं।

❖ **किस विकल्प के सभी शब्द 'कमल' के पर्यायवाची हैं?**
(A) सरोज, पद्म, कोरक (B) जलज, जलजात, गुंचा
(C) पुंडरीक, नलिन, राजीव (D) अरविंद, मुकुल, अम्बुद
Ans.–[C] **[Grade 1st • Hindi • 31.05.2026]**

व्याख्या—सही उत्तर **(C) पुण्डरीक, नलिन, राजीव** है।
इस विकल्प के तीनों शब्द **'कमल' के पर्यायवाची** हैं।
अन्य विकल्पों में त्रुटियाँ (व्याकरण नियम) –
✧ विकल्प (A) में **'कोरक'** का अर्थ **कली** होता है।
✧ विकल्प (B) में **'गुंचा'** का अर्थ भी **कली** होता है।
✧ विकल्प (D) में **'मुकुल'** का अर्थ **कली** होता है।

❖ **निम्न में से 'तिमिर' का पर्यायवाची कौन-सा नहीं है? सबसे उपयुक्त विकल्प चुनें।**
(A) घनिष्ठ (B) ध्वान्त (C) तमिस्र (D) अंधियारा
Ans.–[A] **[LDC 05.07.2026]**

व्याख्या—'तिमिर' का पर्यायवाची **'घनिष्ठ'** नहीं है।
'तिमिर' का अर्थ **'अंधकार'** होता है, जबकि **'घनिष्ठ'** का अर्थ **'बहुत करीबी या गहरा'** (जैसे- घनिष्ठ मित्रता) होता है इसलिए यह तिमिर का समानार्थी नहीं है।
तिमिर के सही पर्यायवाची - अंधकार, अँधेरा, तम, तमस आदि।

❖ **'विभावरी' का पर्यायवाची क्या है? सबसे उपयुक्त विकल्प चुनें।**
(A) दिवस (B) शर्वरी (C) प्रभात (D) वासर
Ans.–[B] **[LDC 05.07.2026]**

व्याख्या—'विभावरी' का अर्थ **तारों भरी रात** या **रात्रि** होता है इसका सबसे उपयुक्त पर्यायवाची **'शर्वरी'** है, जिसका अर्थ भी रात होता है।
रात्रि के अन्य पर्यायवाची- **निशा, रजनी, यामिनी, राका** आदि।

❖ **'विद्या' का पर्यायवाची क्या है? सबसे उपयुक्त विकल्प चुनें।**
(A) ज्ञान (B) पवन (C) धरा (D) नभ
Ans.–[A] **[LDC 05.07.2026]**

व्याख्या—'विद्या' का अर्थ **शिक्षा, बोध या जानने की अवस्था** होता है दिए गए विकल्पों में इसका सही पर्यायवाची **'ज्ञान'** है।
विद्या के अन्य पर्यायवाची - **शिक्षा, इल्म, सरस्वती** (ज्ञान की देवी के रूप में) आदि।

❖ **'चन्द्रमा' का पर्यायवाची क्या है? सबसे उपयुक्त विकल्प चुनें।**
(A) रवि (B) शशि (C) पवन (D) नभ
Ans.–[B] **[LDC 05.07.2026]**

व्याख्या—'चन्द्रमा' का सही पर्यायवाची **'शशि'** है, अतः **विकल्प (B)** सही है। **चन्द्रमा के अन्य प्रमुख पर्यायवाची:** चाँद, राकेश, मयंक, सोम, इंदु, सुधाकर, रजनीश आदि।

❖ **'अटवी' का पर्यायवाची कौन-सा नहीं है? सबसे उपयुक्त विकल्प चुनें।**
(A) अरण्य (B) कानन (C) निकुञ्ज (D) आखेट
Ans.–[D] **[LDC 05.07.2026]**

व्याख्या—'अटवी' का अर्थ **जंगल** या **वन** होता है **'आखेट'** इसका पर्यायवाची नहीं है क्योंकि 'आखेट' का अर्थ **'शिकार'** होता है। अन्य तीनों (अरण्य, कानन, निकुञ्ज) वन के पर्यायवाची हैं।
आखेट के पर्यायवाची- **शिकार, मृगया, अहेर** आदि

❖ **सूची-I को सूची-II से सुमेलित करें :**

सूची-I (शब्द)	**सूची-II (पर्यायवाची)**
(a) नदी	(i) आपगा
(b) धूप	(ii) शकुन्त
(c) चिड़िया	(iii) कासार
(d) झील	(iv) आतप

नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें :
(A) (a)-(i), (b)-(ii), (c)-(iii), (d)-(iv)
(B) (a)-(i), (b)-(iv), (c)-(ii), (d)-(iii)
(C) (a)-(ii), (b)-(iii), (c)-(i), (d)-(iv)
(D) (a)-(iii), (b)-(ii), (c)-(iv), (d)-(i)
Ans.–[B] **[Agriculture Supervisor • 18-04-2026]**

व्याख्या—सही सुमेलन इस प्रकार है—(a) नदी – **(i) आपगा** (नदी के अन्य पर्याय – **सरिता, तटिनी**)
(b) धूप – **(iv) आतप** (धूप के अन्य पर्याय– **घाम, निदाघ**)
(c) चिड़िया – **(ii) शकुन्त** (चिड़िया के अन्य पर्याय – **पक्षी, खग, विहंग**)
(d) झील – **(iii) कासार** (झील के अन्य पर्याय – **सरोवर, ताल**)

❖ **'चतुर' का पर्यायवाची शब्द होगा—**
(A) पर्ण (B) पटकी (C) पटु (D) पाटल
Ans.–[C] **[VDO 02.11.2025]**

7 संधि

(स्वर, व्यंजन व विसर्ग संधि के भेद, नियम, संधि-विच्छेद व उदाहरण)

संधि के भेद (स्वर संधि)

❖ **त्रुटिरहित संधि विच्छेद है—**

(A) महर्षि = मह + ऋषि (B) मतैक्य = मत + ऐक्य
(C) रामायण = राम + अयण (D) सुषुप्ति = सु + षुप्ति

Ans.–[B] [Grade 1st • 10-06-2026]

व्याख्या—
✧ **मतैक्य** का शुद्ध संधि विच्छेद **मत + ऐक्य** है जिसमें **वृद्धि स्वर संधि** का नियम (**अ + ऐ = ऐ**) लागू होता है।
✧ **महर्षि** का शुद्ध संधि विच्छेद **महा + ऋषि** है जो **गुण स्वर संधि** का उदाहरण है।
✧ **रामायण** का शुद्ध संधि विच्छेद **राम + अयन** है जिसमें **दीर्घ स्वर संधि** तथा **व्यंजन संधि** ('न' का 'ण' में परिवर्तन) दोनों के नियम लगते हैं।
✧ **सुषुप्ति** का शुद्ध संधि विच्छेद **सु + सुप्ति** है जो **व्यंजन संधि** का उदाहरण है।

❖ **किस विकल्प में गलत संधि विच्छेद है?**

(A) किंचित = किम् + चित (B) अभिषेक = अभि + सेक
(C) संकल्प = सम् + कल्प (D) प्रमाण = प्र + माण

Ans.–[D] [Grade 1st • 31-05-2026]

व्याख्या—
✧ **प्रमाण** का शुद्ध संधि विच्छेद **प्र + मान** होता है।
✧ **व्यंजन संधि नियम -** यदि ऋ, र, ष के बाद 'न' व्यंजन आता है, तो 'न' का परिवर्तन **'ण'** में हो जाता है।
✧ **किंचित - किम् + चित** (व्यंजन संधि)
✧ **अभिषेक - अभि + सेक** (व्यंजन संधि)
✧ **संकल्प - सम् + कल्प** (व्यंजन संधि)

❖ **किस विकल्प में सही संधि-विच्छेद है ?**

(A) महेन्द्र = मही + इन्द्र (B) मात्रानंद = मात्र + आनंद
(C) अन्वेषण = अनु + ईषण (D) प्रत्येक = प्रति + एक

Ans.–[D] [Grade 1st • 03-06-2026]

व्याख्या—
✧ **प्रत्येक** का शुद्ध संधि-विच्छेद **प्रति + एक** होता है, जिसमें **यण् स्वर संधि** (इ + ए = ये) का नियम लागू होता है।
✧ **महेन्द्र** का शुद्ध संधि-विच्छेद **महा + इन्द्र** होता है, जिसमें **गुण स्वर संधि** (आ + इ = ए) है।
✧ **मात्रानंद** का शुद्ध संधि-विच्छेद **मातृ + आनंद** होता है, जिसमें **यण् स्वर संधि** (ऋ + आ = रा) है।
✧ **अन्वेषण** का शुद्ध संधि-विच्छेद **अनु + एषण** होता है, जिसमें **यण् स्वर संधि** (उ + ए = वे) है।

❖ **किस विकल्प में गलत संधि-विच्छेद है?**

(A) तृष्णा = तृष् + णा (B) वाङ्मय = वाक् + मय
(C) तद्रूप = तत् + रूप (D) महच्छत्र = महत् + छत्र

Ans.–[A] [Grade 1st • Hindi • 31.05.2026]

व्याख्या—
✧ **व्याकरण नियम** – व्यंजन संधि के नियमानुसार यदि **'ऋ'**, **'र्'** या **'ष्'** के बाद **'न'** वर्ण आता है, तो **'न'** का परिवर्तन **'ण'** में हो जाता है।
✧ **स्पष्टीकरण** – इसका सही संधि-विच्छेद और शब्द **तृष् + ना = तृष्णा** होता है। (अन्य सही संधियाँ— तत् + रूप = **तद्रूप**, महत् + छत्र = **महच्छत्र**

❖ **इनमें से किसके मेल से होने वाले विकार को 'संधि' कहते हैं?**

(A) दो वर्णों के मेल से (B) दो पदबंधों के मेल से
(C) दो उपवाक्यों के मेल से (D) दो वाक्यों के मेल से

Ans.–[A] [Platoon Commander-I • 22-11-2025]

व्याख्या—जब **दो निकटवर्ती वर्णों (ध्वनियों)** का आपस में मिलन होता है, तो उनके मेल से उत्पन्न होने वाले **विकार या परिवर्तन को 'संधि'** कहा जाता है।

❖ **संधि विषयक संगत विकल्प का चयन कीजिए—**

(A) वी + इक्षण = वीक्षण (B) वधू + उक्ति = वधुक्ति
(C) अभि + आगत = अभयागत (D) मातृ + उपदेश = मात्रुपदेश

Ans.–[D] [CET Gr. Level 7.01.2023]

व्याख्या—संधि विषयक संगत विकल्प उपरोक्त में से (D) है।
मातृ + उपदेश = **'मात्रुपदेश'**
यहाँ पर **'ऋ'** के स्थान पर **'र'** हुआ है।
मातृ + उपदेश
मात् + **ऋ** + उपदेश
मात् + **र्** + उपदेश
= (मात्रुपदेश) (यण् संधि)
अन्य विकल्पों का सही रूप है—
(C) अभि + आगत = **अभ्यागत** (यण्)
(A) वि + ईक्षण = **वीक्षण** (दीर्घ)
(B) वधू + उक्ति = **वधूक्ति** (दीर्घ)

❖ **संधि की दृष्टि से संगत विकल्प का चयन कीजिए—**

(A) विधे + इका = विधायिका
(B) स्त्री + उचित = स्त्रीयोचित
(C) गुरु + उपदेश = गुरुपदेश

8 समास

(समास के भेद, समास-विग्रह व उदाहरण)

समास के भेद

❖ **इनमें से 'अव्ययीभाव–तत्पुरुष–कर्मधारय–द्वन्द्व–द्विगु' समासों के उदाहरण पहचानकर इसी क्रम में लगाइए—**

(a) सज्जन (b) पसेरी

(c) हरिशंकर (d) बेरहम

(e) पाकेटमार

नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए:

(A) (a), (e), (d), (c), (b) (B) (d), (e), (a), (c), (b)

(C) (d), (c), (a), (b), (e) (D) (b), (d), (c), (e), (a)

Ans.–[B] **[Agriculture Supervisor • 18-04-2026]**

व्याख्या—उपरोक्त उदाहरणों का सही क्रम निम्न प्रकार है–

1. **अव्ययीभाव समास** – **'बेरहम'** (बिना रहम के – इसमें प्रथम पद 'बे' उपसर्ग/अव्यय है)।
2. **तत्पुरुष समास** – **'पाकेटमार'** (पाकेट को मारने वाला – यह कर्म तत्पुरुष है जहाँ 'को' कारक चिह्न का लोप है)।
3. **कर्मधारय समास** – **'सज्जन'** (सत् है जो जन – यहाँ विशेषण–विशेष्य का संबंध है)।
4. **द्वन्द्व समास** – **'हरिशंकर'** (हरि और शंकर – इसमें दोनों पद प्रधान हैं तथा योजक शब्द 'और' का लोप है)।
5. **द्विगु समास** – **'पसेरी'** (पाँच सेरों का समूह – इसका प्रथम पद (पाँच) संख्यावाचक विशेषण है)।

❖ **'अव्ययीभाव - तत्पुरुष - कर्मधारय - द्विगु - द्वन्द्व' के निम्नलिखित उदाहरणों को पहचान कर इसी क्रम में ही व्यवस्थित कीजिए—**

a. अध्यात्म b. नवजात

c. वागदत्त d. अन्नजल

e. नवरत्न

नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें—

(A) a, b, c, d, e (B) a, c, b, e, d

(C) c, d, e, a, b (D) b, c, d, e, a

Ans.–[B] **[REET • Hindi (L-2) • 19.01.2026]**

व्याख्या—अध्यात्म (अधि + आत्म) में **अव्ययीभाव समास** है। **वागदत्त** (वाक् से दत्त) में **तत्पुरुष समास** है क्योंकि इसमें कारक चिह्न 'से' (करण) का लोप है। **नवजात** (नव है जो जात) में **कर्मधारय समास** है जहाँ **विशेषण–विशेष्य** का संबंध है। **नवरत्न** (नौ रत्नों का समूह) में **द्विगु समास** है जिसका पहला पद संख्यावाचक है और **अन्नजल** (अन्न और जल) में **द्वन्द्व समास** है जिसके दोनों पद प्रधान हैं।

❖ **'समास' का अर्थ है—**

(A) विस्तार (B) प्रसार

(C) संक्षेप (D) आक्षेप

Ans.–[C] **[Platoon Commander-I • 22-11-2025]**

व्याख्या—व्याकरण की दृष्टि से **'समास'** शब्द का शाब्दिक अर्थ **'संक्षेप'** या **'संक्षिप्तीकरण'** होता है।

❖ **सूची I को सूची II से सुमेलित करे—**

सूची I (समास)	**सूची II (समस्त पद)**
a. तत्पुरुष समास	I. पीतांबर
b. द्वन्द्व समास	II. राजपुत्र
c. बहुव्रीहि समास	III. जन्म-मरण
d. द्विगु समास	IV. नवरत्न

नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें—

(A) a-II, b-IV, c-III, d-I (B) a-II, b-III, c-I, d-IV

(C) a-IV, b-II, c-III, d-I (D) a-I, b-II, c-III, d-IV

Ans.–[B] **[Platoon Commander-I • 22-11-2025]**

व्याख्या—तत्पुरुष समास का उदाहरण **'राजपुत्र'** (राजा का पुत्र) है **द्वन्द्व समास** का उदाहरण जन्म और मरण है जहाँ दोनों पद प्रधान हैं। **बहुव्रीहि समास** का उदाहरण **'पीतांबर'** (पीले हैं वस्त्र जिसके अर्थात् विष्णु) है। **द्विगु समास** का उदाहरण **'नवरत्न' (नौ रत्नों का समूह)** है जहाँ पहला पद **संख्यावाचक** है।

द्विगु समास में प्रथम पद हमेशा **संख्यावाचक विशेषण** होता है। उदाहरण—**चौराहा (चार राहों का समूह)।**

❖ **समास की दृष्टि से कौनसा विकल्प असंगत है?**

(A) देशभक्ति – संप्रदान तत्पुरुष

(B) विद्याभ्यास – संबंध तत्पुरुष

(C) कलाप्रवीण – अधिकरण तत्पुरुष

(D) पदच्युत – करण तत्पुरुष

Ans.–[D] **[D.El.Ed./BSTC • (Shift-1) • 01-06-2025]**

व्याख्या—देशभक्ति = देश के लिए भक्ति (सम्प्रदान तत्पुरुष – **'के लिए'** कारक चिह्न)

विद्याभ्यास = विद्या का अभ्यास (संबंध तत्पुरुष – **'का'** कारक चिह्न)

कलाप्रवीण = कला में प्रवीण (अधिकरण तत्पुरुष – **'में'** कारक चिह्न)

पदच्युत = पद से च्युत (अलग होने के अर्थ में)। जब **'से'** का प्रयोग अलग होने के भाव में होता है, तो वहाँ अपादान तत्पुरुष समास होता है। करण तत्पुरुष में **'से'** का प्रयोग साधन के रूप में होता है।

❖ **सूची-I के साथ सूची-II का मिलान कीजिए।**

सूची-I (पद)	**सूची-II (समास)**
(a) देशभक्त	(i) द्वंद्व
(b) दोपहर	(ii) द्विगु

9 संज्ञा

(व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक संज्ञा के भेद व उदाहरण)

संज्ञा के भेद

❖ **किस विकल्प में जातिवाचक संज्ञा से बनी भाववाचक संज्ञा नहीं है?**

(A) मौन (B) पंडिताई (C) बड़प्पन (D) लड़कपन

Ans.–[C] [Grade 2nd • 13.07.2026]

व्याख्या—**'बड़प्पन'** भाववाचक संज्ञा का निर्माण **'बड़ा' (विशेषण)** शब्द में **'पन'** प्रत्यय जुड़ने से हुआ है। **'मौन'** (मुनि—जातिवाचक), **'पंडिताई'** (पंडित—जातिवाचक) तथा **'लड़कपन'** (लड़का—जातिवाचक) शब्दों से निर्मित भाववाचक संज्ञाएँ हैं।

❖ **सर्वनाम से निर्मित संज्ञा शब्दों का समूह है—**

(A) दोस्ती, धिक्कार (B) ऊँचा, कसैला

(C) दूरस्थ, बुराई (D) स्वत्व, ममत्व

Ans.–[D] [PSI • 05.04.2026 (Morning Shift)]

व्याख्या—वे भाववाचक संज्ञाएँ जो **सर्वनाम** शब्दों में प्रत्यय जोड़कर बनाई जाती हैं, उन्हें सर्वनाम से निर्मित संज्ञा कहते हैं। **'स्वत्व'** (स्व + त्व) और **'ममत्व'** (मम + त्व) दोनों शब्द क्रमशः **'स्व' (अपना) और 'मम' (मेरा)** सर्वनामों से बने हैं।

❖ **निम्नलिखित में 'संज्ञा' का भेद नहीं है—**

(A) व्यक्तिवाचक (B) भाववाचक

(C) जातिवाचक (D) प्रश्नवाचक

Ans.–[D] [Platoon Commander-I • 22-11-2025]

व्याख्या—**'प्रश्नवाचक'** संज्ञा का भेद नहीं है। यह **सर्वनाम** का एक प्रकार है। किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, प्राणी या भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्दों को **संज्ञा** कहते हैं।

✧ संज्ञा के तीन भेद होते हैं— **व्यक्तिवाचक, जातिवाचक और भाववाचक संज्ञा**। **प्रश्नवाचक सर्वनाम** वह होता है जिसका प्रयोग किसी वस्तु या व्यक्ति के विषय में प्रश्न पूछने के लिए किया जाता है।

❖ **निम्नलिखित भेदों में से कौन-सा संज्ञा का भेद नहीं है?**

(A) व्यक्तिवाचक (B) जातिवाचक

(C) द्रव्यवाचक (D) आश्चर्यवाचक

Ans.–[D] [Fourth Class • (Morning) • 20.09.2025]

व्याख्या—हिंदी व्याकरण में **संज्ञा के मुख्य पाँच भेद** होते हैं— **1. व्यक्तिवाचक, 2. जातिवाचक, 3. भाववाचक, 4. द्रव्यवाचक 5. समूहवाचक**। **'आश्चर्यवाचक' संज्ञा का कोई भेद नहीं है,** बल्कि यह विस्मयादिबोधक अव्यय का एक प्रकार है।

❖ **किस विकल्प में सभी संज्ञा शब्द क्रिया शब्दों से निर्मित हैं ?**

(A) भूल, हँसी (B) शिक्षा, अच्छाई

(C) मिठास, चुनाव (D) पूजा, जवानी

Ans.–[A] [SI 13.09.2021]

व्याख्या—विकल्प (A) में **'भूल'** संज्ञा **'भूलना'** क्रिया से बनी है और **'हँसी'** संज्ञा **'हँसना'** क्रिया से बनी है। ये दोनों ही **'भाववाचक संज्ञाएँ'** हैं। अन्य विकल्पों में कुछ शब्द क्रिया से नहीं बने हैं। जैसे - **'अच्छाई'** (अच्छा विशेषण से), **'मिठास'** (मीठा विशेषण से) और **'जवानी'** (जवान विशेषण से) बने हैं।

❖ **इनमें से कौनसा शब्द भाववाचक संज्ञा से बना 'विशेषण' नहीं है?**

(A) लोभी (B) बुद्धिमान (C) पापी (D) प्राथमिक

Ans.–[D] [Jr. Accountant 2016]

व्याख्या—उपरोक्त में से **'प्राथमिक'** शब्द भाववाचक संज्ञा से बना विशेषण शब्द नहीं है।

प्रथम + इक = प्राथमिक

❖ **इनमें से कौन सा विशेषण संज्ञा से नहीं बना है?**

(A) लालची (B) धार्मिक (C) चचेरा (D) बाहरी

Ans.–[D] [Jr. Accountant 2015]

व्याख्या—उपरोक्त में से 'बाहरी' विशेषण संज्ञा से बना हुआ नहीं है।

अन्य उदाहरणों में –

लालची = लालच + ई, चचेरा = चाचा + एरा,

धार्मिक = धर्म + इक।

❖ **कौन–सा विशेषण भाववाचक संज्ञा से बना है?**

Ans.–[D] [Jr. Accountant 2011]

(A) ऊनी (B) घरेलू (C) जंगली (D) दयालु

व्याख्या—उपरोक्त में से 'दयालु' शब्द भाववाचक संज्ञा से बना है।

अन्यत्र – दया + आलु = दयालु, ऊन + ई = ऊनी,

जंगल + ई = जंगली।

व्यक्तिवाचक संज्ञा

❖ **निम्न में व्यक्तिवाचक संज्ञा है—**

(A) मनुष्य (B) घर (C) नदी (D) ईश्वर

Ans.–[D] [PSI • 06.04.2026 (Morning Shift)]

व्याख्या—**व्यक्तिवाचक संज्ञा** वह शब्द है जो किसी विशेष **व्यक्ति, वस्तु** या **स्थान** का बोध कराता है। वहीं **जातिवाचक संज्ञा** किसी वर्ग या सम्पूर्ण जाति का बोध कराती है—

✧ **'मनुष्य', 'घर'** और **'नदी'** अपनी सम्पूर्ण जाति या वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं, इसलिए ये **जातिवाचक संज्ञा** हैं।

✧ **'ईश्वर'** शब्द एक अद्वितीय और परम सत्ता का बोध कराता है, इसलिए हिंदी व्याकरण में इसे **व्यक्तिवाचक संज्ञा** के अंतर्गत रखा जाता है।

10 सर्वनाम
(पुरुषवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, प्रश्नवाचक, संबंधवाचक, निजवाचक सर्वनाम के भेद व उदाहरण)

सर्वनाम के भेद

◈ **सही सुमेलित कीजिए—**

सर्वनाम के भेद	**उदाहरण**
a. निजवाचक सर्वनाम	I. उन्हें कुछ दे दो।
b. अनिश्चयवाचक सर्वनाम	II. आप कहाँ जा रहे थे?
c. संबंधवाचक सर्वनाम	III. वह आप खा लेता है।
d. पुरुषवाचक सर्वनाम	IV. जो करेगा सो भरेगा।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें—

(A) a-II, b-IV, c-III, d-I (B) a-III, b-I, c-IV, d-II
(C) a-IV, b-II, c-I, d-III (D) a-I, b-III, c-IV, d-II

Ans.–[B] [Driver • 23.11.2025]

व्याख्या—**निजवाचक सर्वनाम** में कर्ता के **'स्वयं'** के लिए **'आप'** का प्रयोग होता है। (वह **आप** खा लेता है)। **अनिश्चयवाचक सर्वनाम** किसी अनिश्चित वस्तु का बोध कराता है। (**कुछ** दे दो)। **संबंधवाचक सर्वनाम** दो बातों में संबंध जोड़ता है (**जो** करेगा **सो** भरेगा)। **पुरुषवाचक सर्वनाम** वक्ता या श्रोता के लिए प्रयुक्त होता है। (मध्यम पुरुष - **आप** कहाँ जा रहे थे?)।

◈ **निम्नलिखित में 'सर्वनाम' का भेद नहीं है—**

(A) पुरुषवाचक (B) संबंधवाचक
(C) गुणवाचक (D) निजवाचक

Ans.–[C] [Platoon Commander-I • 22-11-2025]

व्याख्या—**'गुणवाचक'** सर्वनाम का भेद नहीं है, यह **विशेषण** है।
परिभाषा: जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं, उन्हें **सर्वनाम** कहते हैं।

✧ सर्वनाम के कुल **छः भेद** होते हैं—**पुरुषवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, संबंधवाचक, प्रश्नवाचक** और **निजवाचक।** तथा जो शब्द किसी **संज्ञा** या **सर्वनाम के गुण, दोष, रंग, आकार, स्वभाव** आदि का बोध कराते हैं, वे **गुणवाचक विशेषण** कहलाते हैं। **प्रयोग एवं उदाहरण** जैसे- **'अच्छा', 'ईमानदार', 'लाल', 'सुंदर'** आदि गुणवाचक विशेषण हैं।

◈ **सूची-1 का सूची-2 के साथ मिलान कीजिए :**

सूची-1 (सर्वनाम)	**सूची-2 (सार्वनामिक वाक्य)**
(a) पुरुषवाचक सर्वनाम	(i) देखो तो कौन आया है?
(b) अनिश्चयवाचक सर्वनाम	(ii) मैं अपने आप चला जाऊँगा।
(c) प्रश्नवाचक सर्वनाम	(iii) कुछ दे दीजिए।
(d) निजवाचक सर्वनाम	(iv) आजकल वह शांत रहता है।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए:

(A) (a)-(iv), (b)-(iii), (c)-(i), (d)-(ii)
(B) (a)-(iii), (b)-(i), (c)-(ii), (d)-(iv)
(C) (a)-(iv), (b)-(iii), (c)-(ii), (d)-(i)
(D) (a)-(ii), (b)-(iv), (c)-(iii), (d)-(i)

Ans.–[A] [Fourth Class • (Evening) • 20.09.2025]

व्याख्या—**सही उत्तर**—(A) (a)-(iv), (b)-(iii), (c)-(i), (d)-(ii)
यहाँ सर्वनाम के प्रकार और उनके वाक्यों का सही मिलान इस प्रकार है—

(a) **पुरुषवाचक सर्वनाम**—जो सर्वनाम बोलने वाले, सुनने वाले या किसी तीसरे व्यक्ति के लिए प्रयोग होते हैं। उदाहरण—आजकल **वह** शांत रहता है।
(b) **अनिश्चयवाचक सर्वनाम**—जिन सर्वनामों से किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति का बोध न हो। उदाहरण—**कुछ** दे दीजिए।
(c) **प्रश्नवाचक सर्वनाम**—जिनका प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता है। उदाहरण—देखो तो **कौन** आया है?
(d) **निजवाचक सर्वनाम**—जिनका प्रयोग कर्ता स्वयं के लिए (**खुद/अपने आप**) करता है। उदाहरण—मैं **अपने आप** चला जाऊँगा।

◈ **निम्नलिखित वाक्यों में से निजवाचक सर्वनाम का उदाहरण कौन सा है ?**

(A) कौन है वहाँ, सामने आओ।
(B) मैं स्वयं चला जाऊँगा।
(C) जो झूठ बोलता है वह कभी आगे नहीं बढ़ सकता।
(D) यह लाना ज़रा।

Ans.–[B] [Fourth Class • (Morning) • 21.09.2025]

व्याख्या—जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग कर्ता द्वारा **अपनेपन का बोध** कराने के लिए (स्वयं के लिए) किया जाता है, उन्हें **निजवाचक सर्वनाम** कहते हैं। इसके प्रमुख शब्द **स्वयं, खुद, स्वतः, अपने आप** आदि हैं। वाक्य ''मैं **स्वयं** चला जाऊँगा'' में **'स्वयं'** निजवाचक सर्वनाम है। अन्य विकल्पों के सर्वनाम—(A) 'कौन' - **प्रश्नवाचक सर्वनाम** (C) 'जो...वह' - **संबंधवाचक सर्वनाम** (D) 'यह' - **निश्चयवाचक सर्वनाम**

◈ **सर्वनाम के कितने मुख्य भेद होते हैं?**

(A) दो (B) तीन (C) छः (D) आठ

Ans.–[C] [CET (10+2) • Shift-1 • 24-10-2024]

व्याख्या—हिंदी व्याकरण के अनुसार सर्वनाम के 6 मुख्य भेद माने गए हैं। ये भेद इस प्रकार हैं—(1) पुरुषवाचक सर्वनाम, (2) निश्चयवाचक सर्वनाम, (3) अनिश्चयवाचक सर्वनाम, (4) संबंधवाचक सर्वनाम, (5) प्रश्नवाचक सर्वनाम, (6) निजवाचक सर्वनाम।

◈ **निम्नलिखित में से किस वाक्य में सर्वनाम का सही प्रयोग नहीं हुआ है?**

(A) हमें अपना काम करने दीजिए।

11 विशेषण

(गुणवाचक, परिमाणवाचक, संख्यावाचक, सार्वनामिक विशेषण)

विशेषण के भेद

◈ **'देव' संज्ञा से बना विशेषण है—**

(A) दैवज्ञ (B) देवता (C) देवत्व (D) दैविक

Ans.–[D] [Grade 1st • Hindi • 31.05.2026]

व्याख्या—
- ✧ **'देव'** एक जातिवाचक संज्ञा है, जिससे विशेषण बनाने के लिए **'इक' प्रत्यय** का प्रयोग किया गया है। हिंदी व्याकरण के नियमानुसार, जब किसी शब्द में **'इक'** प्रत्यय जुड़ता है, तो शब्द के प्रथम स्वर में **वृद्धि (मात्रा में परिवर्तन)** हो जाती है।
- ✧ **नियम/उदाहरण** – **देव + इक = दैविक** (विशेषण)। इसी प्रकार, वेद + इक = **वैदिक**, देह + इक = **दैहिक**।
- ✧ **अन्य विकल्प** – **'देवता'** (जातिवाचक संज्ञा) और **'देवत्व'**

◈ **'सोना' से बना विशेषण शब्द क्या है? सबसे उपयुक्त विकल्प चुनें।**

(A) स्वर्ण (B) स्वर्णिम (C) सोनी (D) सोनिक

Ans.–[B] [LDC 05.07.2026]

व्याख्या—हिन्दी व्याकरण में संज्ञा शब्दों के अंत में प्रत्यय जोड़कर **विशेषण** का निर्माण किया जाता है। **'सोना'** (तत्सम रूप – स्वर्ण) एक द्रव्यवाचक संज्ञा है जब **'स्वर्ण'** मूल शब्द में **'इम' प्रत्यय** जोड़ा जाता है। (स्वर्ण + इम), तो यह **'स्वर्णिम'** (सुनहरा) विशेषण बन जाता है। **उदाहरण** – यह भारत का **स्वर्णिम** इतिहास है।

◈ **'बालक' से बना विशेषण क्या है? सबसे उपयुक्त विकल्प चुनें।**

(A) बालकपन (B) बालकीय
(C) बाल्य (D) बालिका

Ans.–[B] [LDC 05.07.2026]

व्याख्या—**व्याकरण नियम**—संज्ञा शब्दों के अंत में प्रत्यय जोड़कर विशेषण बनाए जाते हैं यहाँ 'बालक' में **'ईय' प्रत्यय** लगने से **'बालकीय' (विशेषण)** बना है, जिसका अर्थ है **'बालकों के योग्य या बालक से संबंधित।'**

उदाहरण—भारत + ईय = भारतीय, **जाति + ईय = जातीय।**

◈ **'दया' से बना विशेषण शब्द क्या है? सबसे उपयुक्त विकल्प चुनें।**

(A) दयालु (B) दयिता
(C) दयापूर्ण (D) दाया

Ans.–[A] [LDC 05.07.2026]

व्याख्या—**व्याकरण नियम**—संज्ञा शब्दों में प्रत्यय लगाकर विशेषण का निर्माण होता है यहाँ 'दया' शब्द में **'आलु' प्रत्यय** जोड़ने से **'दयालु'** विशेषण बनता है, जिसका अर्थ है – **'दया करने वाला'**।
उदाहरण—कृपा + आलु = कृपालु, **श्रद्धा + आलु = श्रद्धालु।**

◈ **'धर्म' से बना विशेषण शब्द क्या है? सबसे उपयुक्त विकल्प चुनें।**

(A) धर्मी (B) अधर्म
(C) धार्मिक (D) धर्मता

Ans.–[C] [LDC 05.07.2026]

व्याख्या—**व्याकरण नियम**—जब किसी शब्द में **'इक' प्रत्यय** जुड़ता है, तो शब्द के प्रथम वर्ण के स्वर में **वृद्धि (जैसे 'अ' का 'आ')** हो जाती है अतः **धर्म + इक = धार्मिक** (विशेषण) बनता है।
उदाहरण—समाज + इक = सामाजिक, **इतिहास + इक = ऐतिहासिक।**

◈ **'शान्ति' से बना विशेषण क्या है ? सबसे उपयुक्त विकल्प चुनें।**

(A) शान्त (B) अशान्त
(C) शान्ति (D) अशान्ति

Ans.–[A] [LDC 05.07.2026]

व्याख्या—**व्याकरण नियम**—**विशेषण** वे शब्द होते हैं जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं। **'शान्ति'** एक भाव (संज्ञा) है, जबकि **'शान्त'** एक **गुणवाचक विशेषण** है जो किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान की विशेषता बताता है।
उदाहरण—'शान्त वातावरण' या **'शान्त स्वभाव'**

◈ **किस विकल्प में दोनों शब्द विशेषण हैं?**

(A) धमकी, धर्मान्ध (B) गोपनीय, गोलोक
(C) रोगी, भविष्य (D) कटाक्ष, प्रेम

Ans.–[C] [PSI • 06.04.2026 (Morning Shift)]

व्याख्या—शब्दों का व्याकरणिक रूप इस प्रकार है—
(A) धमकी (**भाववाचक संज्ञा**), धर्मान्ध (**विशेषण** - जैसे – धर्मान्ध व्यक्ति)
(B) गोपनीय (**विशेषण** - जैसे – गोपनीय बात), गोलोक (**संज्ञा**)
(C) रोगी (**विशेषण** - जैसे – रोगी मनुष्य), भविष्य (**विशेषण**)
(D) कटाक्ष (**संज्ञा**), प्रेम (**भाववाचक संज्ञा**)

◈ **किस विकल्प में विशेषण शब्द है?**

(A) अमात्य (B) अनुचित
(C) अभ्यास (D) अमावस

Ans.–[B] [PSI • 05.04.2026 (Morning Shift)]

व्याख्या— **विशेषण** वे शब्द होते हैं जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं। (जैसे—**अच्छा, बुरा, उचित**)।
- ✧ **'अनुचित'** सही उत्तर है क्योंकि यह एक **विशेषण** है। (उदाहरण—अनुचित बात, अनुचित व्यवहार—यहाँ यह संज्ञा की विशेषता बता रहा है)।
- ✧ **'अमात्य'** (मंत्री), **'अभ्यास'** और **'अमावस' संज्ञा** शब्द हैं।

12 क्रिया व क्रिया-विशेषण
(क्रिया के भेद व उदाहरण, क्रिया से क्रिया-विशेषण का निर्माण)

क्रिया के भेद

◈ **'जब सबेरा हुआ, तब हम लोग बाहर गए' वाक्य में रेखांकित उपवाक्य है—**
(A) संज्ञा उपवाक्य (B) मुख्य उपवाक्य
(C) विशेषण उपवाक्य (D) क्रिया-विशेषण उपवाक्य
Ans.–[D] [Grade 2nd • 13.07.2026]

व्याख्या—'**जब सबेरा हुआ**' एक **कालवाचक क्रिया-विशेषण उपवाक्य** है। जो आश्रित उपवाक्य मुख्य उपवाक्य की क्रिया के **समय, स्थान, रीति** या **परिमाण** की विशेषता बताते हैं, वे क्रिया-विशेषण उपवाक्य कहलाते हैं।
✧ **नियम -** यदि आश्रित उपवाक्य का आरंभ **जब, जहाँ, जिधर, ज्यों, यद्यपि** आदि अव्ययों से हो, तो वह प्रायः क्रिया-विशेषण उपवाक्य होता है। **उदाहरण - जब** पानी बरसता है, **तब** मेंढक बोलते हैं।

◈ **किस विकल्प में सकर्मक क्रिया का प्रयोग हुआ है?**
(A) आप मेरे मित्र ठहरे। (B) नौकर चिट्ठी लाया।
(C) लड़का चतुर है। (D) नौकर बीमार रहा।
Ans.–[B] [Grade 2nd • 13.07.2026]

व्याख्या—'**नौकर चिट्ठी लाया**' वाक्य में '**लाया**' सकर्मक क्रिया है तथा '**चिट्ठी**' कर्म है।
✧ **नियम**—जिस क्रिया के व्यापार का फल कर्ता पर न पड़कर **कर्म** पर पड़ता है, वह **सकर्मक क्रिया** कहलाती है। वाक्य में क्रिया के साथ '**क्या**' या '**किसको**' लगाकर प्रश्न करने पर यदि स्पष्ट उत्तर प्राप्त होता है, तो क्रिया सकर्मक होती है।

◈ **'घास हरी होती है।' इस वाक्य में 'होती है' क्या है?**
(A) संज्ञा (B) विशेषण (C) क्रिया (D) सर्वनाम
Ans.–[C] [Platoon Commander-I • 22-11-2025]

व्याख्या—'घास हरी होती है।' इस वाक्य में प्रयुक्त '**होती है**' एक **क्रिया** है। वाक्य में जिस शब्द या शब्द-समूह के द्वारा किसी कार्य के होने, करने या किसी स्थिति/अवस्था का बोध होता है, उसे क्रिया कहते हैं।

◈ **सूची-I के साथ सूची-II का मिलान कीजिए।**

सूची-I (वाक्य)	सूची-II (क्रिया भेद)
(a) शिक्षक विद्यार्थी से पुस्तक पढ़वाते हैं	(i) पूर्वकालिक
(b) सुकन्या पढ़कर सोती है	(ii) सकर्मक
(c) राजू ने मीना को पुस्तक दी	(iii) अकर्मक
(d) वह जाता है	(iv) प्रेरणार्थक

नीचे दिए गए विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए—
(A) (a)-(i), (b)-(ii), (c)-(iii), (d)-(iv)
(B) (a)-(iii), (b)-(iv), (c)-(i), (d)-(ii)
(C) (a)-(ii), (b)-(iii), (c)-(iv), (d)-(i)
(D) (a)-(iv), (b)-(i), (c)-(ii), (d)-(iii)
Ans.–[D] [LDC • Paper-2nd • 11-08-2024]

व्याख्या—वाक्यों में क्रिया भेदों का सही मिलान इस प्रकार है—
'**शिक्षक विद्यार्थी से पुस्तक पढ़वाते हैं**' जब कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी और से करवाता है, तो वह '**प्रेरणार्थक क्रिया**' होती है।
'**सुकन्या पढ़कर सोती है**'।
एक क्रिया समाप्त कर दूसरी क्रिया करने पर पहली क्रिया '**पूर्वकालिक क्रिया**' कहलाती है।
'**राजू ने मीना को पुस्तक दी**' यहाँ '**देना**' क्रिया के साथ दो कर्म '**मीना**' और '**पुस्तक**' हैं। अतः यह सकर्मक (द्विकर्मक) क्रिया है।
'**वह जाता है**' यहाँ क्रिया का कोई कर्म नहीं है।

◈ **असंगत विकल्प का चयन कीजिए—**
(A) उसने सेब खाया—सकर्मक क्रिया
(B) पुलिस ने चोर पकड़वाया—प्रेरणार्थक क्रिया
(C) माता जी प्रतिदिन बाग में जाते हैं—रंजक क्रिया
(D) लड़के मैदान में दौड़ रहे हैं—अकर्मक क्रिया
Ans.–[C] [CET Gr. Level 7.01.2023]

व्याख्या—उपरोक्त में से असंगत विकल्प (C) है—
माताजी प्रतिदिन बाग में जाते हैं।
यह उदाहरण रंजक क्रिया का नहीं है।

◈ **निम्न में से किस वाक्य में सजातीय क्रिया का प्रयोग हुआ है?**
(A) सूखे पत्ते हवा में उड़ रहे हैं।
(B) टहलना स्वास्थ्य के लिए अच्छा है।
(C) मातृभूमि के लिए मरना श्रेष्ठ है।
(D) पुलिस ने चोर को बड़ी मार मारी।
Ans.–[D] [CET Gr. Level 7.01.2023]

व्याख्या—उपरोक्त में से ''**सजातीय क्रिया**'' का प्रयोग विकल्प (D) में हुआ है।
पुलिस ने चोर को बड़ी मार मारी।
✧ **सजातीय क्रिया**—कुछ अकर्मक एवं कुछ सकर्मक क्रियाओं के साथ उनके धातु की बनी हुई भाववाचक संज्ञा के प्रयोग को सजातीय क्रिया कहते हैं।

अथवा

वे क्रियाएँ जहाँ पर क्रिया एवं कर्म दोनों एक ही धातु से बनकर साथ में प्रयुक्त होते हैं। जैसे— (1) वे अनोखी बोली बोलते हैं।
(2) लड़की अच्छी चाल चलती है।

13 अव्यय (अविकारी शब्द)

(क्रिया विशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक अव्यय एवं निपात)

अव्यय के भेद (क्रिया विशेषण अव्यय)

❖ **जिन अव्यय शब्दों का प्रयोग दो ऐसे वाक्यों या उपवाक्यों को जोड़ने के लिए किया जाता है, उन्हें क्या कहा जाता है?**

(A) परिमाणवाचक (B) संयोजक
(C) विरोधवाचक (D) विकल्पवाचक

Ans.–[C]

व्याख्या—**व्याकरण नियम**—हिंदी व्याकरण में समानाधिकरण समुच्चयबोधक अव्ययों का वह प्रकार, जो दो स्वतंत्र लेकिन परस्पर विरोधी या विषम अर्थ वाले वाक्यों, उपवाक्यों को आपस में मिलाता है, 'विरोधवाचक' कहलाता है।
उदाहरण—'लेकिन', 'किंतु', 'परंतु', 'मगर', 'बल्कि' आदि।

❖ **किस विकल्प में सभी शब्द यौगिक क्रियाविशेषण हैं?**

(A) रात तक, अचानक (B) दिनभर, दूर
(C) पहले, ठीक (D) प्रेमपूर्वक, इसलिये

Ans.–[D] [Grade 1st • Hindi • 31.05.2026]

व्याख्या— **यौगिक क्रियाविशेषण का स्पष्टीकरण**
- **यौगिक क्रियाविशेषण** – वे क्रियाविशेषण जो किसी मूल शब्द **(संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण)** में **प्रत्यय लगाकर या अन्य शब्दों के योग से** बनते हैं। यौगिक क्रियाविशेषण कहलाते हैं।
- **प्रेमपूर्वक** – यह **'प्रेम'** (संज्ञा) + **'पूर्वक'** (प्रत्यय) के योग से बना है।
- **इसलिये** – यह **'इस'** (सर्वनाम) + 'लिये' के योग से बना है।
- अन्य विकल्पों में **'अचानक'**, **'दूर'**, **'ठीक'** आदि शब्द **मूल क्रियाविशेषण** हैं।

❖ **परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण है—**

(A) शायद (B) इसलिए (C) सर्वथा (D) एकाएक

Ans.–[C] [PSI • 06.04.2026 (Morning Shift)]

व्याख्या—**परिमाणवाचक क्रिया–विशेषण** वे अविकारी शब्द हैं जो क्रिया की **मात्रा, परिमाण या अधिकता–न्यूनता** का बोध कराते हैं। इसकी पहचान **'कितना'** का प्रश्न करने पर होती है?
- **'सर्वथा'** का अर्थ है 'पूरी तरह से' या 'बिल्कुल' (जैसे- ''यह सर्वथा अनुचित है'')। यह मात्रा या स्तर बता रहा है, अतः यह **परिमाणवाचक** है।
- 'शायद' और 'एकाएक' (अचानक) क्रिया के होने का तरीका बताते हैं, इसलिए ये **रीतिवाचक क्रिया–विशेषण** हैं।

❖ **'वह <u>आजकल</u> पढ़ रहा है' वाक्य में रेखांकित पद क्रिया-विशेषण के किस भेद का उदाहरण है?**

(A) कालवाचक (B) स्थानवाचक
(C) रीतिवाचक (D) परिमाणवाचक

Ans.–[A] [PSI • 05.04.2026 (Morning Shift)]

व्याख्या—इस वाक्य में **'आजकल'** शब्द क्रिया-विशेषण है। जो शब्द क्रिया के होने के **समय (काल)** का बोध कराते हैं, वे **कालवाचक क्रिया–विशेषण** कहलाते हैं।
कालवाचक शब्दों के अन्य उदाहरण—आज, कल, परसों, अभी, तुरंत, सदा।

❖ **निम्नलिखित में से स्थितिवाचक अव्यय का उदाहरण है—**

(A) पहले (B) यहाँ (C) इधर (D) ऊपर

Ans.–[D] [REET • Hindi (L-2) • 19.01.2026]

व्याख्या—**ऊपर** अव्यय के अंतर्गत **स्थानवाचक क्रियाविशेषण** के दो मुख्य उपभेद होते हैं – **स्थितिवाचक** और **दिशावाचक**। **स्थितिवाचक अव्यय** वे अविकारी शब्द हैं जो किसी कार्य या वस्तु के होने की स्थिर **अवस्था, स्थिति या स्थान** का बोध कराते हैं। (जैसे—**ऊपर, नीचे, आगे, पीछे, बाहर, भीतर** आदि)। यहाँ **'ऊपर'** शब्द किसी वस्तु या कार्य की निश्चित स्थिति को दर्शाता है। (**उदाहरण**—बंदर छत के **ऊपर** बैठा है)। अतः **'ऊपर'** एक **स्थितिवाचक अव्यय** का उदाहरण है।

❖ **जिस शब्द के रूप में लिंग, वचन, पुरुष, कारक आदि के कारण कोई विकार उत्पन्न नहीं होता, उसे क्या कहते हैं?**

(A) संधि (B) अव्यय (C) समास (D) वाच्य

Ans.–[B] [Platoon Commander-I • 22-11-2025]

व्याख्या—हिंदी व्याकरण में ऐसे शब्द जिनके रूप में **लिंग, वचन, पुरुष, कारक, और काल** आदि के कारण कोई परिवर्तन या **विकार उत्पन्न नहीं होता**, उन्हें **अव्यय** या अविकारी शब्द कहा जाता है।

❖ **'अव्यय' के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है?**

(A) कालवाचक अव्यय में समय का बोध होता है।
(B) यहाँ, वहाँ, कहाँ, जहाँ- स्थानवाचक अव्यय का बोधक है।
(C) विस्मयादिबोधक अव्यय के बाद विस्मयसूचक चिह्न (!) का प्रयोग किया जाता है।
(D) अव्यय प्रायः लिंग, वचन, परसर्ग आदि से प्रभावित रहते हैं।

Ans.–[D] [Platoon Commander-I • 22-11-2025]

व्याख्या—सही उत्तर विकल्प **(D)** है। **अव्यय (अविकारी शब्द)** की मूल विशेषता है कि वे **लिंग, वचन, और परसर्ग** के कारण कभी भी **परिवर्तित नहीं होते** हैं।

❖ **'आशुतोष को मैंने नहीं देखा।' वाक्य में प्रयुक्त अव्यय की पहचान कीजिए—**

14 लिंग

लिंग के भेद

❖ किस विकल्प में स्त्रीलिंग शब्द नहीं है?

(A) दमन, आज्ञा (B) कृत्य, क्षण

(C) प्रहार, प्रार्थना (D) चंद्र, घोषणा

Ans.–[B] [Grade 1st • Hindi • 31.05.2026]

व्याख्या—
- ✧ **कृत्य** – यह पुल्लिंग है। (**वाक्य प्रयोग** – यह निंदनीय कृत्य **किया** गया)।
- ✧ **क्षण** – यह पुल्लिंग है। (**वाक्य प्रयोग** – एक क्षण बीत **गया**)।
- ✧ **व्याकरण नियम** – लिंग की पहचान वाक्य में क्रिया के रूप से की जाती है। अन्य विकल्पों में प्रयुक्त शब्द जैसे **आज्ञा (दी गई)**, **प्रार्थना (की गई)** और **घोषणा (हुई)** स्त्रीलिंग शब्द हैं। प्रायः 'आ' प्रत्यय से अंत होने वाली संस्कृत की भाववाचक संज्ञाएँ स्त्रीलिंग होती हैं।

❖ **लिंग परिवर्तन की दृष्टि से सही युग्मों का चयन कीजिए**—

a. जेठ - जेठानी b. तोता - तोते

c. शिष्य - शिष्या d. मच्छर - मच्छरानी

e. विधुर - विधवा

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए—

(A) केवल a, c, और e (B) केवल b, d, और e

(C) केवल b, c, और d (D) केवल a, b, और d

Ans.–[A] [Platoon Commander-I • 22-11-2025]

व्याख्या—विकल्पों में केवल **जेठ - जेठानी, शिष्य - शिष्या, और विधुर - विधवा** ही शुद्ध है। **'जेठ'** का स्त्रीलिंग **'जेठानी'**, 'शिष्य' का 'शिष्या' और 'विधुर' का सही स्त्रीलिंग 'विधवा' होता है।

❖ **पुल्लिंग - स्त्रीलिंग का कौन-सा युग्म 'अशुद्ध' है?**

(A) गूँगा – गूँगी (B) खाला – खाली

(C) काला – काली (D) पुत्र – पुत्री

Ans.–[B] [Platoon Commander-I • 22-11-2025]

व्याख्या—**'खाला'** एक अरबी / फारसी मूल का स्त्रीलिंग शब्द है, जिसका अर्थ **'मौसी'** होता है। इसका सही पुल्लिंग रूप **'खालू'** (मौसा) होता है।

❖ **किस विकल्प में पुल्लिंग-स्त्रीलिंग युग्म गलत है ?**

(A) कवि – कवयित्री (B) बाघ – बाघिन

(C) नेता – नेत्री (D) मेंढक – मेढ़ा

Ans.–[D] [SI 14.09.2021]

व्याख्या—विकल्प (D) में पुल्लिंग–स्त्रीलिंग युग्म गलत है। **'मेंढक'** स्त्रीलिंग का रूप **'मेंढकी'** होता है, न कि 'मेढ़ा'। **'मेढ़ा'** शब्द **'भेड़'** (स्त्रीलिंग) का पुल्लिंग रूप है।

पुल्लिंग

❖ **निम्नलिखित में से कौनसे समूह के सभी शब्द पुल्लिंग हैं?**

(A) सरोज, नयन, गणित (B) सोना, कपूर, मणि

(C) दही, उड़ान, अनाज (D) पीतल, भारत, चाँदी

Ans.–[A] [Grade 1st • Hindi • 31.05.2026]

व्याख्या—हिंदी व्याकरण में शब्दों के लिंग (पुल्लिंग/स्त्रीलिंग) की पहचान उनके वाक्य प्रयोग, उनके साथ लगने वाली क्रिया या विशेषण से की जाती है।

विकल्प A के सभी शब्द पुल्लिंग हैं–
- ✧ **सरोज** (कमल) – सरोज खिलता है।
- ✧ **नयन** (आँखें) – उसके नयन बड़े हैं।
- ✧ **गणित** – गणित कठिन विषय है / गणित पढ़ा जाता है।
- ✧ अन्य विकल्पों में शामिल स्त्रीलिंग शब्द निम्न हैं –
  - (B) में **मणि** स्त्रीलिंग है (मणि चमकती है)।
  - (C) में **उड़ान** स्त्रीलिंग है (लंबी उड़ान)।
  - (D) में **चाँदी** धातुओं में अपवाद स्वरूप स्त्रीलिंग है।

❖ **निम्नलिखित शब्दों में से पुल्लिंग शब्द का चयन कीजिए**—

(A) रात (B) लात (C) बड़प्पन (D) सरकार

Ans.–[C] [PSI • 06.04.2026 (Morning Shift)]

व्याख्या—व्याकरण के नियमानुसार, जिन भाववाचक संज्ञाओं के अंत में **'पन' प्रत्यय** आता है, वे प्रायः **पुल्लिंग** होते हैं।
- ✧ **उदाहरण—बचपन, लड़कपन, पागलपन, बड़प्पन।** (**वाक्य प्रयोग**—उसका बड़प्पन साफ झलकता है।)
- ✧ **अन्य विकल्प**—रात (रात हो गई), लात (लात मारी), और सरकार (सरकार बन गई) **स्त्रीलिंग** शब्द हैं।

❖ **निम्नलिखित में से कौन सा शब्द पुल्लिंग नहीं है?**

(A) सरोवर (B) रायता (C) कटहल (D) सरसों

Ans.–[D] [PSI • 05.04.2026 (Morning Shift)]

व्याख्या—**'सरसों'** शब्द पुल्लिंग नहीं है। यह **स्त्रीलिंग** है।
- ✧ **व्याकरण नियम–** हिंदी में निर्जीव या वनस्पति वाचक शब्दों का लिंग उनके वाक्य प्रयोग से पहचाना जाता है।
- ✧ **सरसों (स्त्रीलिंग)–** खेत में पीली सरसों **लहलहा रही है।**
- ✧ अन्य विकल्प पुल्लिंग हैं – सरोवर **गहरा है,** रायता **फैल गया,** कटहल **पक गया।**

❖ **बहिन का 'पुल्लिंग' शब्द होगा—**

(A) भानजा (B) बहिनों

(C) बहनोई (D) भाइयों

Ans.–[C] [REET (Level-2) • 28-02-2025]

15 वचन

वचन के भेद

❖ **निम्नलिखित में से कौनसा शब्द बहुधा बहुवचन में प्रयुक्त नहीं होता है?**
(A) दर्शन (B) समाचार
(C) भाग्य (D) पानी
Ans.–[D] [Grade 2nd • 13.07.2026]

व्याख्या—व्याकरण के नियमानुसार **द्रव्यवाचक संज्ञाएँ** सदैव **एकवचन** में प्रयुक्त होती हैं। **पानी** एक द्रव्यवाचक संज्ञा है। इसके विपरीत **दर्शन, समाचार, भाग्य, प्राण, आँसू, लोग, हस्ताक्षर** आदि शब्द व्याकरणिक दृष्टि से नित्य **बहुवचन** में प्रयुक्त होने वाले शब्द हैं। उदाहरण - **'पानी बह रहा है' (एकवचन), 'आपके दर्शन हुए' (बहुवचन)।**

❖ **निम्नलिखित में एकवचन से बहुवचन का सही विकल्प है—**
(A) डिबिया – डिब्बे (B) गौ – गौएँ
(C) क्यारी – क्यारीं (D) विद्या – विद्यायें
Ans.–[B] [Grade 1st • Hindi • 31.05.2026]

व्याख्या—**सही विकल्प – (B) गौ – गौएँ**
✧ यह एकवचन से बहुवचन का बिल्कुल शुद्ध रूप है।
✧ **व्याकरण का नियम** – हिंदी व्याकरण के अनुसार, जब कोई **स्त्रीलिंग शब्द 'औकारांत' (जिसके अंत में 'औ' स्वर हो)** होता है, तो उसका बहुवचन बनाने के लिए शब्द के अंत में **'एँ'** जोड़ दिया जाता है।
उदाहरण – **गौ '! गौएँ**, नौ '! नौएँ।
अन्य विकल्पों की अशुद्धियाँ और उनके नियम –
(A) डिबिया – यह 'याकारांत' स्त्रीलिंग शब्द है। नियम के अनुसार अंतिम **'या'** पर केवल चंद्रबिंदु लगता है। शुद्ध रूप – **डिबियाँ।**
(C) क्यारी – यह 'ईकारांत' स्त्रीलिंग शब्द है। बहुवचन बनाते समय अंतिम मात्रा छोटी (**'इ'**) हो जाती है और **'याँ'** जुड़ता है। शुद्ध रूप: **क्यारियाँ।**
(D) विद्या – यह **'आकारांत'** स्त्रीलिंग शब्द है। इसमें **'एँ'** जुड़ता है, 'यें' नहीं। शुद्ध रूप – **विद्याएँ।**

❖ **एकवचन–बहुवचन का बेमेल विकल्प है—**
(A) वृद्ध - वृद्धजन (B) डाली - डालियाँ
(C) डिब्बा - डिबिया (D) चिड़िया - चिड़ियाँ
Ans.–[C] [PSI • 05.04.2026 (Morning Shift)]

व्याख्या—**व्याकरण नियम—'डिब्बा'** एक पुल्लिंग शब्द है जिसका सही **बहुवचन 'डिब्बे'** होता है। **'डिबिया'** इसका बहुवचन नहीं है।

❖ **बहुधा एकवचन में प्रयुक्त होने वाला शब्द है—**
(A) तेल (B) आप (C) सब (D) अनेक
Ans.–[A] [PSI • 06.04.2026 (Morning Shift)]

व्याख्या—**'तेल'** शब्द हमेशा **एकवचन** में प्रयुक्त होता है।
व्याकरण नियम—सभी द्रव्यवाचक संज्ञाएँ (जिन्हें नापा या तौला जाता है) सदैव एकवचन में ही प्रयुक्त होती हैं।
उदाहरण—तेल, पानी, दूध, घी, सोना, चाँदी आदि।
अन्य विकल्पों में—'आप' का प्रयोग आदर देने के लिए हमेशा बहुवचन की तरह होता है (आप कैसे हैं?), **'सब'** बहुवचन है, और **'अनेक'** शब्द स्वयं 'एक' का बहुवचन रूप है।

❖ **प्रायः बहुवचन क्रिया के साथ प्रयुक्त होने वाला संज्ञा शब्द है—**
(A) सोना (B) आकाश
(C) आँसू (D) घी
Ans.–[C] [PSI • 06.04.2026 (Morning Shift)]

व्याख्या—हिंदी व्याकरण में कुछ शब्द **सदैव बहुवचन (नित्य बहुवचन)** के रूप में प्रयुक्त होते हैं और इनके साथ क्रिया भी बहुवचन की आती है। इनमें **आँसू, प्राण, दर्शन, हस्ताक्षर, बाल, लोग, होश** आदि प्रमुख हैं।
नियम—''उसके आँसू बहने लगे।''
✧ अन्य विकल्प **(सोना, आकाश, घी)** द्रव्यवाचक और भाववाचक संज्ञाएँ हैं, जो प्रायः **एकवचन** में प्रयुक्त होती हैं।

❖ **निम्नलिखित किस शब्द का बहुवचन रूप 'अशुद्ध' है?**
(A) शाखा – शाखाएँ (B) कथा – कथाएँ
(C) आशीर्वाद – आशीर्वादों (D) वधू – वधुओं
Ans.–[C] [Platoon Commander-I • 22-11-2025]

व्याख्या—**'आशीर्वाद'** शब्द एक भाववाचक संज्ञा है, जिसका सामान्यतः कोई बहुवचन रूप नहीं बनता है। हिंदी भाषा में 'आशीर्वाद' शब्द का प्रयोग एकवचन और बहुवचन दोनों स्थितियों में एक समान ही होता है।

❖ **'वचन' के संबंध में कौन-सा तथ्य सही नहीं है? (निम्न में से सबसे उपयुक्त विकल्प चुनें)**
(A) संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के जिस रूप से संख्या का बोध हो उसे वचन कहते हैं।
(B) हिंदी में वचन के दो प्रकार हैं - एकवचन और बहुवचन।
(C) वचन का मुख्य कार्य शब्दों के लिंग भेद का बोध का कराना है।
(D) शब्द के जिस रूप से एक पदार्थ या व्यक्ति का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं।
Ans.–[C] [Platoon Commander-I • 22-11-2025]

16 काल

(वर्तमानकाल, भूतकाल, भविष्यत्काल के भेद व उदाहरण)

काल के भेद (वर्तमानकाल)

◈ **सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए—**

सूची I (भेद)	**सूची II (उदाहरण)**
a. सामान्य वर्तमान	I. वह जा रहा है।
b. तात्कालिक वर्तमान	II. वह देखता है।
c. संदिग्ध वर्तमान	III. वह लौटा हो।
d. संभाव्य वर्तमान	IV. वह पढ़ता होगा।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें—

(A) a-II, b-I, c-IV, d-III (B) a-I, b-III, c-II, d-IV
(C) a-II, b-I, c-III, d-IV (D) a-III, b-II, c-IV, d-I

Ans.–[A] [REET • Hindi (L-2) • 19.01.2026]

व्याख्या—**सामान्य वर्तमान काल** (कार्य के सामान्य रूप से होने का बोध) का उदाहरण **''वह देखता है''** है। **तात्कालिक वर्तमान काल** (क्रिया वर्तमान में चल रही है) का उदाहरण **''वह जा रहा है''** है। **संदिग्ध वर्तमान काल** (वर्तमान में क्रिया के होने में संदेह) का उदाहरण **''वह पढ़ता होगा''** है। **संभाव्य वर्तमान काल** (वर्तमान में काम पूरा होने की संभावना या आशा) का सही उदाहरण **''वह लौटा हो''** है।

सामान्य वर्तमान काल

◈ **नीचे दो कथन दिए गए हैं—**

कथन I: वर्तमान काल के पाँच भेद होते हैं।

कथन II: 'वह पढ़ता होगा।' वाक्य पूर्ण वर्तमान का उदाहरण है।

उपर्युक्त कथन के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए—

(A) कथन I और II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

Ans.–[C] [Platoon Commander-I • 22-11-2025]

व्याख्या—हिंदी व्याकरण में **वर्तमान काल** के मुख्यतः **पाँच भेद** माने जाते हैं – **सामान्य वर्तमान, अपूर्ण/तात्कालिक वर्तमान, पूर्ण वर्तमान, संदिग्ध वर्तमान, और संभाव्य वर्तमान।**
''वह पढ़ता होगा'' वाक्य में क्रिया के होने में संदेह या संभावना व्यक्त हो रही है। यह **संदिग्ध वर्तमान** का उदाहरण है।

◈ **''प्रज्ञा ने पाठ पढ़ा होगा।'' वाक्य किस काल से संबंधित है?**

(A) पूर्ण भूतकाल (B) संदिग्ध भूतकाल
(C) सामान्य भूतकाल (D) आसन्न भूतकाल

Ans.–[B] [Fourth Class • (Evening) • 21.09.2025]

व्याख्या—**सही विकल्प—(B) संदिग्ध भूतकाल**
जिस क्रिया से भूतकाल में किसी कार्य के पूरा होने में संदेह या संभावना प्रकट हो, उसे **संदिग्ध भूतकाल** कहते हैं।
उदाहरण—प्रज्ञा ने पाठ **पढ़ा होगा**। (कार्य भूतकाल में हुआ या नहीं, इसका पक्का पता नहीं है)।

◈ **निम्नलिखित में से कौन-सा वाक्य 'संदिग्ध वर्तमान काल' का उदाहरण है?**

(A) चौकीदार पहरा दे रहा है।
(B) मैं यहाँ सुबह से बैठा हूँ।
(C) पुलिस बदमाश का पीछा कर रही है।
(D) सीतामढ़ी में बाढ़ आ रही होगी।

Ans.–[D] [Fourth Class • (Evening) • 19.09.2025]

व्याख्या—क्रिया के जिस रूप से वर्तमान समय में काम के होने में संदेह पाया जाए, उसे **'संदिग्ध वर्तमान काल'** कहते हैं।
✧ **पहचान/नियम**—इसके वाक्यों के अंत में **'ता होगा/ती होगी'** या **'रहा होगा / रही होगी'** लगा होता है।
दिए गए विकल्पों में **(D) 'सीतामढ़ी में बाढ़ आ रही होगी।''**
(अन्य विकल्प—A और C **'अपूर्ण वर्तमान/तात्कालिक वर्तमान काल'** के उदाहरण हैं, और B **'पूर्ण वर्तमान/आसन्न भूतकाल'** के उदाहरण है।

◈ **'माँ खाना पका चुकी है।' वाक्य किस काल को दर्शाता है?**

(A) सामान्य वर्तमान (B) अपूर्ण वर्तमान
(C) पूर्ण वर्तमान (D) संदिग्ध वर्तमान

Ans.–[C] [PTET • 15.06.2025]

व्याख्या—**'माँ खाना पका चुकी है'** वाक्य **'पूर्ण वर्तमान काल'** को दर्शाता है। **'चुकी है'** से पता चलता है कि कार्य पूरा हो गया है और उसका परिणाम वर्तमान में दिख रहा है। पूर्ण वर्तमान काल में कार्य भूतकाल में समाप्त हो जाता है लेकिन उसका प्रभाव वर्तमान में रहता है। **'चुकना'** पूर्णता का बोधक है। पूर्ण वर्तमान में कार्य पूरा हो चुका होता है और उसका फल वर्तमान में दिखता है। जैसे–
(1) वह आ चुका है।
(2) मैंने काम कर लिया है।

◈ **''उपभोक्तावादी संस्कृति सामंती संस्कृति का रूप नहीं है।'' इस वाक्य में कौन-सा काल है ?**

(A) सामान्य वर्तमान काल (B) सामान्य भूतकाल
(C) संदिग्ध भूतकाल (D) भविष्यत् काल

Ans.–[A] [REET (Level-2) • 27-02-2025]

17 तत्सम, तद्भव, देशज व विदेशज शब्द

तत्सम, तद्भव, देशज व विदेशज शब्दों के भेद

◈ **किस विकल्प के सभी शब्द तद्भव हैं?**

(A) तिनका, दंश (B) तालाब, ताप
(C) डाह, जाँघ (D) जौ, स्थान

Ans.–[C] [Grade 2nd • 13.07.2026]

व्याख्या—**डाह** और **जाँघ** दोनों **तद्भव** शब्द हैं। **डाह** का तत्सम रूप **दाह** होता है और **जाँघ** का तत्सम रूप **जंघा** होता है। **व्याकरण नियम -** जिन शब्दों पर अनुनासिक अर्थात् **चंद्रबिंदु (ँ)** का प्रयोग होता है, वे शब्द प्रायः **तद्भव** होते हैं। उदाहरण—जाँघ, चाँद, गाँव, आँख। **अन्य शब्दों का विश्लेषण -** दंश—तत्सम (तद्भव—डंक) ताप—तत्सम (तद्भव—ताव) स्थान—तत्सम (तद्भव—थान) तिनका, तालाब, जौ—तद्भव शब्द हैं।

◈ **निम्नलिखित में से तत्सम शब्द नहीं है—**

(A) पंख (B) पंजर
(C) पंचक (D) पंक्ति

Ans.–[A] [Grade 2nd • 13.07.2026]

व्याख्या—**'पंख'** एक **तद्भव** शब्द है जिसका तत्सम रूप **'पक्ष'** होता है। संस्कृत के जो शब्द हिंदी में ज्यों के त्यों प्रयुक्त होते हैं उन्हें तत्सम कहते हैं। अन्य शब्द **पंजर**, **पंचक** और **पंक्ति** पूर्णतः **तत्सम** शब्द हैं। उदाहरण स्वरूप **'पंक्ति'** का तद्भव रूप 'पंगत' होता है।

◈ **निम्नलिखित में से विदेशी शब्द है—**

(A) रेशम (B) गुहार (C) दरार (D) पतंगा

Ans.–[A] [Grade 2nd • 13.07.2026]

व्याख्या—**रेशम** एक **विदेशी** शब्द है, जिसकी उत्पत्ति **फारसी** भाषा से हुई है। अन्य भाषाओं **(अरबी, फारसी, तुर्की आदि)** से हिंदी में ज्यों के त्यों या परिवर्तित रूप में ग्रहण किए गए शब्द विदेशज कहलाते हैं। **गुहार, दरार** और **पतंगा** हिंदी की अपनी प्रकृति के **(देशज/तद्भव)** शब्द हैं।

◈ **तत्सम शब्द तथा उससे निर्मित तद्भव शब्द की दृष्टि से असंगत विकल्प है—**

(A) कर्कट—केकड़ा (B) पर्पट—पापड़
(C) मधुक—महन्त (D) नकुल—नेवला

Ans.–[C] [Grade 2nd • 13.07.2026]

व्याख्या—**'मधुक'** तत्सम शब्द का तद्भव रूप **'महुआ'** होता है। **'महन्त'** तद्भव शब्द है जिसका तत्सम **'महत्'** होता है।
अन्य तत्सम-तद्भव युग्म - कर्कट (तत्सम)—**केकड़ा** (तद्भव) **पर्पट** (तत्सम)—**पापड़** (तद्भव) **नकुल** (तत्सम)—**नेवला** (तद्भव)

◈ **तत्सम एवं उससे निर्मित तद्भव शब्द की दृष्टि से असंगत विकल्प है—**

(A) पक्षी—पाँख (B) वायु—बयार
(C) कार्य—काज (D) स्वामी—साईं

Ans.–[A] [Grade 2nd • 13.07.2026]

व्याख्या—**'पक्षी'** तत्सम शब्द का तद्भव **'पंछी'** होता है। **'पाँख'** तद्भव शब्द का निर्माण **'पक्ष'** तत्सम शब्द से हुआ है।

◈ **तद्भव शब्द है—**

(A) पद्य (B) पदक (C) पथिक (D) पंथी

Ans.–[D] [Grade 1st • Hindi • 31.05.2026]

व्याख्या—
- ✧ **पंथी** एक **तद्भव शब्द** है। इसका मूल **तत्सम** रूप **'पथिन्' या 'पथिक'** होता है।
- ✧ **व्याकरण नियम** – संस्कृत के वे शब्द जो रूप बदलकर हिंदी में प्रयुक्त होते हैं। 'तद्भव' कहलाते हैं।

◈ **'विदेशी'शब्द नहीं है—**

(A) चेचक (B) खिड़की (C) तमाशा (D) देर

Ans.–[B] [Grade 1st • Hindi • 31.05.2026]

व्याख्या— 'खिड़की' विदेशी शब्द नहीं है, बल्कि यह एक **देशज शब्द** है।
- ✧ **व्याकरण नियम (शब्द विचार)** – उत्पत्ति के आधार पर शब्दों को मुख्यतः तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशी में बांटा जाता है।
- ✧ **देशज शब्द** – वे शब्द जिनकी उत्पत्ति का मूल पता नहीं होता और जो क्षेत्रीय प्रभाव के कारण हिंदी में आ गए हैं। **उदाहरण** – लोटा, पगड़ी, झोला, **खिड़की** आदि।
- ✧ **विदेशी शब्द** – जो शब्द विदेशी भाषाओं से हिंदी में आए हैं। दिए गए अन्य विकल्प विदेशी हैं: **चेचक** (तुर्की शब्द), **तमाशा** (अरबी/फारसी शब्द) और **देर** (फारसी शब्द)।

◈ **निम्नलिखित में से योगरूढ़ शब्द का चयन कीजिए । नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें।**

(A) विद्यालय (B) दशानन (C) हल्दी (D) सावन

Ans.–[B] [LDC 05.07.2026]

व्याख्या—व्युत्पत्ति या रचना के आधार पर **योगरूढ़ शब्द** वे होते हैं जो दो या दो से अधिक शब्दों के योग से बनते हैं, परन्तु अपना सामान्य अर्थ छोड़कर किसी **विशेष अर्थ (तीसरे अर्थ)** के लिए रूढ़ (प्रसिद्ध) हो जाते हैं। ये बहुव्रीहि समास के समान होते हैं।
उदाहरण: दशानन (दश + आनन) का शाब्दिक अर्थ हैं दस मुख वाला, परन्तु यह केवल **'रावण'** के विशेष अर्थ में रूढ़ हो गया है।

18 शब्द-युग्म (श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द)

❖ **'निर्जर - निर्झर' समश्रुत भिन्नार्थक शब्दों का क्रमशः सही अर्थ है-**
(A) लहर - झरना (B) देवता - झरना
(C) झरना - देवता (D) देवता - पृथ्वी
Ans.–[B] [Grade 1st • 10-06-2026]

व्याख्या—
✧ **निर्जर** शब्द का अर्थ **देवता** होता है (जिसका तात्पर्य है जो कभी बूढ़ा या जीर्ण न हो)।
✧ **निर्झर** शब्द का अर्थ **झरना** होता है।
✧ समश्रुत भिन्नार्थक शब्द वे होते हैं जिनका **उच्चारण लगभग समान** होता है किंतु उनके **अर्थ पूर्णतः भिन्न** होते हैं।

❖ **'कड़ाई – कड़ाही' का सही अर्थ भेद किस विकल्प में है?**
(A) खेत की सफाई – एक गोल बर्तन
(B) काढ़ने का काम – सख्ती
(C) एक गोल बर्तन – काढ़ने का काम
(D) सख्ती – एक गोल बर्तन
Ans.–[D] [Grade 1st • 31-05-2026]

व्याख्या—
✧ **कड़ाई - सख्ती** या कठोरता।
✧ **कड़ाही - एक गोल बर्तन** (रसोई में खाना पकाने हेतु प्रयुक्त)।
✧ **कढ़ाई - काढ़ने का काम** (सुई-धागे से कपड़े पर बेल-बूटे बनाना)।

❖ **क्रमशः सही अर्थयुक्त शब्द-युग्म है—**
(A) परिमल = पवित्र, परिभव = वैभव
(B) कुल = वंश, कूल = ठण्डा
(C) इति = अंत, ईति = बाधा
(D) इन्द्रा = लक्ष्मी, इन्दिरा = इन्द्र की पत्नी
Ans.–[C] [Grade 1st • Hindi • 31.05.2026]

व्याख्या— यहाँ **'इति' का अर्थ 'अंत/समाप्ति'** और **'ईति' का अर्थ 'बाधा या दैवीय आपदा'** बिल्कुल सही है।
व्याकरण नियम व अन्य विकल्पों की अशुद्धियाँ –
(A) **परिमल** का अर्थ **'पवित्र'** नहीं बल्कि **'सुगंध'** होता है और **परिभव** का अर्थ **'वैभव'** नहीं बल्कि **'अपमान या पराजय'** होता है।
(B) कुल का अर्थ **'वंश'** सही है, लेकिन **कूल** का अर्थ हिंदी में **'ठण्डा'** नहीं, बल्कि **'किनारा या तट'** होता है।
(D) लक्ष्मी जी को **'इन्दिरा'** कहा जाता है और इन्द्र की पत्नी को **'इन्द्राणी या शची'** कहा जाता है।

❖ **नदी के ________ पर गाँव बसा है। विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें।**
(A) कूल (B) कुल (C) कुल्ल (D) कूली
Ans.–[A] [LDC 05.07.2026]

व्याख्या—हिन्दी व्याकरण में **'कूल'** का अर्थ **'किनारा' या 'तट'** होता है। अतः सही वाक्य ''नदी के **कूल** पर गाँव बसा है'' होगा।

❖ **यह सम्पत्ति का एक ________ है। विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें।**
(A) अंस (B) अंश (C) अँश (D) आंत
Ans.–[B] [LDC 05.07.2026]

व्याख्या—**'अंश'** का अर्थ **'हिस्सा' या 'भाग'** होता है। अतः **विकल्प (B) अंश** सही है।

❖ **'सूची-सूजी' शब्द-युग्म का क्रमशः सही अर्थ है—**
(A) तालिका - गेहूँ का दरदरा आटा
(B) विवरण - पवित्र
(C) प्रपत्र - गेहूँ का दरदरा आटा
(D) पवित्र - चिन्ता
Ans.–[A] [PSI • 06.04.2026 (Morning Shift)]

व्याख्या—हिंदी शब्द-युग्मों के नियमानुसार, **'सूची'** का अर्थ **'तालिका'** होता है और **'सूजी'** का अर्थ **'गेहूँ का दरदरा आटा'** होता है।

❖ **निम्नलिखित में से किस शब्द-युग्म का क्रमशः सही अर्थ है?**
(A) परुष - पुरुष = आदमी - कोमल
(B) दिवा - दीवा = दीया - दिवस
(C) तरंग - तुरंग = हिरण - लहर
(D) अपेक्षा - उपेक्षा = चाह - परित्याग
Ans.–[D] [PSI • 06.04.2026 (Morning Shift)]

व्याख्या—**'अपेक्षा'** का अर्थ **'चाह/उम्मीद/आशा'** होता है और **'उपेक्षा'** का अर्थ **'परित्याग/तिरस्कार/ध्यान न देना'** होता है।
अन्य विकल्पों का स्पष्टीकरण निम्न प्रकार है—
(A) परुष (कठोर) – पुरुष (आदमी)
(B) दिवा (दिन) – दीवा (दीया)
(C) तरंग (लहर) – तुरंग (घोड़ा)

❖ **किस समश्रुत शब्द-युग्म का क्रमशः अर्थ सुमेलित नहीं है?**
(A) अंत - अंत्य = समाप्ति - अंतिम
(B) कांति - क्लाकृति = दीप्ति - थकावट
(C) टुक - टूक = टुकड़ा - थोड़ा
(D) तक्र - तर्क = छाछ - दलील
Ans.–[C] [PSI • 06.04.2026 (Morning Shift)]

19 अनेकार्थक शब्द

◈ **'पतंग'शब्द का अर्थ नहीं है—**

(A) चिड़िया (B) धनुष (C) सूर्य (D) शलभ

Ans.–[B] [Grade 1st • Hindi • 31.05.2026]

व्याख्या—हिंदी व्याकरण में **'पतंग'** एक **अनेकार्थी शब्द** है।
- ✧ **'पतंग' के सही अर्थ** – सूर्य, पक्षी/चिड़िया, फतिंगा/शलभ, और कागज़ की पतंग।
- ✧ **'धनुष'** पतंग का अर्थ नहीं है। धनुष के पर्यायवाची शब्द **चाप, कोदंड, कमान, शरासन** आदि होते हैं।

◈ **निम्न में से 'कल' शब्द के क्या अर्थ हैं?**

a. बीता हुआ दिन b. आने वाला दिन
c. मशीन का पुर्जा d. असम्भाव्य

नीचे दिए गए विकल्पों में से उचित उत्तर चुनिए।

(A) a, b, c और d (B) a, b और c
(C) a, b और d (D) b, c और d

Ans.–[B] [LDC 05.07.2026]

व्याख्या—हिंदी व्याकरण में **'कल'** एक **अनेकार्थी शब्द** है (अर्थात् 'कल' के मुख्य अर्थ होते हैं: **बीता हुआ दिन, आने वाला दिन** और **मशीन या उसका पुर्जा।**

उदाहरण—
1. वह **कल** आएगा (आने वाला दिन)
2. वह **कल** चला गया (बीता हुआ दिन)
3. इस कारखाने में मशीनों के **कल**-पुर्जे बनते हैं (मशीन का पुर्जा)

◈ **'हार' शब्द के अनेकार्थी क्या हैं?**

a. पराजय b. गले की माला
c. पराभव d. असफलता

नीचे दिए गए विकल्पों में से उचित उत्तर चुनिए।

(A) a, b, c और d (B) a, b और c
(C) a, b और d (D) b, c और d

Ans.–[A] [LDC 05.07.2026]

व्याख्या—**'हार'** के अर्थ **पराजय, गले की माला, पराभव (हार/तिरस्कार)** और **असफलता** सभी होते हैं।
उदाहरण—युद्ध में शत्रु की **हार** (पराजय/पराभव/असफलता) हुई / उसने मोतियों का **हार** (माला) पहना)

◈ **'वर' शब्द के अनेकार्थी क्या हैं ?**

a. दूल्हा b. वरदान c. श्रेष्ठ d. उत्तम

नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें—

(A) a, b, c और d (B) a, b और d
(C) a, b और c (D) b, c और d

Ans.–[A] [LDC 05.07.2026]

व्याख्या—**'वर'** का प्रयोग विभिन्न संदर्भों में **दूल्हा, वरदान, श्रेष्ठ** और **उत्तम** के अर्थ में किया जाता है।
उदाहरण— शिव जी ने उसे **वर** (वरदान) दिया / वह अपनी कक्षा में **वर** (श्रेष्ठ/उत्तम) है / विवाह के लिए **वर** (दूल्हा) आ गया)

◈ **'फल' शब्द के क्या अर्थ हैं?**

a. पेड़ का फल b. परिणाम
c. लाभ d. धन

नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें:

(A) a, c और d (B) a, b और d
(C) a, b और c (D) a, b, c और d

Ans.–[C] [LDC 05.07.2026]

व्याख्या—**अनेकार्थी शब्दों** के अंतर्गत **'फल'** का अर्थ **पेड़ का फल** (खाने योग्य वस्तु), किसी कार्य का **परिणाम** (नतीजा) और **लाभ** होता है।
उदाहरण—अच्छे कर्मों का **फल** (परिणाम/लाभ) हमेशा अच्छा होता है।

◈ **'कुल' शब्द के क्या अर्थ हैं ?**

a. परिवार b. जाति
c. नदी d. समस्त

नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें:

(A) a, b और d (B) a, b, c और d
(C) b, c और d (D) a, b और c

Ans.–[A] [LDC 05.07.2026]

व्याख्या—**'कुल'** एक **अनेकार्थी शब्द** है जिसका अर्थ **परिवार, जाति (वंश)** और **समस्त (कुल योग/सब)** होता है।
उदाहरण – मेरे पास **कुल** (समस्त) दस रुपये हैं / राम का जन्म उच्च **कुल** (परिवार/जाति) में हुआ है)

◈ **इनमें से 'अज' के अर्थ को द्योतित करते हैं?**

a. सर्प b. सूर्य c. बकरा d. अग्नि
e. दशरथ के पिता

नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें—

(A) c और e (B) a और b
(C) b और d (D) d और e

Ans.–[A] [REET • Hindi (L-2) • 19.01.2026]

व्याख्या—संस्कृत मूल के **अनेकार्थी शब्द 'अज'** का शाब्दिक अर्थ **'जिसका जन्म न हुआ हो'** होता है। इसके प्रमुख अर्थ **बकरा** (जिसे अजन्मा माना गया है), ब्रह्मा, शिव और **दशरथ के पिता** (रघुवंशी राजा अज) हैं।

20 समानार्थक शब्द

◈ **हमें बड़ों का ______ करना चाहिए। विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें।**
(A) सद्भाव (B) माण (C) सम्मान (D) आदरभाव
Ans.–[C] **[LDC 05.07.2026]**

व्याख्या— बड़ों के प्रति आदर प्रकट करने के लिए 'सम्मान' शब्द का प्रयोग किया जाता है। **सम्मान** का अर्थ **आदर** या **इज्जत** होता है। **उदाहरण** – हमें अपने गुरुजनों का हमेशा **सम्मान** करना चाहिए।

◈ **रिक्त स्थान के लिए उपयुक्त शब्द का चयन कीजिए : आनंद, आह्लाद से उसी प्रकार संबद्ध है, जिस प्रकार 'इच्छा' ...... से संबद्ध है।**
(A) सहकार (B) हर्ष (C) आकांक्षा (D) अनंत
Ans.–[C] **[Platoon Commander-I • 22-11-2025]**

व्याख्या—**'आनंद'** और **'आल्हाद'** एक-दूसरे के **समानार्थी** हैं।

◈ **'विपरीत' शब्द के लिए प्रयुक्त होने वाला समानार्थी शब्द है—**
(A) प्रोम (B) विलोम (C) अनुलोम (D) लोम
Ans.–[B] **[LDC • Paper-2nd • 11-08-2024]**

व्याख्या—**'विपरीत'** शब्द का अर्थ होता है **'उल्टा'**। दिए गए विकल्पों में से **'विलोम'** शब्द का भी यही अर्थ होता है। हम अक्सर **'विपरीतार्थक शब्द'** या **'विलोम शब्द'** का प्रयोग एक ही अर्थ में करते हैं। **'अनुलोम'** इसका विलोम है।

◈ **निम्नलिखित में से 'तासीर' शब्द का समानार्थक शब्द है—**
(A) ताबीज (B) तिजोरी (C) प्रभाव (D) तीक्ष्ण
Ans.–[C] **[PTET Pre B.Ed. 9.06.2024)]**

व्याख्या—उपरोक्त में से **'तासीर'** का समानार्थक **'प्रभाव'** है।

◈ **इनमें 'पूजा' शब्द का समानार्थी शब्द नहीं है—**
(A) अर्चना (B) आराधना (C) विकास (D) वंदना
Ans.–[C] **[LDC 16.09.2018]**

व्याख्या—उपरोक्त में से **'पूजा'** शब्द का समानार्थक 'विकास' शब्द नहीं है। अन्य सभी **'पूजा'** शब्द के समानार्थक हैं।
'पूजा' शब्द के अन्य समानार्थक हैं—उपासना, प्रार्थना।

◈ **निम्नलिखित में से 'अमृत' का समानार्थक शब्द है—**
(A) नीर (B) सुधा (C) क्षीर (D) पयोधर
Ans.–[B] **[LDC 19.08.2018]**

व्याख्या—**'अमृत'** का समानार्थक **'सुधा'** है।
'अमृत' के अन्य समानार्थक है—सुधा, सोम, पीयूष, सोम, जीवनोदक।

◈ **इनमें एक शब्द ईश्वर का समानार्थी है—**
(A) वाण (B) भगवान (C) कछार (D) अंश
Ans.–[B] **[LDC 12.08.2018]**

व्याख्या—उपरोक्त में से **'ईश्वर'** का समानार्थी है—**'भगवान'**।
'ईश्वर' के अन्य समानार्थी हैं—परमात्मा, प्रभु, ईश, जगदीश, परमेश्वर, विधाता, जगदीश्वर, परमपिता।

◈ **'निपट' शब्द का समानार्थी नहीं है—**
(A) निपटना (B) सरासर
(C) एकमात्र (D) बिलकुल
Ans.–[A] **[LDC 23.10.2016]**

व्याख्या—**'सरासर, एकमात्र व बिलकुल'**—ये तीनों शब्द **'निपट'** के समानार्थी हैं, लेकिन **'निपटना'** इस समूह में उपयुक्त नहीं है।

◈ **अनुरोध/आग्रह**
अनुरोध—विनयपूर्वक याचना है तो आग्रह का आशय है—
(A) इसकी कदापि उपेक्षा करना
(B) अधिकार-भावना से उद्भूत याचना
(C) अधिकार-भावना से सहृदय याचना करना
(D) अधिकार-भावना को स्वीकार करना
Ans.–[B]

व्याख्या—जिस प्रकार अनुरोध विनयपूर्वक याचना है उसी प्रकार आग्रह का आशय है अधिकार भावना से उद्भूत याचना करना।

◈ **प्राचीन/पुराना**
प्राचीन का आशय पुराने समय का होता है, यह शब्द काल और युग को संकेत करता है; किन्तु पुराना—
(A) नया ताज़ा एवं युवापन का विरोधी
(B) कुछ ही पुराना
(C) जो खुदाई में प्राप्त हो
(D) प्राचीनता का द्योतक है **Ans.–[A]**

व्याख्या—प्राचीन का आशय पुराने समय का होता है, यह शब्द काल और युग को संकेत करता है किन्तु पुराना का अर्थ है नया ताजा एवं युवापन का विरोधी।

◈. **अनुपम/अद्वितीय**
अनुपम का आशय है कि जिसकी उपमा किसी अन्य से न दी जा सके, वहीं अद्वितीय का आशय है—
(A) पहला और दूसरा एक सदृश
(B) पहले क समान दूसरा न हो
(C) दूसरे के समान पहला
(D) जिसके समान दूसरा न हो
Ans.–[D]

21 वाक्यांश के लिए एक शब्द

❖ **वाक्यांश के लिए एक शब्द की दृष्टि से असंगत विकल्प है—**
(A) वर्तमान समय से संबंध रखने वाला—सामयिक
(B) जो तर्क या प्रमाण से न सिद्ध हो सके—अप्रमेय
(C) जो अपनी इच्छा पर हो—ऐच्छिक
(D) खाने की इच्छा—बुभुक्षु
Ans.–[D] [Grade 2nd • 13.07.2026]

व्याख्या—**'खाने की इच्छा'** वाक्यांश के लिए एक उचित शब्द **बुभुक्षा** होता है। **बुभुक्षु** शब्द का अर्थ **'खाने का इच्छुक' (व्यक्ति)** होता है।
अन्य शब्दार्थ -
✧ **सामयिक -** वर्तमान समय से संबंध रखने वाला।
✧ **अप्रमेय -** जो तर्क या प्रमाण से न सिद्ध हो सके।
✧ **ऐच्छिक -** जो अपनी इच्छा पर हो।

❖ **'वाक्यांश के लिए एक शब्द'की दृष्टि से कौनसा विकल्प गलत है?**
(A) जहाँ पहुँचना कठिन हो – दुर्गम
(B) किए गए उपकार को मानने वाला – कृतज्ञ
(C) जिसे करना कठिन हो – दुर्बोध
(D) जहाँ पहुँचा न जा सके – अगम्य
Ans.–[C] [Grade 1st • Hindi • 31.05.2026]

व्याख्या—**गलत विकल्प का सुधार – ''जिसे करना कठिन हो''** वाक्यांश के लिए सही शब्द **'दुष्कर'** (दुः + कर) होता है, न कि 'दुबोध'।
व्याकरणिक नियम एवं उदाहरण –
✧ **दुर्बोध** – इसका अर्थ है **''जिसे समझना या जानना कठिन हो''** (दुर् + बोध)। उदाहरण – **यह विषय बहुत दुबोध है।**
✧ **दुष्कर** – इसका अर्थ है **''जिसे करना कठिन हो''**। उदाहरण – **पहाड़ की चोटी पर चढ़ना एक दुष्कर कार्य है।**
अन्य सभी विकल्प व्याकरणिक दृष्टि से पूर्णतः सही हैं:
✧ जहाँ पहुँचना कठिन हो = **दुर्गम**
✧ किए गए उपकार को मानने वाला = **कृतज्ञ** (उपकार न मानने वाला = **कृतघ्न**)
✧ जहाँ पहुँचा न जा सके = **अगम्य**

❖ **''किसी प्रश्न का तत्काल उत्तर दे सकने वाली बुद्धि है जिसकी'' वाक्यांश के लिए एक शब्द क्या होगा? सबसे उपयुक्त विकल्प चुनें।**
(A) प्रत्युत्पन्नमति (B) स्वार्थबुद्धि
(C) उदारमति (D) उत्कृष्टमति
Ans.–[A] [LDC 05.07.2026]

व्याख्या—**व्याकरण का नियम**—भाषा को प्रभावशाली बनाने के लिए अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग किया जाता है। **प्रत्युत्पन्नमति** शब्द **प्रति + उत्पन्न + मति** (बुद्धि) से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है वह व्यक्ति जिसकी **बुद्धि इतनी कुशाग्र हो** कि वह किसी बात या प्रश्न का **तत्काल (तुरंत) और उचित उत्तर** सोच ले।
उदाहरण—तेनालीराम अपनी **प्रत्युत्पन्नमति** के लिए पूरे राज्य में प्रसिद्ध थे।

❖ **''जिसको देश से निकाल दिया गया हो'' वाक्यांश के लिए एक शब्द क्या है? सबसे उपयुक्त विकल्प चुनें।**
(A) निर्वासित (B) निरादर (C) देशद्रोही (D) देशभक्त
Ans.–[A] [LDC 05.07.2026]

व्याख्या—**'निर्वासित'** (निर् + वास + इत) का अर्थ होता है वह व्यक्ति जिसे उसके मूल निवास स्थान या **देश से बाहर निकाल दिया गया हो** या देश निकाला दे दिया गया हो।
उदाहरण—राजा ने उस अपराधी को राज्य से **निर्वासित** कर दिया

❖ **''जिसे जीता न जा सके'' वाक्यांश के लिए उपयुक्त एक शब्द क्या है? सबसे उपयुक्त विकल्प चुनें।**
(A) विजयी (B) अजेय (C) अपराजित (D) बहादुर
Ans.–[B] [LDC 05.07.2026]

व्याख्या—**'अ' (निषेधात्मक उपसर्ग)** और **'जि' (जीतना धातु)** से मिलकर **'अजेय'** शब्द बनता है, जिसका अर्थ है जिसे कोई जीत न सके।

❖ **'लौट कर आया हुआ' इस वाक्यांश के लिए एक शब्द होगा—**
(A) परोक्ष (B) प्रत्यागत (C) परार्थी (D) भावी
Ans.–[B] [VDO 02.11.2025]

व्याख्या—**'लौट कर आया हुआ'** के लिए एक सार्थक शब्द **'प्रत्यागत'** होता है।
✧ **व्याकरण नियम**—यह शब्द **यण् संधि** से बना है—**प्रति + आगत = प्रत्यागत**। 'प्रति' का अर्थ है 'वापस' और 'आगत' का अर्थ है 'आया हुआ' ।
✧ **अन्य विकल्प**—परोक्ष (आँखों से ओझल), भावी (भविष्य में होने वाला)।

❖ **'जिसे किसी विषय की जानकारी न हो' के लिए एक सार्थक शब्द होगा—**
(A) अनभिज्ञ (B) निरक्षर (C) अगणनीय (D) अपारदर्शक
Ans.–[A] [VDO 02.11.2025]

22 विराम चिह्न

(पूर्णविराम, अल्पविराम, विस्मयादिबोधक, कोष्ठक, निर्देशक, हंसपद, लाघव चिह्न, उद्धरण व विवरण चिह्नों के उदाहरण)

विराम चिह्न के भेद

◈ **किस वाक्य में विराम चिह्नों का असंगत प्रयोग हुआ है?**

(A) पानी बरसा, हवा चली, ओले गिरे।
(B) सूर्य अस्त हुआ; आकाश लाल हुआ; और जंगल में धीरे-धीरे अँधेरा फैलने लगा।
(C) लड़के ने कहा मैं, अभी आता हूँ!
(D) 'प्रदीप' एक हिन्दी दैनिक पत्र है।

Ans.–[C] **[PSI • 06.04.2026 (Morning Shift)]**

व्याख्या—**व्याकरण का नियम**—जब किसी के द्वारा कही गई बात को ज्यों का त्यों लिखा जाता है, तो **'कहा'** के बाद **अल्पविराम** और कथन के दोनों तरफ **उद्धरण चिह्न** का प्रयोग होता है।
शुद्ध वाक्य—लड़के ने कहा, "**मैं** अभी आता हूँ।"

◈ **विराम चिह्न के प्रयोग के संबंध में असंगत कथन है—**

(A) प्रश्नचिह्न प्रश्नवाचक वाक्य के अंत में लगाया जाता है।
(B) प्रश्नचिह्न ऐसे वाक्यों में नहीं लगाया जाता जिनमें प्रश्न आज्ञा के रूप में हो।
(C) जिन वाक्यों में प्रश्नवाचक शब्दों का अर्थ संबंधवाचक शब्दों का-सा होता है, उनमें प्रश्नचिह्न नहीं लगाया जाता।
(D) वाक्य के अंत में प्रश्न अथवा आश्चर्य का चिह्न आने पर पूर्ण विराम लगाया जाता है।

Ans.–[D] **[PSI • 06.04.2026 (Morning Shift)]**

व्याख्या—यदि किसी वाक्य के अंत में **प्रश्नवाचक चिह्न (?)** या **विस्मयादिबोधक/आश्चर्य चिह्न (!)** आ जाता है, तो उसके बाद **पूर्ण विराम (।) का प्रयोग कभी नहीं** किया जाता है। ये चिह्न स्वयं वाक्य की समाप्ति का बोध कराते हैं।
उदाहरण—'वह क्या कर रहा है?'

◈ **कौन सा विकल्प विराम चिह्न के प्रयोग की दृष्टि से दोषरहित है?**

(A) कृपया यह बताने का कष्ट करें, कि हम क्या पढ़ें!
(B) कृपया यह बताने का कष्ट करें कि हम क्या पढ़ें?
(C) कृपया, यह बताने का कष्ट करें कि हम क्या पढ़ें!
(D) कृपया यह बताने का कष्ट करें कि हम क्या पढ़ें।

Ans.–[D] **[PSI • 06.04.2026 (Morning Shift)]**

व्याख्या—यह वाक्य एक **प्रार्थनासूचक/अनुरोधवाचक वाक्य** है, अतः इसके अंत में **पूर्ण विराम (।)** लगेगा। यद्यपि आश्रित उपवाक्य में 'क्या' का प्रयोग हुआ है, परंतु मुख्य वाक्य सीधा प्रश्न नहीं पूछ रहा, बल्कि निवेदन कर रहा है। अतः **प्रश्नवाचक चिह्न (?) या विस्मयादिबोधक चिह्न (!) नहीं** आएगा।
उदाहरण—'मुझे यह समझाओ कि यह कैसे हुआ।'

◈ **हिंदी में प्रयुक्त निम्नलिखित विराम चिह्नों में से कौन-सा पूर्णतः हिंदी का है?**

(A) ? (प्रश्नचिह्न)
(B) ! (आश्चर्य चिह्न)
(C) । (पूर्ण विराम चिह्न)
(D) ; (अर्ध विराम चिह्न)

Ans.–[C] **[REET • Hindi (L-2) • 19.01.2026]**

व्याख्या—**पूर्ण विराम (।)** ही एकमात्र ऐसा विराम चिह्न है जो **हिंदी भाषा** का अपना मौलिक चिह्न है। अन्य सभी चिह्न जैसे– **प्रश्नवाचक** (?), **आश्चर्य/विस्मयादिबोधक चिह्न** (!), और **अर्ध विराम** (;) **अंग्रेजी भाषा** के प्रभाव से हिंदी व्याकरण में अपनाए गए हैं।

◈ **सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए-**

सूची I	**सूची II**
a. अल्प विराम	I. !
b. अर्ध विराम	II. ।
c. पूर्ण विराम	III. ,
d. आश्चर्य चिह्न	IV. ;

नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें—

(A) a-I, b-III, c-IV, d-II (B) a-I, b-II, c-III, d-IV
(C) a-II, b-III, c-I, d-IV (D) a-III, b-IV, c-II, d-I

Ans.–[D] **[REET • Hindi (L-2) • 19.01.2026]**

व्याख्या—हिंदी व्याकरण में **अल्प विराम** का चिह्न **(,)** होता है, जिसका प्रयोग वाक्यों में थोड़ी देर रुकने के लिए होता है। **अर्ध विराम** का चिह्न **(;)** है, जहाँ अल्प विराम से अधिक रुकना हो। **पूर्ण विराम** का चिह्न **(।)** है, जो वाक्य की पूर्ण समाप्ति पर लगाया जाता है। **आश्चर्य चिह्न / विस्मयादिबोधक** का चिह्न **(!)** है, जो **हर्ष, शोक, घृणा** या **आश्चर्य** को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त होता है।

◈ **सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए—**

सूची I	**सूची II**
a. सर्पाकार कोष्ठक	I. ^
b. अपूर्ण सूचक	II. {}
c. पुनरुक्ति सूचक	III. xxx
d. हंस पद	IV. ”

नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें—

(A) a-IV, b-III, c-II, d-I (B) a-III, b-II, c-I, d-IV
(C) a-II, b-III, c-IV, d-I (D) a-I, b-II, c-III, d-IV

Ans.–[C] **[REET • Hindi (L-2) • 19.01.2026]**

23 वाच्य
(कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य)

वाच्य के भेद

◈ **इनमें से कौनसा वाक्य 'कर्मवाच्य' का उदाहरण है? (निम्न में से सबसे उपयुक्त विकल्प चुनें)**
(A) सरकार के द्वारा घोषणा की गई।
(B) गोपाल पत्र लिखता है।
(C) मुझसे गाया नहीं जाता।
(D) मैं बोझ नहीं उठा सका।
Ans.–[A] [Platoon Commander-I • 22-11-2025]

व्याख्या—यह वाक्य **कर्मवाच्य** का सबसे उपयुक्त उदाहरण है क्योंकि इसमें कर्ता (सरकार) के साथ **'के द्वारा'** परसर्ग (कारक चिह्न) का प्रयोग हुआ है और क्रिया का लिंग तथा वचन मुख्य कर्म के अनुसार प्रयुक्त हुआ है।

◈ **'सर्दी में उससे खेला नहीं जाता।' वाक्य किस 'वाच्य' से सम्बन्धित है? (निम्न में से सबसे उपयुक्त विकल्प चुनें)**
(A) भाववाच्य (B) कर्त्तावाच्य
(C) वाच्य क्रिया (D) कर्तृवाच्य
Ans.–[A] [LDC • Paper-2nd • 11-08-2024]

व्याख्या—इस वाक्य में कर्ता **'उससे'** के साथ **'से'** विभक्ति है और क्रिया **'खेला नहीं जाता'** अकर्मक और निषेधात्मक है। क्रिया का रूप कर्ता या कर्म के अनुसार न होकर भाव के अनुसार है। जब वाक्य में क्रिया का भाव प्रधान हो, तो वह **'भाववाच्य'** कहलाता है।
✧ **भाव वाच्य** – भाववाच्य में क्रिया सदैव **पुल्लिंग, एकवचन और अन्य पुरुष** में रहती है। कर्ता के साथ **'से'** या **'के द्वारा'** का प्रयोग होता है और क्रिया अकर्मक होती है।

◈ **'पुस्तक पढ़ी जाती है' में वाच्य-भेद का कौन सा रूप है? (निम्न में से सबसे उपयुक्त विकल्प चुनें)**
(A) भाव (B) विधेय (C) कर्म (D) कर्तृ
Ans.–[C] [LDC • Paper-2nd • 11-08-2024]

व्याख्या—इस वाक्य में क्रिया **'पढ़ी जाती है'** का रूप कर्ता के अनुसार नहीं, बल्कि कर्म **'पुस्तक'** (स्त्रीलिंग) के अनुसार है। यदि हम कर्म को **'ग्रंथ'** (पुल्लिंग) कर दें, तो क्रिया **'पढ़ा जाता है'** हो जाएगी। जब क्रिया का लिंग और वचन कर्म के अनुसार बदलता है।
✧ **वाच्य नियम** – कर्मवाच्य में सकर्मक क्रिया का प्रयोग होता है और कर्ता के साथ **'से'/'के द्वारा'** विभक्ति लगी होती है या कर्ता का लोप होता है, जैसा कि इस वाक्य में है।

◈ **निम्नलिखित में से कौन से वाक्य कर्तृवाच्य के उदाहरण हैं ?**
(a) सुनैना नृत्य करती है।
(b) अंजना से बैठा नहीं जाता।
(c) जया से कुछ कहा नहीं जाता।
(d) रमेश ढोलक बजाता है।
(e) अभिनव शतरंज खेलता है।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए:
(A) केवल (a), (b), (c) (B) केवल (b), (c), (e)
(C) केवल (a), (d), (e) (D) केवल (b), (c), (d)
Ans.–[C] [Women Supervisor • Shift-I • 22-06-2024]

व्याख्या—कर्तृवाच्य में क्रिया का संबंध सीधा कर्ता से होता है और कर्ता की प्रधानता होती है।
(a) सुनैना नृत्य करती है। (कर्ता– सुनैना)
(d) रमेश ढोलक बजाता है। (कर्ता– रमेश)
(e) अभिनव शतरंज खेलता है। (कर्ता– अभिनव)
वाक्य (b) और (c) भाववाच्य के उदाहरण हैं क्योंकि इनमें क्रिया की प्रधानता है और कर्ता के साथ **'से'** विभक्ति लगी है जो असमर्थता का भाव प्रकट कर रही है।

◈ **भाववाच्य का उदाहरण है—**
(A) चोर पकड़ा गया है (B) डोली एक अमराई में उतारी गयी
(C) कपड़ा सिया जाता है (D) वहाँ कैसे बैठा जायेगा
Ans.–[D] [Rajasthan High Court LDC • 2022]

व्याख्या—वाक्य **''वहाँ कैसे बैठा जायेगा''** वाक्य में क्रिया का संबंध न तो कर्ता से है और न ही कर्म से, बल्कि भाव (बैठने की क्रिया) की प्रधानता है। इसमें असमर्थता का भाव भी प्रकट हो रहा है। भाववाच्य में क्रिया सदैव अकर्मक, पुल्लिंग और एकवचन में रहती है।

◈ **निम्न में से कौन–सा वाक्य कर्तृवाच्य है?**
(A) सुधा रो रही थी।
(B) हिरण से दौड़ा जाता है।
(C) क्या यह उपन्यास मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखा गया है?
(D) आज घूमने चला जाए।
Ans.–[A] [Supervisor (Female) (Anganwadi) 3.03.2019]

व्याख्या—उपरोक्त में से विकल्प (A) का वाक्य **'कर्तृवाच्य'** है—**सुधा रो रही थी।**
✧ **कर्तृवाच्य** – कर्तृवाच्य में क्रिया **'कर्ता'** के अनुसार ही आती है अर्थात् क्रिया का **लिंग** एवं **वचन, कर्ता** के अनुसार ही आता है।
(B) 'हिरण से दौड़ा जाता है।' यह वाक्य **भाववाच्य** का है—
✧ **भाववाच्य – भाववाच्य** में कहने का केन्द्रीय विषय **'कर्ता'** एवं **'कर्म'** नहीं होते अपितु **'भाव विशेष'** होता है।
(C) क्या यह उपन्यास मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखा गया है? (कर्मवाच्य)

24 कारक

कारक के भेद

◈ **निम्नलिखित में से संप्रदान कारक का उदाहरण है—**

(A) उसने लड़के को बुलाया।
(B) शिकारी ने बाघ मारा।
(C) हरि मोहन को रुपये देता है।
(D) माँ ने बच्चे को खेलते देखा।

Ans.–[C] [Grade 2nd • 13.07.2026]

व्याख्या—'हरि मोहन को रुपये देता है' वाक्य **संप्रदान कारक** का स्पष्ट उदाहरण है। व्याकरण के नियमानुसार जब किसी वाक्य में किसी को **हमेशा के लिए कुछ दिया जाता है** (देने का भाव), तो वहाँ 'को' परसर्ग होने पर भी कर्म कारक न होकर संप्रदान कारक होता है।

◈ **सूची I के साथ सूची II का मिलान कीजिए—**

सूची I (कारक भेद)		सूची II (अर्थ/लक्षण)
a. संबंध कारक	I.	जिसकी सहायता से कर्ता क्रिया करता है
b. करण कारक	II.	जहाँ किसी को कुछ दिया जाए
c. संप्रदान कारक	III.	अलग होने का बोध प्रकट हो
d. अपादान कारक	IV.	किसी व्यक्ति का दूसरे से संबंध

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए—

(A) a-III, b-II, c-IV, d-I
(B) a-IV, b-I, c-II, d-III
(C) a-II, b-I, c-III, d-IV
(D) a-I, b-III, c-II, d-IV

Ans.–[B] [Platoon Commander-I • 22-11-2025]

व्याख्या—संबंध कारक किसी व्यक्ति या वस्तु का दूसरे से संबंध बताता है। **करण कारक** वह मुख्य साधन है जिसकी सहायता से कर्ता क्रिया करता है। **संप्रदान कारक** वहाँ होता है जहाँ किसी को कुछ दिया जाए या किसी के लिए कुछ किया जाए। **अपादान कारक** इससे हमेशा अलग होने, डरने या तुलना का बोध प्रकट होता है।

कर्ता कारक

◈ **'ने' परसर्ग/विभक्ति का प्रयोग किस कारक के साथ होता है?**

(A) करण कारक
(B) कर्म कारक
(C) कर्ता कारक
(D) संप्रदान कारक

Ans.–[C] [Platoon Commander-I • 22-11-2025]

व्याख्या—'ने' विभक्ति (परसर्ग) का प्रयोग सदैव **कर्ता कारक** के साथ ही किया जाता है। वाक्य में जो शब्द काम करने वाले का बोध कराता है, उसे कर्ता कहते हैं। हिंदी व्याकरण में **'ने' परसर्ग** का प्रयोग विशेष रूप से **सकर्मक क्रियाओं** के साथ केवल **भूतकाल** में होता है।

◈ **कर्ता कारक के 'ने' परसर्ग के अनुपयुक्त प्रयोग वाला वाक्य है—**

(A) लड़के ने चिट्ठी लिखी।
(B) राम ने छींका।
(C) मैंने नौकर को बुलाया है।
(D) उसने यही बात करनी थी।

Ans.–[D] [PSI • 06.04.2026 (Morning Shift)]

व्याख्या—यहाँ **'उसने'** के स्थान पर **'उसे' (उसको)** का प्रयोग होना चाहिए। शुद्ध वाक्य होगा - **''उसे यही बात करनी थी।''**
व्याकरण नियम—जब वाक्य में किसी कार्य को करने की **बाध्यता, इच्छा या आवश्यकता** दर्शानी हो, तो कर्ता के साथ **सम्प्रदान/कर्म कारक 'को'** का प्रयोग होता है। कर्ता कारक **'ने'** का नहीं।
उदाहरण—राम **को** जाना है (न कि राम ने जाना है), **मुझे** यह काम करना था (न कि मैंने यह काम करना था)।

कर्म कारक

◈ **किस वाक्य में 'को' परसर्ग (विभक्ति चिह्न) कर्म कारक के लिए प्रयुक्त नहीं हुआ है ?**

(A) मोहन ने सोहन को उसकी पुस्तक लौटा दी।
(B) सरकार ने किसानों को अनुदान दिया ।
(C) गुरुजी ने बालक को पाठ पढ़ाया ।
(D) पुलिस ने अपराधी को पकड़ लिया ।

Ans.–[B] [SI 14.09.2021]

व्याख्या—विकल्प (B) में **'को'** परसर्ग (विभक्ति चिह्न) **कर्म कारक** के लिए प्रयुक्त नहीं हुआ है। यह **'के लिए'** अर्थ के कारण सम्प्रदान कारक में भी प्रयुक्त होता है।

✧ **कर्म कारक**—वाक्य में क्रिया का फल जिस शब्द पर पड़ता है, उसे कर्म कहते हैं। कर्मकारक का चिह्न 'को' है। बिना प्रत्यय के या अप्रत्यय कर्म के कारक का भी प्रयोग होता है। इसके भी निश्चित नियम बनाए गए हैं। जैसे—
सुलाना, कोसना, पुकारना, जगाना, भगाना, खिलाना, नहलाना इत्यादि क्रियाओं के कर्मों के साथ **'को'** विभक्ति लगती है। जैसे—**मैंने मोहन को बुलाया। सीता ने रवि को फल खिलाया।**

◈ **किस वाक्य में कर्मकारक नहीं है—**

(A) बालक रोते-रोते सो गया।
(B) ग्वाला गाय दुहता है।
(C) माँ बच्चे को सुलाती है।
(D) राजा ने ब्राह्मण को बुलाया।

Ans.–[A] [SI 07.10.2018]

25 वृत्ति

(आज्ञार्थक, इच्छार्थक, संभावनार्थक, सामर्थ्य सूचक, बाध्यता सूचक, निश्चयार्थक, संकेतार्थक वृत्ति के उदाहरण)

वृत्ति के भेद (आज्ञार्थक वृत्ति)

◈ **आज्ञार्थक वृत्ति का उदाहरण है—**
(A) संभव है, वह आया हो।
(B) तुम वहाँ न जाना।
(C) हो सकता है कि कहीं वर्षा हुई हो।
(D) यदि मेरा भाई यहाँ होता, तो तुम ऐसे न कहते।
Ans.–[B] [PSI • 06.04.2026 (Morning Shift)]

व्याख्या—**व्याकरण नियम**—क्रिया के जिस रूप से **आज्ञा, अनुमति, उपदेश या निषेध (मना करने)** का भाव प्रकट हो, वहाँ **आज्ञार्थक वृत्ति** होती है। यहाँ **'न जाना'** निषेधात्मक आज्ञा को दर्शा रहा है। **अन्य विकल्प**—A और C **'संभावनार्थक वृत्ति'** हैं और D **'संकेतार्थक वृत्ति'** है। **उदाहरण**—तुम अपना **काम करो**। (आज्ञा)

◈ **'आप उधर बैठिए' - वाक्य में वृत्ति है—**
(A) निश्चयार्थ वृत्ति (B) आज्ञार्थ वृत्ति
(C) संकेतार्थ वृत्ति (D) संभावनार्थ वृत्ति
Ans.–[B] [SI 14.09.2021]

व्याख्या—**'आप उधर बैठिए'** वाक्य में **'आज्ञार्थ/आज्ञार्थक वृत्ति'** है। जिसका प्रयोग आज्ञा देने वाली क्रियाओं में होता है।
✧ **आज्ञार्थ वृत्ति**—इस वृत्ति से **आज्ञा, अनुरोध, चेतावनी, निषेध, उपदेश, प्रार्थना** आदि का बोध कराया जाता है व इनसे संबंधित प्रभाव होते हैं। इसमें मूल क्रिया के साथ-साथ अलग-अलग सहायक क्रियाएँ लगती हैं। जैसे—
1. जल्दी लौट आइए। (अनुरोध/प्रार्थना)
2. शाम को मंदिर चले जाना। (आज्ञा)

◈ **अभिकथन (A) और कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें -**
अभिकथन (A) – ''तुम अभी यहाँ से चले जाओ'' तथा ''कृपया मुझे अपनी पुस्तक दे दीजिए'' दोनों वाक्यों में आज्ञार्थक वृत्ति का प्रयोग हुआ है।
कारण (R) – आज्ञार्थक वृत्ति में केवल वक्ता द्वारा दिए गए कठोर आदेश का ही बोध होता है, इसमें विनय, प्रार्थना या अनुमति का समावेश नहीं होता।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें -
(A) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सही है लेकिन (R) गलत है।
(D) (A) गलत है लेकिन (R) सही है।
Ans.–[C]

व्याख्या— **आज्ञार्थक वृत्ति का नियम** – जिस क्रिया-रूप से वक्ता के **आदेश, निर्देश, अनुमति, प्रार्थना या विनय** का बोध होता है, उसे **आज्ञार्थक वृत्ति** कहते हैं।
✧ अभिकथन (A) बिल्कुल सही है क्योंकि ''चले जाओ'' में आदेश है और ''कृपया दे दीजिए'' में प्रार्थना है, और दोनों आज्ञार्थक वृत्ति के ही रूप हैं।
✧ कारण (R) गलत है क्योंकि आज्ञार्थक वृत्ति केवल 'कठोर आदेश' तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें **प्रार्थना** और **अनुमति** भी अनिवार्य रूप से शामिल होते हैं।

इच्छार्थक वृत्ति

◈ **'सदा सुखी रहो।' वाक्य किस वृत्ति से संबंधित है?**
(A) आज्ञार्थ (B) संकेतार्थ
(C) इच्छार्थ (D) निश्चयार्थ
Ans.–[C] [PSI • 05.04.2026 (Morning Shift)]

व्याख्या—हिंदी व्याकरण में जिन वाक्यों से वक्ता की **इच्छा, आशा, आशीर्वाद, शुभकामना या शाप** का बोध होता है, वहाँ **इच्छार्थ वृत्ति** होती है। **'सदा सुखी रहो'** एक आशीर्वाद है, इसलिए यह इच्छार्थक वृत्ति है।
उदाहरण—**'भगवान तुम्हारा भला करे', 'तुम्हारी यात्रा मंगलमय हो'**।

◈ **'इच्छार्थक वृत्ति' की पहचान के लिए निम्नलिखित वाक्यों का परीक्षण कीजिए और सही कूट का चयन कीजिए—**
a. भगवान आपके परिवार को हमेशा सुखी रखे।
b. हमें समाज के गरीब और असहाय लोगों की मदद करनी चाहिए।
c. शायद आज पिताजी दिल्ली से वापस आ जाएँ।
d. नववर्ष आपके जीवन में नई उमंग लेकर आए!
दिए गए वाक्यों में से कौन-से वाक्य इच्छार्थक वृत्ति के अंतर्गत आते हैं?
(A) a, b और c (B) a, b और d
(C) b, c और d (D) a, c और d
Ans.–[B]

व्याख्या— **इच्छार्थक (विध्यर्थक) वृत्ति का नियम** – जिस वाक्य से वक्ता की **इच्छा, आशा, आशीर्वाद, शुभकामना या उपदेश (कर्तव्य बोध)** का पता चले।
✧ वाक्य (a) और (d) में क्रमशः आशीर्वाद और शुभकामना दी गई है।
✧ वाक्य (b) में **'चाहिए'** के माध्यम से नैतिक कर्तव्य/उपदेश दर्शाया गया है, जो इच्छार्थक (विध्यर्थक) वृत्ति का ही प्रकार है।

26 पक्ष
(आरंभद्योतक, सातत्यबोधक, प्रगतिबोधक, पूर्णताबोधक, नित्यताबोधक, आवृत्तिमूलक)

पक्ष के भेद (आरंभद्योतक पक्ष)

◈ **''वर्षा 'होने लगी' है।'' इस वाक्य में क्रिया का कौन-सा पक्ष है?**

(A) प्रगतिबोधक पक्ष (B) अभ्यास द्योतक पक्ष
(C) आरंभद्योतक पक्ष (D) पूर्णता द्योतक पक्ष

Ans.–[C]

व्याख्या—क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि कोई काम अभी-अभी शुरू हुआ है, उसे **'आरंभद्योतक पक्ष'** कहते हैं। इसमें मुख्य क्रिया के साथ **'लगा, लगी, लगे'** जुड़ा होता है।
उदाहरण—बच्चा रोने लगा, वह दौड़ने लगा।

सातत्यबोधक पक्ष

◈ **'छात्र पढ़ रहे हैं।' यह वाक्य किस 'पक्ष' से संबंधित है ?**

(A) नित्यताबोधक (B) सातत्यबोधक
(C) आवृत्तिमूलक (D) पूर्णकालिक

Ans.–[B] [SI 15.09.2021]

व्याख्या—**'छात्र पढ़ रहे हैं'** वाक्य दर्शाता है कि क्रिया अभी जारी है, अतः यह **'सातत्यबोधक पक्ष'** है।

✧ **सातत्यबोधक**—इसमें क्रिया के निरंतर रूप से चलते रहने का संकेत मिलता है। यह निरंतरता चाहे वर्तमानकाल में हो, चाहे भूतकाल में, चाहे भविष्यकाल में लगातार होती रहती है।
जैसे – शिक्षक कक्षा में पढ़ा रहे हैं।

◈ **किस वाक्य में क्रिया के 'सातत्यबोधक पक्ष' का प्रयोग हुआ है—**

(A) मैं रोज सुबह टहलने जाता हूँ।
(B) वह स्नान करके मंदिर जाता है।
(C) विद्यार्थी पुस्तकालय में बैठकर समाचार पत्र पढ़ते हैं।
(D) मोहन अपनी कक्षा में पढ़ा रहा है।

Ans.–[D] [SI 07.10.2018]

व्याख्या—उपरोक्त में से विकल्प (D) में क्रिया के **'सातत्य बोधक पक्ष'** का प्रयोग किया गया है।'

✧ **सातत्य बोधक पक्ष**—इसके अंतर्गत किसी कार्य का लगातार होना पाया जाता है। इस पक्ष में क्रिया लगातार हो रही है। जैसे—
1. पतंग उड़ रही है।
2. बच्चे दौड़ रहे हैं।

◈ **'सातत्यबोधक पक्ष' और 'पूर्णताबोधक पक्ष' की तुलनात्मक समझ के आधार पर सत्य कथनों को पहचानिए—**

1. सातत्यबोधक पक्ष में क्रिया के व्यापार के पूर्ण होने का कोई संकेत नहीं मिलता, कार्य वर्तमान में जारी रहता है।
2. ''पेड़ से पीले पत्ते गिर रहे हैं'' सातत्यबोधक पक्ष को दर्शाता है।
3. पूर्णताबोधक पक्ष में कार्य पूर्ण हो चुका होता है, भले ही उसका प्रभाव वर्तमान में महसूस हो रहा हो।
4. ''उसने बहुत स्वादिष्ट भोजन पकाया है'' वाक्य में पूर्णताबोधक पक्ष विद्यमान है।

सही विकल्प चुनें–

(A) 1, 2 और 3 (B) 2, 3 और 4
(C) 1, 3 और 4 (D) 1, 2, 3 और 4

Ans.–[D]

व्याख्या— चारों कथन सत्य हैं। **सातत्यबोधक पक्ष** में कार्य बिना रुके चल रहा होता है। **(रहा है, रहे हैं)**, जैसे पत्ते **'गिर रहे हैं'**। दूसरी ओर, **पूर्णताबोधक पक्ष** में कार्य की समाप्ति हो जाती है **(चुका है, या है, ई है)**, जैसे **'भोजन पकाया है'**। पूर्णताबोधक में कार्य की पूर्णता वर्तमान (आसन्न भूत) के रूप में भी हो सकती है।

प्रगतिबोधक पक्ष

◈ **''देश की जनसंख्या लगातार 'बढ़ती जा रही है'।'' इस वाक्य में यह कौन-सा पक्ष है?**

(A) आरंभद्योतक पक्ष (B) प्रगतिबोधक पक्ष
(C) अभ्यास द्योतक पक्ष (D) नित्यता द्योतक पक्ष

Ans.–[B]

व्याख्या—जब क्रिया के रूप से यह बोध हो कि कार्य अभी जारी है और उसमें लगातार प्रगति हो रही है, तो उसे प्रगतिबोधक पक्ष कहते हैं। **उदाहरण**—महँगाई बढ़ रही है।

◈ **निम्नलिखित सूची-1 को सूची-2 के साथ सुमेलित कीजिए—**

सूची-1 (वाक्य)	**सूची-2 (पक्ष)**
a. दो और दो चार होते हैं।	1. प्रगतिबोधक पक्ष
b. वह मंच पर भाषण देने लगा।	2. पूर्णताबोधक पक्ष
c. भीड़ का आक्रोश तेज होता जा रहा है।	3. नित्यताबोधक पक्ष
d. मुख्य अतिथि कार्यक्रम में पहुँच गए हैं।	4. आरंभद्योतक पक्ष

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनें -

(A) a-3, b-4, c-1, d-2 (B) a-4, b-3, c-2, d-1
(C) a-3, b-1, c-4, d-2 (D) a-1, b-2, c-3, d-4

Ans.–[A]

27 शब्द शुद्धि

◈ **श, ष और स के उच्चारण में अंतर न कर पाना किस प्रकार की त्रुटि है?**
(A) वर्ण-रचना त्रुटि (B) अर्थगत त्रुटि
(C) व्याकरणिक त्रुटि (D) ध्वन्यात्मक त्रुटि
Ans.–[D] [Grade 2nd • 13.07.2026]

व्याख्या—**ध्वन्यात्मक त्रुटि -** जब बोलते समय समान प्रतीत होने वाली ध्वनियों में भेद न किया जा सके, तो यह ध्वन्यात्मक त्रुटि कहलाती है। **'श', 'ष' और 'स' ऊष्म व्यंजन** हैं, जिनके उच्चारण स्थान भिन्न हैं।
व्याकरणिक नियम व उच्चारण स्थान -
श—तालव्य (तालु के स्पर्श से उच्चारित)
ष—मूर्धन्य (मूर्धा के स्पर्श से उच्चारित)
स—दन्त्य (दांतों के स्पर्श से उच्चारित)
इनके उच्चारण स्थानों का स्पष्ट ज्ञान न होने पर ध्वनियों के बीच भ्रम उत्पन्न होता है।

◈ **निम्नलिखित शब्दों के आधार पर असंगत उत्तर विकल्प चुनिए—**
(क) स्थानापन **(ख) बरात**
(ग) धनाढ्य **(घ) आथित्य**
कूट: (A) (ख), (ग) दोनों शुद्ध (B) (ग) शुद्ध, (घ) अशुद्ध
(C) (ग), (घ) दोनों अशुद्ध (D) (क) अशुद्ध, (ख) शुद्ध
Ans.–[C] [Grade 2nd • 13.07.2026]

व्याख्या—**धनाढ्य** और **आश्रित** दोनों शब्द वर्तनी की दृष्टि से पूर्णतः **शुद्ध** हैं। शब्दों का वर्तनी विश्लेषण—**अशुद्ध**—स्थानापन **शुद्ध**—स्थानापन्न (स्थान + आपन्न) **शुद्ध**—बरात (तत्सम 'वरयात्रा' का तद्भव रूप)

◈ **अशुद्ध शब्द है—**
(A) पीढ़ा (B) लुढ़कना
(C) ढ़ेर (D) सीढ़ी
Ans.–[C] [Grade 2nd • 13.07.2026]

व्याख्या—हिंदी वर्तनी के नियमानुसार **उत्क्षिप्त व्यंजनों (ड़, ढ़)** का प्रयोग कभी भी किसी शब्द के **आरंभ** में नहीं होता है। शब्द के आरंभ में सदैव बिना बिंदु वाले सामान्य **'ड'** और **'ढ'** का प्रयोग होता है।
✧ मूल प्रश्नपत्र में **'ढ़ेर'** शब्द के प्रारंभ में 'ढ' के नीचे बिंदु (उत्क्षिप्त चिह्न) का प्रयोग किया गया है, जो व्याकरणिक दृष्टि से अशुद्ध है। शुद्ध रूप बिना बिंदु वाला **ढेर** होता है।
✧ पीड़ा, लुढ़कना और सीढ़ी में ड़/ढ़ का प्रयोग मध्य या अंत में होने के कारण शुद्ध है।

◈ **जिस विकल्प में सभी शब्द शुद्ध हैं, वह है—**
(A) सुषमा, उत्तकष, एकत्रित (B) हितेच्छु, शुद्धिकरण, सम्राज्य
(C) श्रीयुत, सदृश्य, दाइत्व (D) ऐक्य, साधुवाद, अनुयायी
Ans.–[D] [Grade 2nd • 13.07.2026]

व्याख्या—**ऐक्य, साधुवाद, अनुयायी** तीनों शब्द व्याकरणिक दृष्टि से पूर्णतः शुद्ध हैं।
व्याकरणिक नियम एवं अन्य शब्दों का विश्लेषण—
✧ **ऐक्य -** 'एक' मूल शब्द में 'य' प्रत्यय जुड़ने से प्रथम स्वर में वृद्धि (ए का ऐ) होती है।
✧ **एकत्रित (अशुद्ध) -** शुद्ध रूप **एकत्र** होता है। **'एकत्र'** स्वयं में अव्यय एवं विशेषण है, इसमें 'इत' प्रत्यय लगाना व्याकरणिक दृष्टि से अनुचित है।
✧ **शुद्धिकरण (अशुद्ध) -** शुद्ध रूप **शुद्धीकरण** है। **नियम - 'करण'** प्रत्यय जुड़ने पर पूर्व पद के अंत में स्थित ह्रस्व इ की मात्रा दीर्घ 'ई' में परिवर्तित हो जाती है।
✧ **सम्राज्य (अशुद्ध) -** शुद्ध रूप **साम्राज्य** है।
✧ **सदृश्य (अशुद्ध) -** शुद्ध रूप **सदृश** (समान) होता है।
✧ **दाइत्व (अशुद्ध) -** शुद्ध रूप **दायित्व** है।

◈ **अशुद्ध शब्द चुनिए—**
(A) पश्चात्ताप (B) पर्यवसान
(C) शिरमौर (D) प्रायश्चित
Ans.–[D] [Grade 2nd • 13.07.2026]

व्याख्या—दिए गए शब्दों में **'प्रायश्चित'** अशुद्ध है। इसका शुद्ध रूप **प्रायश्चित्त** होता है।
व्याकरण नियम - यह **व्यंजन संधि** का उदाहरण है। **प्रायस्** और **चित्त** के योग से 'प्रायश्चित्त' शब्द का निर्माण होता है। जब 'स्' के बाद 'च' वर्ग का कोई वर्ण आता है, तो 'स्' परिवर्तित होकर 'श्' बन जाता है। साथ ही अंत में 'त्' और 'त' मिलकर द्वित्व व्यंजन 'त्त' बनाते हैं।
अन्य उदाहरण - मनस् और **चिकित्सा** के योग से **मनश्चिकित्सा** शब्द का निर्माण।

◈ **शुद्ध शब्द है—**
(A) अनुशंसा (B) उत्तरायन
(C) अपन्हुति (D) कृत्यकृत
Ans.–[A] [Grade 2nd • 13.07.2026]

व्याख्या—**अनुशंसा** पूर्णतः शुद्ध शब्द है।
अन्य शब्दों के शुद्ध रूप और व्याकरण नियम—
नियम—यदि **'र'** या **'ष'** के बाद **'न'** आए, तो संधि होने पर **'न'** का **'ण'** हो जाता है (**उत्तर + अयन = उत्तरायण**)।
✧ **उत्तरायण**—शुद्ध रूप। ✧ **अपह्नुति**—शुद्ध रूप।
✧ **कृतकृत्य**—शुद्ध रूप।

28 वाक्य रचना
(वाक्य के अंग, वाक्य के प्रकार - सरल, संयुक्त, मिश्रित वाक्य)

वाक्य के अंग

❖ **वाक्य में 'योग्यता' का अर्थ है।**
निम्न में से सबसे उपयुक्त विकल्प चुनें—
(A) पदों के अर्थबोधन की क्षमता
(B) एक पद को सुनकर दूसरे को जानने की उत्कंठा
(C) वाक्य में प्रयुक्त पदों का क्रम
(D) एक से अधिक पदों का योग
Ans.–[A] [Platoon Commander-I • 22-11-2025]

व्याख्या—किसी भी शुद्ध वाक्य के 6 अनिवार्य तत्व होते हैं **(सार्थकता, योग्यता, आकांक्षा, निकटता, पदक्रम, अन्वय)**। इनमें **योग्यता** का अर्थ है—वाक्य में प्रयुक्त पदों के प्रसंगानुसार सार्थक और तार्किक अर्थ प्रकट करने की स्वाभाविक क्षमता होना।

❖ **वाक्य के मुख्यतः कितने अंग होते हैं ?**
(A) एक (B) दो (C) तीन (D) चार
Ans.–[B] [REET-2021 (Level-II) 26.09.2021]

व्याख्या—वाक्य के मुख्यतः दो अंग होते हैं—**उद्देश्य एवं विधेय।**
✧ **उद्देश्य**—जिसके बारे में वाक्य में कुछ बोला/कहा जाता है अर्थात् काम करने वाला ही वाक्य में **'उद्देश्य'** कहलाता है।
✧ **विधेय**—उद्देश्य या काम करने वाले के बारे में वाक्य में जो कुछ भी कहा/बोला जाता है उसे **'विधेय'** कहा जाता है।

❖ **वाक्य के कितने अंग माने गए हैं?**
(A) चार (B) एक (C) दो (D) तीन
Ans.–[C] [REET-2022 (Level-I) 23 July 2022]

व्याख्या—वाक्य के दो मुख्य अंग माने गए हैं— (1) कर्ता और (2) विधेय। कर्ता वह होता है जो क्रिया करता है और विधेय वह होता है जो कर्ता के बारे में कुछ कहता है।

❖ **हिन्दी भाषा में वाक्य के मुख्य अंग होते हैं—**
(A) दो (B) पाँच (C) चार (D) तीन
Ans.–[A] [REET-2021 (Level-I) 26 Sept. 2021]

व्याख्या—हिन्दी भाषा में वाक्य के दो अंग होते हैं–**उद्देश्य** और **विधेय**।
✧ **उद्देश्य**—जिसके बारे में बात की जाती है या जिसके बारे में हम किसी को कुछ बताते हैं उसे उद्देश्य कहते हैं।
✧ **विधेय**–वाक्य के जिस भाग में उद्देश्य के बारे में बताया जाता है उसे ही विधेय कहते हैं। वाक्य के अर्थ व रचना के आधार पर कई भेद होते हैं।

❖ **वाक्य की विशेषताओं के संबंध में सही कथन नहीं है—**
(A) वाक्य की रचना विभिन्न पदों एवं पदबंधों के मेल से होती है।
(B) वाक्य के दो प्रमुख घटक होते हैं–उद्देश्य तथा विधेय।
(C) वाक्य स्वयं में संपूर्ण होता है।
(D) व्याकरण-सिद्ध पदों को मेल के अनुसार यथाक्रम रखने को ही 'वाक्य रचना' कहते हैं।
Ans.–[D] [Platoon Commander-I • 22-11-2025]

व्याख्या—**व्याकरण-सिद्ध पदों को मेल के अनुसार यथाक्रम रखने को ही 'वाक्य रचना' कहते हैं।** एक शुद्ध वाक्य के लिए पदों के समूह का एक **सार्थक अर्थ** और पूर्ण विचार प्रकट करना अनिवार्य है। एक आदर्श वाक्य में **सार्थकता, योग्यता, आकांक्षा, आसक्ति (निकटता) और अन्वय (व्याकरणिक मेल)** जैसे आवश्यक तत्वों होने चाहिए।

❖ **नीचे दो कथन दिए गए हैं-**
कथन I: वाक्य, भाषा की सबसे महत्वपूर्ण इकाई है।
कथन II: वाक्य में पदों का क्रम नियमानुसार जरूरी नहीं होता।
उपर्युक्त कथन के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए—
(A) कथन I और II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
Ans.–[C] [Platoon Commander-I • 22-11-2025]

व्याख्या—**वाक्य भाषा की सबसे महत्वपूर्ण इकाई** है, जिससे वक्ता का पूर्ण भाव या विचार श्रोता तक पहुँचता है। जबकि हिंदी व्याकरण में **पदक्रम** का एक अत्यंत निश्चित और अनिवार्य नियम होता है। (जैसे—**कर्ता + कर्म + क्रिया**)।

वाक्य रचना (उद्देश्य एवं विधेय)

❖ **'आज लोगों के मन में यही बात समा रही है कि जहाँ तक हो सके शीघ्र ही शत्रुओं से बदला लेना चाहिए।'वाक्य में उद्देश्य है—**
(A) शीघ्र ही (B) शत्रुओं से
(C) बात (D) आज लोगों के मन में
Ans.–[C] [Grade 1st • Hindi • 31.05.2026]

व्याख्या— हिंदी व्याकरण के नियमों के अनुसार, प्रत्येक वाक्य के दो मुख्य अंग होते हैं – **उद्देश्य** और **विधेय**। वाक्य में जिसके विषय में कुछ कहा जाता है, उसे **उद्देश्य** कहते हैं। दिए गए वाक्य (**''आज लोगों के मन में यही बात समा रही है...''**) में मुख्य चर्चा **'बात'** के बारे में हो रही है। अतः यहाँ **'बात'** ही वाक्य का मुख्य उद्देश्य है। **'आज लोगों के मन में' स्थान/काल का बोध कराता है जो विधेय का विस्तार है।**

29 वाक्य शुद्धि

(संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, अव्यय, लिंग, वचन, काल, पदक्रम की अशुद्धियाँ व उदाहरण)

वाक्य शुद्धि के भेद

❖ **निम्नलिखित में से शुद्ध वाक्य है—**

(A) बड़ों की आज्ञा मानना हमारा कर्त्तव्य है।
(B) उन्होंने इस बात की आपत्ति उठायी।
(C) व्यापार में सेठ रामलाल के कोई घाटा नहीं हुआ।
(D) मैंने उसे बैठने की कुर्सी दी।

Ans.–[A] [Grade 1st • Hindi • 31.05.2026]

व्याख्या— विकल्प (A) ''बड़ों की आज्ञा मानना हमारा कर्तव्य है''
(B) अशुद्ध है क्योंकि **'आपत्ति उठायी'** का प्रयोग भाषा में उचित नहीं माना जाता। **शुद्ध रूप** – ''उन्होंने इस बात पर **आपत्ति की** (या आपत्ति जताई)।''
(C) अशुद्ध है क्योंकि यहाँ संबंध कारक 'के' का गलत प्रयोग हुआ है, यहाँ कर्म/सम्प्रदान कारक 'को' आना चाहिए। **शुद्ध रूप** – **''व्यापार में सेठ रामलाल को कोई घाटा नहीं हुआ।''**
(D) अशुद्ध है क्योंकि 'बैठने की कुर्सी' का प्रयोग अटपटा है (कुर्सी बैठने के लिए ही होती है)। यहाँ सम्प्रदान कारक (के लिए) का प्रयोग होना चाहिए। **शुद्ध रूप** – **''मैंने उसे बैठने के लिए कुर्सी दी।''**

❖ **अशुद्ध वाक्य है—**

(A) आपके विचार में क्या ऐसा हो सकता है?
(B) यह पत्र आपके अनुरूप है।
(C) हमारा अध्यापक बहुत श्रेष्ठ आदमी है।
(D) उस पर मुकदमा चलाया गया।

Ans.–[C] [Grade 2nd • 13.07.2026]

व्याख्या—वाक्य ''हमारा अध्यापक बहुत श्रेष्ठ आदमी है'' में व्याकरणिक अशुद्धि है। **'श्रेष्ठ'** शब्द गुणवाचक विशेषण की उत्तमावस्था है जिसका अर्थ स्वयं 'सबसे अच्छा' होता है। **'श्रेष्ठ'** के पूर्व **'बहुत'** प्रविशेषण का प्रयोग व्याकरणिक दृष्टि से अनुचित और अनावश्यक (अतिपदत्व दोष) है। आदरार्थक संदर्भ में 'हमारा' के स्थान पर **'हमारे'** का प्रयोग होना चाहिए। शुद्ध रूप ''हमारे अध्यापक श्रेष्ठ व्यक्ति हैं'' होगा।

❖ **अशुद्ध वाक्य है—**

(A) यह संभव हो सकता है।
(B) मैं इसे स्वीकृत करता हूँ।
(C) मैं यह कहे बिना नहीं रह सकता।
(D) इस बात के स्पष्टीकरण की आवश्यकता है। **[A]**

Ans.–[A] [Grade 2nd • 13.07.2026]

व्याख्या—**'यह संभव हो सकता है'** वाक्य में **पुनरुक्ति दोष** (अनावश्यक शब्द दोष) है। यहाँ **'संभव'** और **'सकता'** दोनों शब्दों का अर्थ एक समान (संभावना व्यक्त करना) है। एक ही वाक्य में दोनों का एक साथ प्रयोग व्याकरणिक दृष्टि से अशुद्ध है।

✧ **शुद्ध वाक्य - यह संभव है।** अथवा **यह हो सकता है।**
✧ **नियम -** जब वाक्य में एक ही अर्थ को प्रकट करने वाले दो शब्दों का प्रयोग हो, तो वहाँ पुनरुक्ति दोष होता है।

उदाहरण - 'वह वापस लौट आया' (अशुद्ध)—**'वह लौट आया'** (शुद्ध)।

❖ **शुद्ध वाक्य है—**

(A) हमें बहुत-सी बातों को सीखना है।
(B) वे लोग विविध विषय से परिचित थे।
(C) सब श्रेणी या वर्ग के लोग आये।
(D) फल पका होना चाहिए।

Ans.–[D] [Grade 2nd • 13.07.2026]

व्याख्या—**'फल पका होना चाहिए'** व्याकरण की दृष्टि से पूर्णतः शुद्ध वाक्य है।

✧ **नियम एवं त्रुटि सुधार -** 'हमें बहुत-सी बातों को सीखना है' का शुद्ध रूप **'हमें बहुत-सी बातें सीखनी हैं'** होगा। 'बातों को सीखना' कर्म कारक का अनुचित प्रयोग है। 'वे लोग विविध विषय से परिचित थे' का शुद्ध रूप **'वे लोग विविध विषयों से परिचित थे'** होगा। 'विविध' विशेषण बहुवचन का बोध कराता है, अतः इसके साथ प्रयुक्त संज्ञा भी बहुवचन होगी। 'सब श्रेणी या वर्ग के लोग आये' का शुद्ध रूप **'सभी श्रेणियों या वर्गों के लोग आये'** होगा।

❖ **शुद्ध वाक्य है—**

(A) उसे भारी प्यास लगी है।
(B) ऐसा साहित्य उत्कृष्टतम कहा जायेगा।
(C) इसमें समस्त प्राणिमात्र का कल्याण है।
(D) अधिकतर लोगों का यही विचार है।

Ans.–[D] [Grade 1st • Hindi • 31.05.2026]

व्याख्या— यहाँ शुद्ध वाक्य की पहचान करनी है।
''अधिकतर लोगों का यही विचार है।''एक पूर्णतः शुद्ध वाक्य है।)
व्याकरणिक नियम व अन्य विकल्पों में अशुद्धियाँ—
(A) उसे भारी प्यास लगी है – यहाँ विशेषण संबंधी अशुद्धि है। प्यास **'भारी'** नहीं होती। सही वाक्य – **''उसे बहुत प्यास लगी है।''**
(B) ऐसा साहित्य उत्कृष्टतम कहा जायेगा – यहाँ विशेषण की

30 वाक्य रूपान्तरण

(सरल, संयुक्त व मिश्र वाक्यों का हिन्दी से अंग्रेजी व अंग्रेजी से हिन्दी में रूपान्तरण)

सरल वाक्यों का हिन्दी में रूपान्तरण

❖ **"The meeting has been postponed until further notice."**
The correct translation of the above sentence from English to Hindi is:
(A) बैठक को अगली सूचना तक स्थगित किया गया है।
(B) बैठक को अगली सुनवाई तक स्थगित किया है।
(C) बैठक अगली सूचना तक स्थगित रहेगा।
(D) बैठक समाप्त कर दी गई है।
Ans.–[A] [LDC 05.07.2026]

व्याख्या—सही अनुवाद **''बैठक को अगली सूचना तक स्थगित किया गया है''** है। **व्याकरण का नियम:** दिया गया अंग्रेजी वाक्य **Present Perfect Tense** के **Passive Voice (has been + V3)** में है हिंदी में पैसिव वॉयस (कर्मवाच्य) का अनुवाद करते समय **'गया है'** का प्रयोग किया जाता है। वाक्य का विखंडन: ''The meeting'' = **बैठक**, ''has been postponed'' = **स्थगित किया गया है**, ''until further notice'' = **अगली सूचना तक।**

❖ **I wanted to go out, but it started raining. का उचित अर्थ है।**
सबसे उपयुक्त विकल्प चुनें।
(A) मैं बाहर जाना चाहता था, और बारिश होने लगी।
(B) मैं बाहर जाना चाहता था, लेकिन बारिश होने लगी।
(C) मैं बाहर जाना चाहता था, पर बारिश हुई।
(D) मैं बाहर गया लेकिन बारिश काफी हुई।
Ans.–[B] [LDC 05.07.2026]

व्याख्या—सही उत्तर **(B) मैं बाहर जाना चाहता था, लेकिन बारिश होने लगी** है।
व्याकरण का नियम—यह एक संयुक्त वाक्य है इसमें **'but'** का प्रयोग हुआ है, जिसका हिंदी अर्थ **'लेकिन' या 'परन्तु'** होता है और यह दो विरोधी विचारों को जोड़ता है 'started raining' का अर्थ 'बारिश होने लगी' होता है
उदाहरण : I tried hard, **but** I failed. (मैंने बहुत कोशिश की, **लेकिन** मैं असफल रहा)

❖ **''Application has not been made in proper form.''**
इस वाक्य का हिन्दी रूपांतरण होगा—
(A) सही प्रपत्र में आवेदन नहीं है।
(B) प्रार्थना-पत्र गलत प्रपत्र में है।
(C) आवेदन उचित माध्यम से नहीं दिया गया है।
(D) आवेदन उचित रूप में नहीं किया गया है।
Ans.–[B] [LDC 23.10.2016]

व्याख्या—**''Application has not been made in proper form.''** इस वाक्य का हिन्दी रूपांतरण होगा—
(B) प्रार्थना-पत्र गलत प्रपत्र में है।

❖ **'Rajiv began to praise Sanjiv' वाक्य का हिन्दी अनुवाद होगा—**
(A) राजीव संजीव की तारीफ कर रहा था।
(B) राजीव संजीव की प्रशंसा करने लगा।
(C) राजीव ने संजीव की प्रशंसा की।
(D) राजीव संजीव की प्रशंसा करेगा।
Ans.–[B] [LDC 19.08.2018]

व्याख्या—**'Rajiv began to praise Sanjiv'** वाक्य का हिन्दी अनुवाद है—राजीव, संजीव की प्रशंसा करने लगा।

❖ **We purchased clothes and sold books.**
वाक्य का सही हिन्दी रूपान्तरण है—
(A) हमने कपड़े खरीदे और पुस्तकें बेचीं।
(B) हमने कपड़े खरीदना और बैग बेचना शुरू किया।
(C) हम कपड़े खरीदते और बैग बेचते हैं।
(D) इनमें से कोई नहीं।
Ans.–[A] [LDC 19.08.2018]

व्याख्या—**We purchased clothes and sold books.** इस वाक्य का हिन्दी में सही रूपांतरण है—हमने कपड़े खरीदे और पुस्तकें बेचीं।

❖ **'The thief ran away as soon as he saw the police'.**
वाक्य का सही हिन्दी रूपान्तरण क्या होगा—
(A) पुलिस आई और चोर भाग गया।
(B) पुलिस को देखते ही चोर भाग गया।
(C) चोर भागा पुलिस आई।
(D) पुलिस के आते ही चोर भाग गया।
Ans.–[B] [LDC 19.08.2018]

व्याख्या—**'The thief ran away as soon as he saw the police'.**
इस वाक्य का सही रूपांतरण है—पुलिस को देखते ही चोर भाग गया।

❖ **He is writing a letter to his mother.**
वाक्य का हिन्दी रूपांतरण है—
(A) वह अपनी माता को पत्र लिख रही है।
(B) वह अपनी माता को पत्र लिखता है।

31 मुहावरे
(अर्थ व वाक्य प्रयोग)

❖ **किस विकल्प में मुहावरा और तत्संबंधी अर्थ असंगत है?**
(A) खाक छानना = बहुत खोजना
(B) खाक में मिलना = चौपट हो जाना
(C) खाक उड़ाना = बेकार रहना
(D) खाक चाटना = झूठ बोलना
Ans.–[D] [Grade 2nd • 13.07.2026]

व्याख्या—**खाक चाटना** मुहावरे का शुद्ध अर्थ **अत्यधिक अपमानित होना, पराजित होना** या **दुर्दशा ग्रस्त होना** होता है। अन्य मुहावरों के शुद्ध अर्थ—**खाक छानना**—बहुत खोजना या दर-दर भटकना **खाक में मिलना**—पूरी तरह नष्ट या चौपट हो जाना **खाक उड़ाना**—बेकार रहना या निरर्थक भटकना

❖ **'जीभ के नीचे जीभ होना' मुहावरे का निकटतम उचित अर्थ है—**
(A) चुप्पी साधना (B) कह कर बदल जाना
(C) धृष्टता से उत्तर देना (D) शेखी मारना **[B]**

व्याख्या—**'जीभ के नीचे जीभ होना'** मुहावरे का अर्थ **'कह कर बदल जाना'** या **'अपनी बात से पलट जाना'** है।
✧ **उदाहरण -** स्वार्थी और धूर्त लोग जीभ के नीचे जीभ रखते हैं, उनकी बातों पर कभी भरोसा नहीं किया जा सकता।

❖ **'शुतुरमुर्ग होना' मुहावरे का निहितार्थ है—**
(A) मूर्ख होना (B) कलात्मक चित्रण करना
(C) मन की बात जान लेना (D) कलह करना **[A]**
Ans.–[A] [Grade 2nd • 13.07.2026]

व्याख्या—**'शुतुरमुर्ग होना'** मुहावरे का अर्थ **मूर्ख होना** अथवा **वास्तविकता से आँखें चुराना** है। शुतुरमुर्ग संकट को देखकर अपना सिर रेत में छिपा लेता है और समझता है कि संकट टल गया, जो उसकी मूर्खता का प्रतीक है।
✧ **नियम -** मुहावरे अपना शाब्दिक अर्थ न देकर एक **विशिष्ट (लाक्षणिक) अर्थ** प्रकट करते हैं।

❖ **'मनमुटाव करना'अर्थ के लिए सर्वाधिक उपयुक्त मुहावरा है—**
(A) गाँठ कतरना (B) गाँठ उखड़ना
(C) गाँठ बाँधना (D) गाँठ करना
Ans.–[D] [Grade 1st • Hindi • 31.05.2026]

व्याख्या—**'मनमुटाव करना'** या मन में द्वेष रखने के अर्थ के लिए **'गाँठ करना'** सर्वाधिक उपयुक्त है।
अन्य मुहावरों के अर्थ –
✧ **गाँठ कतरना –** जेब काटना या ठगना। (उदाहरण – मेले में चोर ने उसकी गाँठ कतर ली।)
✧ **गाँठ बाँधना –** किसी बात को हमेशा के लिए अच्छी तरह याद रखना।

❖ **'हवा में उड़ा देना'मुहावरे का अर्थ है—**
(A) होश ठिकाने न रहना (B) कोई ध्यान न देना
(C) किसी विचार का प्रचार होना (D) बुरी दशा आना
Ans.–[B] [Grade 1st • Hindi • 31.05.2026]

व्याख्या— **मुहावरे का अर्थ – 'हवा में उड़ा देना'** मुहावरे का सही अर्थ है— किसी की बात को अनसुना कर देना या **'कोई ध्यान न देना'**।
✧ **व्याकरण/नियम –** मुहावरे वाक्यों में शाब्दिक अर्थ के बजाय **लाक्षणिक अर्थ** (विशेष अर्थ) प्रकट करते हैं। यहाँ बात को **'हवा में उड़ाने'** का तात्पर्य उसे महत्वहीन समझना है।
✧ **उदाहरण – मैंने उसे आगे पढ़ने की इतनी अच्छी सलाह दी, लेकिन उसने मेरी बात हवा में उड़ा दी।**

❖ **'कलम तोड़ना'मुहावरे का निकटतम अर्थ है—**
(A) लिख न सकना। (B) सुन्दर लिपि में लिखना।
(C) मार्मिक बात लिखना। (D) लेख आदि को काट डालना।
Ans.–[C] [Grade 1st • Hindi • 31.05.2026]

व्याख्या—सही उत्तर **(C) मार्मिक बात लिखना** है। **'कलम तोड़ना'** का अर्थ होता है अत्यंत प्रभावशाली, सुंदर या हृदयस्पर्शी (मार्मिक) लेखन करना।
✧ **व्याकरणिक नियम –** मुहावरे अपना साधारण (शाब्दिक) अर्थ छोड़कर **लाक्षणिक अर्थ** प्रकट करते हैं। यहाँ अर्थ है – लेखन कला की चरम सीमा को दर्शाना।
✧ **उदाहरण –** मुंशी प्रेमचंद ने 'गोदान' में भारतीय किसानों की दुर्दशा का वर्णन करते हुए मानो **कलम ही तोड़ दी**।

❖ **'दाँत खट्टे करना' मुहावरे का अर्थ क्या है? सबसे उपयुक्त विकल्प चुनें।**
(A) दाँत चबाना (B) पराजित करना
(C) हँसी छूटना (D) क्रोधित होना
Ans.–[B] [LDC 05.07.2026]

व्याख्या—**'दाँत खट्टे करना'** एक प्रचलित मुहावरा है, जिसका सटीक अर्थ **'पराजित करना'** या **बुरी तरह हराना** होता है।
व्याकरण नियम—मुहावरे अपने सामान्य अर्थ के बजाय विशेष (लक्षणात्मक) अर्थ प्रकट करते हैं।
उदाहरण—भारतीय क्रिकेट टीम ने विरोधी टीम के **दाँत खट्टे कर दिए।**

❖ **''आगे नाथ न पीछे पगहा'' मुहावरे का क्या अर्थ है? सबसे उपयुक्त विकल्प चुनें।**
(A) विचित्र स्थिति

32 लोकोक्तियाँ
(अर्थ व वाक्य प्रयोग)

❖ **'बहुमूल्य वस्तुओं की बरबादी पर ध्यान न देकर साधारण चीजों की हिफाज़त करना' अर्थ को व्यक्त करने वाली लोकोक्ति है—**

(A) भौर न छोड़े केतकी तीखे कंटक जान
(B) यह मुँह और मसूर की दाल
(C) भूख में गूलर पकवान
(D) मोहरों की लूट कोयलों पर छाप

Ans.–[D] [Grade 2nd • 13.07.2026]

व्याख्या—**'मोहरों की लूट कोयलों पर छाप'** एक प्रसिद्ध लोकोक्ति है जिसका सीधा अर्थ है बहुमूल्य या कीमती वस्तुओं को व्यर्थ गँवा देना और सस्ती या तुच्छ वस्तुओं को सहेज कर रखना।
अन्य लोकोक्तियों के अर्थ निम्न प्रकार है—
✧ **यह मुँह और मसूर की दाल**—अपनी योग्यता या हैसियत से बढ़कर चाहत रखना।
✧ **भूख में गूलर पकवान**—अत्यधिक आवश्यकता या अभाव होने पर साधारण वस्तु भी उत्कृष्ट प्रतीत होती है।

❖ **'चोर के घर मोर' लोकोक्ति का उचित निहितार्थ है—**

(A) जब कोई अपना ही आदमी धोखा दे।
(B) जो जैसा होता है, वैसों का हाल जानता है।
(C) बेईमानी के पैसों में बरकत नहीं होती।
(D) धूर्त के साथ धूर्तता करना।

Ans.–[A] [Grade 2nd • 13.07.2026]

व्याख्या—**'चोर के घर मोर'** लोकोक्ति का अर्थ है **जब कोई अपना ही आदमी धोखा दे** अथवा किसी धोखेबाज का अपने ही करीबी द्वारा ठगा जाना।
उदाहरण - सेठ जी जीवन भर दूसरों की संपत्ति हड़पते रहे, आज उनके सगे बेटे ने ही उन्हें घर से निकाल दिया, इसे कहते हैं चोर के घर मोर।

❖ **'किसी अयोग्य व्यक्ति को कोई सुन्दर या बहुमूल्य वस्तु प्रदान करने'पर प्रयुक्त की जाने वाली सर्वाधिक उपयुक्त लोकोक्ति है—**

(A) बिल्ली के गले में घंटी
(B) ऊँट के गले में बिल्ली
(C) बन्दर के गले में मोतियों की माला
(D) चील के घोंसले में मांस

Ans.–[C] [Grade 1st • Hindi • 31.05.2026]

व्याख्या— जब किसी ऐसे व्यक्ति को कोई कीमती वस्तु मिल जाए जो उसकी कद्र न जानता हो, तो इस लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है।
✧ **वाक्य प्रयोग (उदाहरण)** – अनपढ़ और मूर्ख रामू को इतनी बड़ी कंपनी का डायरेक्टर बना देना तो बिल्कुल ऐसा ही है, जैसे **बन्दर के गले में मोतियों की माला**।

❖ **'दमड़ी की बुढ़िया टका सिर मुँडाई' लोकोक्ति का निकटतम अर्थ है—**

(A) बलवान व्यक्ति अपराध करने पर तुच्छ मनुष्यों से भी दबता।
(B) थोड़े नुकसान से बेईमान का पता चलना।
(C) जितने का माल हो उससे ज्यादा उस पर व्यय होना।
(D) दिन रात काम करने पर भी काम पूरा न होना।

Ans.–[C] [Grade 1st • Hindi • 31.05.2026]

व्याख्या— इसमें 'दमड़ी' प्राचीन काल का एक बहुत छोटा सिक्का (कम मूल्य) है और 'टका' उससे बड़ा सिक्का (अधिक मूल्य) है। इसका शाब्दिक अर्थ है कि बुढ़िया का अपना मूल्य तो केवल एक दमड़ी है, लेकिन उसके बाल मुंडवाने का खर्च एक टका आ गया। अर्थात्, **जब किसी वस्तु के मूल मूल्य से अधिक उसके रखरखाव या मरम्मत पर खर्च हो जाए**, तो इस लोकोक्ति का प्रयोग होता है।

❖ **'ढाक के तीन पात' लोकोक्ति का अर्थ है—**

(A) घूम-फिरकर अपना ही लाभ सोचना
(B) मूर्ख द्वारा शेखी बघारना
(C) काम न करने के बहाने खोजना
(D) परिणाम कुछ भी नहीं निकलना

Ans.–[D] [Agriculture Supervisor • 18-04-2026]
[REET-2022 (Level-I) 23 July 2022], [SI 14.09.2021]

व्याख्या—**'ढाक के तीन पात'** शाब्दिक अर्थ है **''सदैव एक ही स्थिति में रहना या स्थिति में कोई बदलाव न होना।''** व्याकरणिक व व्यावहारिक दृष्टि से इसका सही अर्थ **'परिणाम कुछ भी नहीं निकलना'** है। **उदाहरण**—सरकार ने गरीबी हटाने की कई योजनाएँ बनाईं, लेकिन **स्थिति वही ढाक के तीन पात रही।**

❖ **'आधी छोड़ सारी को धावै, आधी मिले न सारी पावै' लोकोक्ति का उचित अर्थ होगा—**

(A) आधी वस्तु छोड़ देने पर पूरी वस्तु का मिल जाना।
(B) आधा काम बीच में छोड़ देना।
(C) अधिक लालची व्यक्ति को कुछ भी नहीं मिलता।
(D) लालची व्यक्ति सब कुछ पा जाता है।

Ans.–[C] [VDO 02.11.2025]

व्याख्या—**'आधी छोड़ सारी को धावै, आधी मिले न सारी पावै'** लोकोक्ति का उचित अर्थ है—**अधिक लालची व्यक्ति को कुछ भी नहीं मिलता।**
✧ **वाक्य प्रयोग**—राजू तुम्हें जो वेतन मिल रहा है, उसे छोड़कर ज्यादा पैसे के चक्कर में यह काम मत छोड़ो, वरना **''आधी छोड़ सारी को धावै, आधी रहे न सारी पावै''** वाली स्थिति हो जाएगी।

33 शब्द-शक्तियाँ
(अभिधा, लक्षणा, व्यंजना के भेद व उदाहरण)

शब्द-शक्ति के भेद

❖ **'जिस शक्ति के द्वारा शब्द के संकेतित अर्थात् कोशगत अर्थ का ज्ञान हो'— वह शब्द–शक्ति कहलाती है—**

(A) अभिधा (B) शाब्दी व्यंजना
(C) आर्थी व्यंजना (D) लक्षणा

Ans.–[A] [Grade 2nd • 13.07.2026]

व्याख्या—जिस शब्द–शक्ति के माध्यम से शब्द के **मुख्य, साक्षात् संकेतित, लोक-प्रचलित अथवा कोशगत अर्थ (वाच्यार्थ)** का सीधा बोध होता है, उसे **अभिधा** शब्द–शक्ति कहते हैं।

✧ **व्याकरण नियम**—काव्यशास्त्र में शब्द की तीन शक्तियाँ मानी गई हैं—अभिधा, लक्षणा और व्यंजना। मुख्य अर्थ का बोध अभिधा से, मुख्य अर्थ में बाधा उत्पन्न होने पर रूढ़ि या प्रयोजन के आधार पर अर्थ का बोध लक्षणा से तथा वाच्यार्थ और लक्ष्यार्थ से भिन्न किसी विशेष अर्थ (व्यंग्यार्थ) का बोध व्यंजना से होता है।

❖ **निम्न में से कौनसा विकल्प शब्द-शक्तियों के संबंध में संगत नहीं है?**

(A) मुख्यार्थ को छोड़कर जहाँ पर प्रचलन के कारण अन्य अर्थ ग्रहण किया जाता है, वहाँ रूढ़ि लक्षणा होती है।
(B) जो शब्द शक्ति वक्ता, बोद्धव्य, वाक्य अन्यसन्निधि, वाच्य, प्रकरण, देश, काल, काकु, चेष्टा आदि की विशेषता के कारण व्यंग्यार्थ की प्रतीति कराती है, वह आर्थी व्यंजना कही जाती है।
(C) जहाँ पर मुख्य अर्थ की बाधा होने पर सादृश्य संबंधों के द्वारा उसे ग्रहण किया जाये, वहाँ पर शुद्धा प्रयोजनवती लक्षणा होती है।
(D) जहाँ पर मुख्यार्थ की बाधा होने पर लक्षणा शक्ति से अन्य अर्थ निकलता है, परन्तु उसके बाद भी दूसरा अर्थ प्राप्त होता है, वहाँ पर लक्षणामूला शाब्दी व्यंजना होती है।

Ans.–[C] [Grade 1st • Hindi • 31.05.2026]

व्याख्या—भारतीय काव्यशास्त्र के नियम के अनुसार, जहाँ मुख्य अर्थ के बाधित होने पर **सादृश्य (समानता) संबंधों** के आधार पर अन्य अर्थ ग्रहण किया जाता है, वहाँ **'गौणी लक्षणा'** होती है। शुद्धा लक्षणा सादृश्य के अलावा अन्य संबंधों (जैसे– **सामीप्य, साहचर्य** आदि) पर आधारित होती है।

नियम एवं उदाहरण –

✧ **गौणी लक्षणा (सादृश्य पर आधारित) – 'मोहन गधा है।'** (यहाँ मोहन और गधे में मूर्खता की समानता या सादृश्य है।)

✧ **शुद्धा लक्षणा (अन्य संबंधों पर आधारित) – 'लाल पगड़ी आ रही है।'** (यहाँ लाल पगड़ी का सिपाही से सामीप्य/संयोग संबंध है, समानता नहीं।)

❖ **निम्नलिखित में से कौन से वाक्य सही हैं?**

a. शब्द शक्तियाँ तीन प्रकार की होती हैं।
b. शब्द शक्तियाँ चार प्रकार की होती हैं।
c. लक्षणा व्यापार की तीन स्थितियाँ हैं।
d. 'घोड़ा' यौगिक शब्द है।
e. 'दिवाकर' यौगिक शब्द है।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें—

(A) a, c और e (B) a, d और e
(C) b, c और d (D) b, c और e

Ans.–[A] [REET • Hindi (L-2) • 19.01.2026]

व्याख्या—**शब्द शक्ति** वह व्यापार है जिससे शब्द के अर्थ का बोध होता है। ये **तीन प्रकार** की होती हैं – **अभिधा, लक्षणा और व्यंजना। लक्षणा व्यापार** के लिए **तीन मुख्य स्थितियाँ** अनिवार्य हैं – **मुख्यार्थ का बाध, मुख्यार्थ से योग, और रूढ़ि या प्रयोजन। 'दिवाकर'** दो सार्थक शब्दों के मेल से बना है। अतः यह **यौगिक शब्द** है।

अभिधा शब्द शक्ति

❖ **'अभिधा' शब्द शक्ति से कितने प्रकार के शब्दों का अर्थबोध होता है?**

(A) तीन (B) चार (C) पाँच (D) दो

Ans.–[A] [REET • Hindi (L-2) • 19.01.2026]

व्याख्या—**'अभिधा' शब्द शक्ति** के माध्यम से मुख्य रूप से **तीन प्रकार के शब्दों** का अर्थबोध होता है। ये तीन प्रकार के शब्द हैं– **रूढ़, यौगिक, और योगरूढ़**।

लक्षणा शब्द शक्ति

❖ **'लक्षणा' शब्द शक्ति की परिभाषा का सही क्रम है-**

a. मुख्य अर्थ के बाधित होने पर
b. अन्य अर्थ लक्षित हो
c. मुख्य अर्थ से संबंध रखने वाला
d. जिस क्रिया या शक्ति से
e. रूढ़ि अथवा प्रयोजन के कारण

नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें—

(A) a, e, c, d, b (B) c, e, d, b, a
(C) b, c, d, e, a (D) a, e, d, c, b

Ans.–[D] [REET • Hindi (L-2) • 19.01.2026]

व्याख्या—सही क्रम में रखने पर परिभाषा इस प्रकार बनती है – **''मुख्य अर्थ के बाधित होने पर, रूढ़ि अथवा प्रयोजन के कारण, जिस क्रिया या शक्ति से, मुख्य अर्थ से संबंध रखने वाला, अन्य अर्थ लक्षित हो, उसे लक्षणा शब्द शक्ति कहते हैं।''**

परिभाषा – **शब्द शक्ति** शब्द के अर्थ को प्रकट करने वाले व्यापार को शब्द शक्ति कहते हैं **(अभिधा, लक्षणा, व्यंजना)**। **उदाहरण – 'मोहन गधा है।'**

34 हिन्दी भाषा का उद्भव व विकास, हिन्दी भाषा की बोलियाँ व देवनागरी लिपि का परिचय

1. हिन्दी भाषा का उद्भव व विकास (संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश से हिन्दी का विकास)

◈ **पूर्वी हिंदी वर्ग की बोलियों का उद्भव अपभ्रंश के किस रूप से माना जाता है?**

(A) ब्राचड़ (B) अर्धमागधी (C) मागधी (D) शौरसेनी

Ans.–[B] [Grade 2nd • 13.07.2026]

व्याख्या—**पूर्वी हिंदी** उपभाषा का उद्भव **अर्धमागधी अपभ्रंश** से हुआ है। इस भाषाई वर्ग के अंतर्गत मुख्य रूप से तीन बोलियाँ सम्मिलित हैं—**अवधी, बघेली तथा छत्तीसगढ़ी।**

✧ **नियम व उदाहरण**—अपभ्रंश के विभिन्न रूपों से आधुनिक भाषाओं का जन्म हुआ है। **शौरसेनी अपभ्रंश** से पश्चिमी हिंदी (ब्रज, खड़ी बोली) तथा **मागधी अपभ्रंश** से बिहारी हिंदी (भोजपुरी, मगही) का विकास हुआ है।

◈ **पूर्वी हिंदी वर्ग की बोलियों में शामिल नहीं है—**

(A) भोजपुरी (B) बघेली (C) छत्तीसगढ़ी (D) अवधी

Ans.–[A] [Grade 2nd • 13.07.2026]

व्याख्या—**भोजपुरी** बोली **बिहारी हिंदी** उपभाषा वर्ग के अंतर्गत आती है। बिहारी हिंदी की अन्य बोलियों में **मगही** और **मैथिली** शामिल हैं।

✧ **पूर्वी हिंदी** का विकास अर्धमागधी अपभ्रंश से हुआ है। इसके अंतर्गत प्रमुख रूप से तीन बोलियाँ आती हैं—

1. अवधी,2. बघेली, 3. छत्तीसगढ़ी

हिन्दी भाषा का उद्भव

◈ **अर्द्धमागधी अपभ्रंश से विकसित हिंदी बोलियों का समूह है—**

(A) बिहारी (B) राजस्थानी (C) पश्चिमी हिंदी (D) पूर्वी हिन्दी

Ans.–[D] [Grade 1st • Hindi • 31.05.2026]

व्याख्या—सही विकल्प **(D) पूर्वी हिन्दी** है।

✧ **तथ्य एवं व्याकरण नियम**– भाषा विज्ञान के अनुसार, **अर्धमागधी अपभ्रंश** से **पूर्वी हिंदी** उपभाषा का विकास हुआ है।

✧ **उदाहरण**—पूर्वी हिंदी के अंतर्गत तीन प्रमुख बोलियाँ आती हैं— **अवधी, बघेली और छत्तीसगढ़ी।**

✧ बिहारी हिंदी **'मागधी अपभ्रंश'** से तथा राजस्थानी व पश्चिमी हिंदी **'शौरसेनी अपभ्रंश'** से विकसित हुई हैं।

◈ **हिंदी भाषा के विकास की दृष्टि से असंगत है—**

(A) मध्यकाल में पढ़े-लिखे लोगों की भाषा में 'क़, ख़, ग़, ज़ तथा फ़' पाँच ध्वनियाँ सम्मिलित हो गईं।

(B) ऐ तथा औ दो संयुक्त स्वर आदिकालीन हिंदी में प्रयुक्त होने लगे।

(C) आदिकालीन हिंदी में भक्तिकाल की तुलना में बहुत अधिक तत्सम शब्द गृहीत हुए।

(D) मध्यकाल में हिंदी की प्रमुख बोलियाँ विकसित हो गईं, अपभ्रंश के रूप प्राय: समाप्त हो गए।

Ans.–[C] [Grade 1st • Hindi • 31.05.2026]

व्याख्या—**आदिकालीन हिंदी** अपभ्रंश भाषा के बहुत निकट थी, इसलिए उस समय की भाषा में **तद्भव** और **देशज** शब्दों की बहुलता थी। इसके विपरीत, **भक्तिकाल** (विशेषकर रामभक्ति और कृष्णभक्ति काव्य) में संस्कृतनिष्ठ **तत्सम** शब्दों का प्रयोग आदिकाल की तुलना में **बहुत अधिक** हुआ था।

हिन्दी का नामकरण

◈ **किस क्षेत्र के आधार पर 'मैथिली' का नामकरण हुआ और इसके प्रमुख कवि कौन हैं?**

(A) मगध – सरहपा (B) मिथिला – विद्यापति

(C) भोजपुर – भिखारी ठाकुर (D) अवध – जायसी

Ans.–[B]

व्याख्या—

✧ **मैथिली** का नामकरण **मिथिला** (**हिन्दी** और **बांग्ला** क्षेत्र की संधि) के आधार पर हुआ है। **विद्यापति** मैथिली के सबसे प्रसिद्ध कवि हैं, जिन्हें **'मैथिल कोकिल'** भी कहा जाता है।

✧ इसके अन्य साहित्यकार **गोविन्ददास, हरिमोहन झा** आदि हैं।

हिन्दी की उपभाषाएँ

◈ **भाषा विज्ञान के अनुसार, इनमें से कौन-सी बोली 'पश्चिमी हिन्दी' उपभाषा के अंतर्गत नहीं आती है?**

(A) ब्रजभाषा (B) बुंदेली (C) अवधी (D) खड़ी बोली

Ans.–[C]

व्याख्या—पूरे हिन्दी क्षेत्र को 5 मुख्य उपभाषाओं **(पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी, बिहारी, पहाड़ी)** में बाँटा गया है, जिनके अंदर कुल 17-18 बोलियाँ आती हैं।

उदाहरण—पश्चिमी हिन्दी की 5 बोलियाँ हैं - **खड़ी बोली, ब्रजभाषा, हरियाणवी, बुंदेली** व **कन्नौजी**। (पूर्वी हिन्दी में-अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी)।

◈ **हिन्दी की 'व्यावहारिक दृष्टि' से परिभाषा के अनुसार, हिन्दी क्षेत्र में कितनी उपभाषाएँ और बोलियाँ मानी जाती हैं?**

(A) 2 उपभाषाएँ और 8 बोलियाँ

(B) 5 उपभाषाएँ और 18 बोलियाँ

(C) 5 उपभाषाएँ और 17 बोलियाँ

(D) 4 उपभाषाएँ और 18 बोलियाँ

Ans.–[B]

व्याख्या—

✧ **व्यावहारिक दृष्टि** से हिन्दी का तात्पर्य हिन्दी क्षेत्र में बोली जाने वाली **पाँच उपभाषाओं** और **अठारह बोलियों** से है।

✧ ये 5 उपभाषाएँ हैं – पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, बिहारी, राजस्थानी और पहाड़ी जबकि भाषाशास्त्रीय/ग्रियर्सन की दृष्टि से 2 उपभाषाएँ और 8 बोलियाँ हैं।

35 राजभाषा हिन्दी के संवैधानिक प्रावधान
(राजभाषा संबंधी आयोग व समितियाँ)

❖ **संविधान के राजभाषा विषयक प्रावधानों की दृष्टि से असंगत विकल्प है—**

(A) अनुच्छेद 351 ए तथा बी में मातृभाषा के माध्यम से शिक्षण तथा भाषिक अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा के लिए व्यवस्था की गई है।
(B) अनुच्छेद 351 हिंदी भाषा की प्रसार वृद्धि को निदेशित करता है।
(C) अनुच्छेद 343(1) के अनुसार संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी।
(D) अनुच्छेद 343(1) के अनुसार संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अन्तर्राष्ट्रीय रूप होगा।

Ans.–[A] **[Grade 1st • Hindi • 31.05.2026]**

व्याख्या—
✧ यह विकल्प **असंगत (गलत)** है क्योंकि **मातृभाषा के माध्यम से शिक्षण** की व्यवस्था **अनुच्छेद 350(A)** में और **भाषाई अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा** (विशेष अधिकारी की नियुक्ति) का प्रावधान **अनुच्छेद 350(B)** में किया गया है।
✧ **अनुच्छेद 351** केवल **हिंदी भाषा के विकास और प्रसार** के लिए संघ को निर्देश देता है। अन्य सभी विकल्प संविधान के राजभाषा खंड (भाग 17) के अनुसार पूर्णतः सत्य हैं।

❖ **संविधान के किस अनुच्छेद के अनुसार हिंदी देश की राजभाषा है?**

(A) अनुच्छेद 343 (B) अनुच्छेद 243
(C) अनुच्छेद 234 (D) अनुच्छेद 283

Ans.–[A] **[CET (Graduation) • Shift-1st • 27-09-2024]**

व्याख्या—भारतीय संविधान के भाग **17 के अनुच्छेद 343(1)** में यह स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि संघ की **'राजभाषा हिंदी'** और **'लिपि देवनागरी'** होगी। यह अनुच्छेद यह भी निर्दिष्ट करता है कि संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा।

भारत के संविधान में राजभाषा से संबंधित भाग-17

❖ **भारतीय संविधान के किस 'भाग' में राजभाषा से संबंधित नियम और अनुच्छेद दिए गए हैं?**

(A) भाग 15 (B) भाग 17 (C) भाग 18 (D) भाग 22

Ans.–[B]

व्याख्या—**संविधान का नियम**—भारत के संविधान के 'भाग 17' में राजभाषा से संबंधित विस्तृत प्रावधान किए गए हैं। इसी भाग के अंतर्गत **अनुच्छेद 343 से लेकर 351** तक की व्यवस्था की गई है।
उदाहरण—संघ की भाषा, राज्यों की भाषाएँ और न्यायालयों की भाषा आदि सभी विषय संविधान के भाग 17 में ही दर्ज हैं।

संघ की भाषा

❖ **संविधान के अनुसार भारत 'संघ' की राजभाषा और उसकी लिपि क्या तय की गई है?**

(A) हिन्दी और रोमन (B) अंग्रेज़ी और लैटिन
(C) हिन्दी और देवनागरी (D) हिन्दुस्तानी और फारसी

Ans.–[C]

व्याख्या—**संविधान का नियम**—भारतीय संविधान के अनुसार, पूरे भारत संघ के सरकारी और आधिकारिक कामकाज की भाषा 'हिन्दी' होगी और इसे लिखने की लिपि 'देवनागरी' होगी।

संघ की राजभाषा हिन्दी से संबंधित अनुच्छेद

❖ **संविधान का कौन-सा 'अनुच्छेद' सीधे तौर पर यह घोषणा करता है कि ''संघ की राजभाषा हिन्दी होगी''?**

(A) अनुच्छेद 343 (B) अनुच्छेद 345
(C) अनुच्छेद 350 (D) अनुच्छेद 351

Ans.–[A]

व्याख्या—**संविधान का नियम**—भारतीय संविधान के **'अनुच्छेद 343 (1)'** में स्पष्ट रूप से लिखा गया है कि भारत संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी तथा अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा।
उदाहरण—इसी अनुच्छेद 343 के कारण 14 सितंबर को 'हिन्दी दिवस' मनाया जाता है, क्योंकि इसी दिन इसे राजभाषा स्वीकार किया गया था।

राजभाषा अधिनियम 1963

❖ **'राजभाषा अधिनियम 1963' संसद में मुख्य रूप से किस उद्देश्य से पास किया गया था?**

(A) 1965 के बाद भी सरकारी कामकाज में अंग्रेज़ी का प्रयोग जारी रखने के लिए
(B) पूरे भारत में केवल हिन्दी लागू करने के लिए
(C) आठवीं अनुसूची में नई भाषाएँ जोड़ने के लिए
(D) राज्यों की क्षेत्रीय भाषाओं को हटाने के लिए

Ans.–[A]

व्याख्या—**राजभाषा नियम**—संविधान लागू होने के 15 वर्ष बाद अंग्रेज़ी का प्रयोग खत्म होना था। लेकिन गैर-हिन्दी भाषी राज्यों की माँग पर **'राजभाषा अधिनियम 1963'** लाया गया, जिसकी धारा-3 के तहत 1965 के बाद भी हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेज़ी के प्रयोग की छूट दे दी गई।

36 व्यावहारिक पत्र लेखन व कार्यालयी पत्रों से संबंधित ज्ञान

(कार्यालयी पत्र के अंग, औपचारिक, अनौपचारिक एवं अन्य पत्रों के भेद व उदाहरण)

❖ **एक अच्छे पत्र लेखन में नहीं होनी चाहिए :**

(A) विचारों की सुस्पष्टता (B) व्याकरणिक शुद्धता
(C) सरल भाषा शैली (D) अभद्रता

Ans.–[D] [Fourth Class • (Morning) • 21.09.2025]

व्याख्या—नियम—एक अच्छे और प्रभावी पत्र में **विचारों की सुस्पष्टता, व्याकरण की शुद्धता** और **सरल भाषा शैली** का होना अनिवार्य है। पत्र लेखन में हमेशा शिष्टाचार का पालन किया जाता है, इसलिए इसमें **'अभद्रता' (असभ्य या कठोर भाषा)** का प्रयोग बिल्कुल नहीं होना चाहिए।

❖ **निम्नलिखित में से सरकारी पत्र के प्रकार हैं—**

(a) कार्यालय-ज्ञापन (b) संवेदना-पत्र
(c) परिपत्र (d) अनुस्मारक
(e) विवरण-पत्र

नीचे दिए गए विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए।

(A) केवल (a), (d) और (e) (B) केवल (a), (b) और (c)
(C) केवल (a), (c) और (d) (D) केवल (b), (c) और (d)

Ans.–[C] [Stenographer • Paper-2nd • 05-10-2024]

व्याख्या—**'सरकारी पत्र व्यवहार'** के अंतर्गत कई प्रारूप आते हैं। **'कार्यालय-ज्ञापन' (Office Memorandum), 'परिपत्र' (Circular)** और **'अनुस्मारक' (Reminder)** तीनों ही सरकारी पत्र के महत्वपूर्ण प्रकार हैं। **'संवेदना-पत्र' (Condolence Letter)** एक व्यक्तिगत या सामाजिक पत्र है, न कि सरकारी। **'विवरण-पत्र' (Brochure)** सामान्यतः सूचना या विज्ञापन के लिए होता है।
सरकारी पत्र (Official Letter)—सरकारी कामकाज में प्रयुक्त होने वाले विभिन्न प्रकार के पत्र, जिनका एक निश्चित प्रारूप और उद्देश्य होता है।

❖ **यदि मुख्य पत्र के साथ-साथ अन्य संबंधित पत्र भी जोड़े जाएँ तो उसे क्या कहा जाता है?**

(A) परिपत्र (B) पत्र-लेखन (C) प्रतिलिपियाँ (D) संलग्नक

Ans.–[D] [Stenographer • Paper-2nd • 05-10-2024]

व्याख्या—जब किसी मुख्य पत्र के साथ कोई अन्य **आवश्यक दस्तावेज़, कागज़ात या पत्र संदर्भ** के लिए भेजे जाते हैं, तो उन अतिरिक्त कागज़ातों को **'संलग्नक'** कहा जाता है। पत्र के अंत में **'संलग्नक'** या **'संलग्न'** लिखकर क्रम से उन सभी प्रपत्रों की सूची दी जाती है, ताकि प्राप्तकर्ता को यह पता चल सके कि पत्र के साथ और क्या-क्या भेजा गया है।

❖ **नीचे दो कथन दिए गए हैं :**

कथन (I) : जब कोई सरकारी पत्र, कार्यालय-ज्ञापन एक साथ अनेक प्रेषितियों को भेजा जा रहा हो, तब उसे **'परिपत्र'** कहा जाता है।
कथन (II) : कार्यालय आदेश किसी भी मंत्रालय या कार्यालय के कर्मचारियों के लिए समय-समय पर निकाले गए आदेशों की सूचना है।
उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नलिखित विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर चुनें :

(A) कथन (I) असत्य है, किन्तु कथन (II) सत्य है।
(B) कथन (I) और (II) दोनों सत्य हैं।
(C) कथन (I) और (II) दोनों असत्य हैं।
(D) कथन (I) सत्य है, किन्तु कथन (II) असत्य है।

Ans.–[B] [Stenographer • Paper-2nd • 05-10-2024]

व्याख्या—कथन (I) पूरी तरह से **'सत्य'** है। जब कोई एक ही सूचना अनेक मंत्रालयों, विभागों या कार्यालयों को एक साथ भेजनी होती है, तो उसे **'परिपत्र'** कहते हैं। यह सूचना के मानकीकरण और त्वरित प्रसार के लिए उपयोग किया जाता है। **कथन (II) भी सत्य है। 'कार्यालय आदेश'** का प्रयोग किसी कार्यालय के आंतरिक **प्रशासन से संबंधित मामलों,** जैसे- **कर्मचारियों की नियुक्ति, पदोन्नति, अवकाश स्वीकृति** या **अन्य नियमों की सूचना देने के लिए** किया जाता है। ये आदेश संबंधित कर्मचारियों के लिए **'बाध्यकारी'** होते हैं।

❖ **नीचे दो कथन दिए गए हैं :**

कथन (I) : किसी मंत्रालय या विभाग द्वारा अपने कर्मचारियों के लिए समय-समय पर निकाले जाने वाले आदेश को **'कार्यालय आदेश'** कहा जाता है।
कथन (II) : उपर्युक्त सूचना केवल विश्वविद्यालयों के संदर्भ में सही है।
निम्न विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर चुनें :

(A) कथन (I) असत्य है, किन्तु कथन (II) सत्य है।
(B) कथन (I) और (II) दोनों सत्य हैं।
(C) कथन (I) और कथन (II) दोनों असत्य हैं।
(D) कथन (I) सत्य है, किन्तु कथन (II) असत्य है।

Ans.–[D] [Stenographer • Paper-2nd • 05-10-2024]

व्याख्या—कथन (II) सत्य है। **'कार्यालय आदेश'** का प्रयोग किसी भी **सरकारी मंत्रालय**, विभाग या कार्यालय द्वारा अपने कर्मचारियों के लिए **समय-समय पर नियम, निर्देश या सूचनाएँ** जारी करने के लिए किया जाता है। यह आंतरिक प्रशासन का एक महत्वपूर्ण साधन है। **कथन (II)** असत्य है। यह सूचना केवल विश्वविद्यालयों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सभी प्रकार के **सरकारी और कई गैर-सरकारी** संगठनों पर भी लागू होती है। किसी भी संगठन को अपने कर्मचारियों के लिए आंतरिक आदेश जारी करने की आवश्यकता हो सकती है।

❖ **व्यावसायिक एवं प्रशासनिक क्षेत्र में पत्र-लेखन क्या कार्य करता है—**

(A) स्थायी प्रलेख का (B) कुशलमंगल पूछने का
(C) शिष्टाचार निभाने का (D) आमंत्रण देने का

Ans.–[A] [LDC 16.09.2018]

व्याख्या—'व्यावसायिक' व 'प्रशासनिक' क्षेत्र में पत्र-लेखन, स्थाई-प्रलेख का कार्य करता है।

37 पारिभाषिक शब्दावली

(अंग्रेजी के पारिभाषिक (तकनीकी) शब्दों के समानार्थक हिन्दी शब्द)

❖ **'MASTER' का हिन्दी पारिभाषिक शब्द नहीं है—**

(A) पारंगति (B) स्वामी (C) प्रमुख (D) निष्णात

Ans.–[A] [Grade 1st • 10-06-2026]

व्याख्या—
- ✧ '**MASTER**' शब्द के मानक हिन्दी पारिभाषिक अर्थ - **स्वामी**, **प्रमुख**, **मालिक** तथा **निष्णात**।
- ✧ **निष्णात** का अर्थ किसी विषय या कला में पूर्ण रूप से निपुण या दक्ष होना होता है। **पारंगति** एक भाववाचक संज्ञा है।
- ✧ **पारंगति** का अंग्रेजी पारिभाषिक पर्याय **Mastery** (निपुणता या दक्षता) होता है।

❖ **'AWARD' का हिन्दी पारिभाषिक शब्द नहीं है—**

(A) प्रदान करना (B) अधिनिर्णय
(C) पंचाट (D) प्राप्य

Ans.–[D] [Grade 1st • 31-05-2026]

व्याख्या—
- ✧ अंग्रेजी शब्द '**AWARD**' के मान्य हिन्दी पारिभाषिक अर्थ - **प्रदान करना, अधिनिर्णय, पंचाट** तथा **पुरस्कार**।
- ✧ '**प्राप्य**' शब्द का अंग्रेजी पारिभाषिक समतुल्य '**Receivable**' या '**Due**' होता है।

❖ **'BANKRUPT' के लिए समानार्थक हिन्दी शब्द है—**

(A) बैंकर बंधक (B) बैंकिंग
(C) दिवालिया (D) दिवाला

Ans.–[C] [Grade 1st • 03-06-2026]

व्याख्या—
- ✧ '**Bankrupt**' का हिन्दी पारिभाषिक अर्थ '**दिवालिया**' होता है। यह शब्द उस व्यक्ति या संस्था के लिए प्रयुक्त होता है जो अपना **ऋण या कर्ज चुकाने में कानूनी रूप से असमर्थ** हो।
- ✧ '**दिवाला**' शब्द के लिए अंग्रेजी पारिभाषिक शब्द '**Bankruptcy**' अथवा '**Insolvency**' प्रयुक्त होता है।
- ✧ '**Banking**' का अर्थ **बैंक-संबंधी व्यवसाय** या **बैंकिंग** होता है।

❖ **"Computer" का हिन्दी समानार्थक शब्द क्या है?**

(A) संगणक (B) गणक (C) परिगणक (D) दूरभाष

Ans.–[A] [LDC 05.07.2026]

व्याख्या—अंग्रेजी शब्द '**Computer**' का प्रामाणिक हिंदी पारिभाषिक/समानार्थक शब्द '**संगणक**' है।
- ✧ **व्याकरण नियम**—यह तकनीकी शब्दावली का हिस्सा है जिसका निर्माण '**सम**' (उपसर्ग) + '**गणक**' (गणना करने वाला यंत्र) से मिलकर हुआ है।

❖ **सूची-I को सूची-II से सुमेलित करें—**

सूची-I (पारिभाषिक शब्द)	सूची-II (समकक्ष हिन्दी शब्द)
(a) Direction	(i) निदेश
(b) Order	(ii) आदेश
(c) Instruction	(iii) अनुदेश
(d) Ordinance	(iv) अध्यादेश

नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें :

(A) (a)-(iii), (b)-(ii), (c)-(iv), (d)-(i)
(B) (a)-(i), (b)-(ii), (c)-(iii), (d)-(iv)
(C) (a)-(ii), (b)-(i), (c)-(iii), (d)-(iv)
(D) (a)-(iv), (b)-(i), (c)-(ii), (d)-(iii)

Ans.–[B] [Agriculture Supervisor • 18-04-2026]

व्याख्या—उपरोक्त का सही सुमेलन निम्न प्रकार है।
- ✧ **Direction – (i) निदेश** (दिशा-निर्देशन करना)
- ✧ **Order – (ii) आदेश** (आधिकारिक आज्ञा)
- ✧ **Instruction – (iii) अनुदेश** (कार्य करने का तरीका बताना)
- ✧ **Ordinance – (iv) अध्यादेश** (कार्यपालिका द्वारा जारी आपातकालीन क़ानून)

❖ **'AFFIDAVIT' शब्द के लिए हिन्दी में उचित पारिभाषिक शब्द होगा—**

(A) भत्ता (B) मात्रा (C) शपथ-पत्र (D) राशि

Ans.–[C] [VDO 02.11.2025]

व्याख्या—'AFFIDAVIT' शब्द के लिए व हिन्दी में उचित पारिभाषिक शब्द "**शपथ पत्र**" होगा।

❖ **'WITNESS' का हिन्दी पारिभाषिक शब्द है—**

(A) साक्षी (B) सक्षम (C) विवादी (D) सार्वजनिक

Ans.–[A] [PSI • 06.04.2026 (Morning Shift)]

व्याख्या—प्रशासनिक और विधिक शब्दावली में '**WITNESS**' का अर्थ '**साक्षी**' या '**गवाह**' होता है (वह व्यक्ति जो किसी घटना या अपराध को प्रत्यक्ष रूप से देखता है)।
अन्य शब्दों के अर्थ—सक्षम (Competent), विवादी (Litigant/Disputant), सार्वजनिक (Public)।

❖ **'REALIZE' के लिए हिन्दी पारिभाषिक शब्द नहीं है—**

(A) एहसास (B) वसूल करना
(C) उगाहना (D) अनुभव करना

Ans.–[A] [PSI • 06.04.2026 (Morning Shift)]

व्याख्या—'**REALIZE**' का उपयोग वित्तीय मामलों में '**वसूल करना**' या '**उगाहना**' के रूप में होता है। सामान्य अर्थों में इसे '**अनुभव करना**' भी कहा जाता है। '**एहसास**' एक अनौपचारिक उर्दू शब्द है।

38 छन्द

छन्द के प्रकार

◈ **छन्दोमयी रचना में कुछ परिस्थितियों में मात्रा गणना करते समय लघु वर्ण गुरु हो जाता है तथा उसकी दो मात्राएँ गिनी जाती हैं निम्न में से उन परिस्थितियों में शामिल नहीं है—**

(A) संयुक्त व्यंजन से पूर्व (B) अनुस्वार से युक्त होने पर
(C) अनुनासिक से युक्त होने पर (D) विसर्ग से युक्त होने पर

Ans.–[C] [Grade 2nd • 13.07.2026]

व्याख्या—छंद शास्त्र में मात्रा गणना के नियम—**लघु वर्ण के गुरु (दो मात्रा) होने की परिस्थितियाँ—**

1. **संयुक्त व्यंजन से पूर्व** का वर्ण गुरु होता है। **उदाहरण - सत्य** में 'स' गुरु है।
2. **अनुस्वार (ं)** से युक्त लघु वर्ण गुरु होता है। **उदाहरण - कंस** में 'कं' गुरु है।
3. **विसर्ग (:)** से युक्त लघु वर्ण गुरु होता है। **उदाहरण - दुःख** में 'दुः' गुरु है।

अनुनासिक (ँ) अर्थात् चन्द्रबिन्दु का प्रयोग होने पर लघु वर्ण की मात्रा में कोई वृद्धि नहीं होती, वह **लघु (एक मात्रा)** ही रहता है।

वर्णिक छन्द

◈ **जिस छन्द की रचना मात्राओं की बजाय केवल 'वर्णों' (अक्षरों) की गिनती के आधार पर होती है, उसे क्या कहते हैं?**

(A) मात्रिक छन्द (B) वर्णिक छन्द
(C) मुक्तक छन्द (D) विषम छन्द

Ans.–[B]

व्याख्या—**व्याकरण नियम**—जिन छन्दों में वर्णों की संख्या, उनका क्रम और गण (जैसे- **यगण, मगण** आदि) का नियम निश्चित होता है, उन्हें वर्णिक (या वृत्ति) छन्द कहते हैं।
उदाहरण—कवित्त, सवैया, मालिनी आदि वर्णिक छन्द हैं, क्योंकि इनमें मात्रा नहीं, केवल वर्ण (अक्षर) गिने जाते हैं।

◈ **निम्नलिखित वर्णिक छन्दों को उनमें निहित वर्णों की संख्या के आधार पर आरोही क्रम में व्यवस्थित करें—**

(a) मन्दाक्रान्ता (b) कवित्त (घनाक्षरी)
(c) द्रुतविलम्बित (d) मतगयन्द सवैया

सही विकल्प चुनें–

(A) c, a, d, b (B) a, c, d, b
(C) c, d, a, b (D) b, d, a, c

Ans.–[A]

व्याख्या—उपरोक्त छंदों का आरोही क्रम निम्न प्रकार है–
✧ **द्रुतविलम्बित** – 12 वर्ण ✧ **मन्दाक्रान्ता** – 17 वर्ण
✧ **मतगयन्द सवैया** – 23 वर्ण ✧ **कवित्त (घनाक्षरी)** – 31 वर्ण

सवैया छन्द

◈ **हीन भएँ जल मीन अधीन कहा कछु मो अकुलानि समाने।**
नीर-सनेही कों लाय कलंक निरास है कायर त्यागत प्रानै।।
प्रीति की रीति सु क्यों समुझै जड़ मीत के पानि परें कों प्रमानै।
या मन की जु दसा घनआनंद जीव की जीवनि जान ही जानै।।
छन्द की व्याख्या के संबंध में असंगत है—

(A) सवैया छंद है।
(B) साहस के अभाव का संकेत है।
(C) 'घनानंद' से सुजान भी संकेतित हैं।
(D) मीन और विरही की व्याकुलता पूर्णतः सदृश है और दोनों ही वियोग में निराश होकर कायरों की भाँति प्राण त्याग देते हैं।

Ans.–[D] [Grade 1st • Hindi • 31.05.2026]

व्याख्या— सही विकल्प **(D) मीन और विरही की व्याकुलता पूर्णत – सदृश है और दोनों ही वियोग में निराश होकर कायरों की भाँति प्राण त्याग देते हैं।**
काव्य-नियम – यह पंक्तियाँ रीतिमुक्त काव्यधारा के प्रमुख कवि **घनानंद** की हैं।

✧ विकल्प (D) इसलिए असंगत है क्योंकि घनानंद के अनुसार मछली (मीन) और विरही (सच्चे प्रेमी) की स्थिति **समान (सदृश) नहीं है**। घनानंद कहते हैं कि मछली तो कायर है जो पानी से बिछड़ते ही कलंक लगाकर तुरंत प्राण त्याग देती है (**''निरास है कायर त्यागत प्राने''**), जबकि सच्चा प्रेमी (स्वयं कवि) वियोग की असहनीय पीड़ा को सहकर भी जीवित रहता है।
✧ **छंद और अलंकार नियम** – यह एक **सवैया छंद** है (जिसमें 22 से 26 वर्ण होते हैं)। यहाँ कवि ने अपने प्रेम को मछली के प्रेम से श्रेष्ठ बताया है, इसलिए यहाँ **व्यतिरेक अलंकार** है। (नियम: जब उपमेय को उपमान से श्रेष्ठ बताया जाए, तो व्यतिरेक अलंकार होता है। **उदाहरण**—यहाँ कवि का प्रेम उपमेय है और मछली का प्रेम उपमान है)
✧ यहाँ **'जान'** शब्द से घनानंद की प्रेमिका **'सुजान'** की ओर संकेत किया गया है।

कवित्त छन्द

◈ **किस प्रसिद्ध वर्णिक छन्द के प्रत्येक चरण में 31 वर्ण होते हैं और 16 तथा 15 वर्णों पर यति होती है?**

(A) सवैया (B) मालिनी
(C) कवित्त (मनहरण) (D) शिखरिणी

Ans.–[C]

39 अलंकार

अलंकारों के भेद

◈ **निम्न में से यमक अलंकार के उदाहरणों का चयन करें—**
(a) कनक-कनक ते सौगुनी मादकता अधिकाय।
(b) चरन धरत चिंता करत... **'सुबरन'** को ढूँढ़त फिरत।
(c) काली घटा का घमंड घटा।
(d) तीन बेर खाती थीं वे तीन बेर खाती हैं।
(e) हरि पद कोमल कमल-से।
सही विकल्प चुनें—
(A) a, b, c (B) a, c, d (C) b, d, e (D) a, c, e
Ans.–[B]

व्याख्या—
✧ **यमक अलंकार** – जहाँ कोई शब्द एक से अधिक बार प्रयुक्त हो और अर्थ अलग-अलग हों।
(a) **'कनक-कनक'** (धतूरा और सोना) – यमक है।
(c) **'काली घटा'** (बादल) और **'घमंड घटा'** (कम हुआ) – यमक है।
(d) **'तीन बेर'** (बार/दफा) और **'तीन बेर'** (फल) – यमक है।
(b) **'सुबरन'** श्लेष अलंकार का उदाहरण है।
(e) **'कमल-से'** उपमा अलंकार है।

◈ **कविता में चमत्कार पैदा करने के तरीके के आधार पर, अलंकारों को मुख्य रूप से किन दो भेदों में बाँटा गया है?**
(A) रस और छन्द (B) शब्दालंकार और अर्थालंकार
(C) अनुप्रास और यमक (D) उपमा और रूपक
Ans.–[B]

व्याख्या—**व्याकरण नियम**—अलंकारों के मुख्यतः दो भेद माने गए हैं—**1. शब्दालंकार** (जहाँ चमत्कार केवल शब्दों की बनावट पर टिका हो) और **2. अर्थालंकार** (जहाँ चमत्कार शब्द के अर्थ/भाव पर टिका हो)। (तीसरा **'उभयालंकार'** भी होता है)।

शब्दालंकार (अनुप्रास)

◈ **''चारु चंद्र की चंचल किरणें खेल रही हैं जल थल में...'' इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?**
(A) यमक (B) श्लेष (C) अनुप्रास (D) उपमा
Ans.–[C]

व्याख्या—**व्याकरण नियम**—जहाँ कविता में एक या एक से अधिक वर्णों (व्यंजनों) की बार-बार आवृत्ति होती है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।
उदाहरण— **'तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाये,**
झुके कूल सों जल पर सनहुँ हित मनहुँ सुहाए।'
(यहाँ 'त' वर्ण की बार-बार आवृत्ति हुई है)।

यमक

◈ **वह जीते सर मैन के ऐसे देखे मैं न**
हरिनी के नैनान तें हरि! नीके यह नैन
पंक्तियों में निहित अलंकार है—
(A) श्लेष (B) उत्प्रेक्षा
(C) अपह्नुति (D) यमक
Ans.–[D] [Grade 2nd • 13.07.2026]

व्याख्या—इन पंक्तियों में **यमक अलंकार** है।
✧ **यमक अलंकार का नियम -** जहाँ एक शब्द या शब्द-समूह का एक से अधिक बार प्रयोग हो और प्रत्येक बार उसका अर्थ भिन्न हो।
दी गई पंक्ति में **'हरिनी के'** (हिरणी के) और **'हरि नीके'** (हरि अर्थात् भगवान कृष्ण, नीके अर्थात् सुंदर) वर्ण-समूहों की आवृत्ति हुई है, किंतु दोनों के अर्थ सर्वथा भिन्न हैं। यह शब्दों को तोड़कर अर्थ निकालने के कारण **सभंग यमक** का उदाहरण है।

◈ **यमक अलंकार के संबंध में असंगत विकल्प है—**
(A) इसमें वर्णों का आवर्त्तन पूर्वक्रम से नहीं होता है।
(B) इसमें भिन्नार्थक सार्थक वर्णसमूह की आवृत्ति होती है।
(C) इसमें स्वरव्यंजन समुदाय या वर्णसंघात की आवृत्ति होती है।
(D) अर्थवैषम्य इसका आवश्यक तत्त्व है।
Ans.–[A] [Grade 1st • Hindi • 31.05.2026]

व्याख्या— यमक अलंकार में शब्दों या स्वर-व्यंजन समूहों की आवृत्ति अनिवार्य रूप से **उसी क्रम (पूर्वक्रम) में** होती है, परंतु हर बार उनका **अर्थ अलग (अर्थवैषम्य)** होता है। विकल्प (A) यह कह रहा है कि **'पूर्वक्रम से नहीं होता'**, जो कि यमक अलंकार की परिभाषा के विरुद्ध (असंगत) है।
✧ **व्याकरणिक नियम** – 'यमक' शब्द का अर्थ ही **'जोड़ा'** होता है। जब एक ही शब्द (सार्थक वर्णसमूह) दो या दो से अधिक बार समान क्रम में आए, तो वहाँ यमक अलंकार होता है।
✧ **उदाहरण** – **'कनक कनक ते सौगुनी...'** यहाँ **'कनक'** शब्द समान क्रम में दो बार आया है, लेकिन पहले का अर्थ **'धतूरा'** और दूसरे का **'सोना'** है।

वक्रोक्ति

◈ **जहाँ कहने वाले की बात का सुनने वाला जानबूझकर कोई दूसरा (टेढ़ा) अर्थ निकाल ले, वहाँ कौन-सा अलंकार होता है?**
(A) श्लेष (B) यमक (C) वक्रोक्ति (D) रूपक
Ans.–[C]

40 अपठित गद्यांश

गद्यांश - 1

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर अगले तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

हमारी पीढ़ी को स्वतंत्रता अर्जित नहीं करनी पड़ी। पिछली पीढ़ियों के संचित पुण्यों की तरह मिल गई। मिल गई तो मिल गई, सेंत में मिली किसी भी चीज की कद्र कभी किसी ने जानी है! तो भला हम कैसे आजादी की कद्र जानते? पर जब आजादियों में कटौती होती है, तब हम न जाने कैसा-कैसा अनुभव करते हैं! आज़ादी में कटौती? यह क्या चीज है? संविधान ने हमें हर तरह की आजादी की गारंटी दी है न? तो बस, हम हैं आजाद हर तरह से। हमारा देश सर्वसत्ता-संपन्न संप्रभु देश है। आज भले ही हमें अपने हर बड़े फैसले से पहले अमेरिका की भृकुटियों का अनुसरण करने की प्रतिज्ञा करनी पड़ती हो। जनता जनतंत्र का प्रभु है- भले ही उसे हर नीति के बाहर खड़ा कर दिया जाता हो, जनता ठहरी भीड़ और भीड़ पर विश्वास कैसे किया जा सकता है! तो विश्वास करें, जनता के प्रतिनिधियों पर? हाँ, वे तो स्वतंत्रता के संरक्षक हैं! और अगर रक्षक ही भक्षक बन जाए तो क्या जनता अपने इन तथाकथित प्रतिनिधियों को वापस भी बुला सकती है? अगर नहीं तो यह कैसी स्वतंत्रता है? कहाँ की संप्रभुता है? कानून के राज्य, समानता और सामाजिक न्याय की तो बात ही मत कीजिए। इन कटघरों में बँधे, तो आज़ादी कैसी? ना, आज जिस तरह की आज़ादी का उपयोग यह देश कर रहा है, वह इन चौहद्दियों में नहीं आती। कोई चाहे तो इसे अराजकता कह ले!

◈ **जनतंत्र का प्रभु कौन है?**

(A) प्रधानमंत्री (B) राष्ट्रपति
(C) संसद (D) जनता

Ans.–[D] **[REET • Hindi (L-2) • 19.01.2026]**

व्याख्या—उपरोक्त गद्यांश के अनुसार, **जनतंत्र का प्रभु 'जनता'** है, गद्यांश में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि **''जनता जनतंत्र का प्रभु है– भले ही उसे हर नीति के बाहर खड़ा कर दिया जाता हो।''**

◈ **उपर्युक्त गद्यांश के अनुसार 'सेंत में मिलना' मुहावरे का क्या अर्थ है?**

(A) कठिनाई से मिलना (B) संघर्ष से मिलना
(C) बिना परिश्रम के मिलना (D) परिश्रम से मिलना

Ans.–[C] **[REET • Hindi (L-2) • 19.01.2026]**

व्याख्या—गद्यांश के संदर्भ में **'सेंत में मिलना'** मुहावरे का सही अर्थ **बिना परिश्रम के मिलना** या मुफ्त में प्राप्त होना है।

◈ **उपर्युक्त गद्यांश के अनुसार जनता को क्या संज्ञा दी गई है?**

(A) रक्षक की (B) भीड़ की
(C) संरक्षक की (D) प्रहरी की

Ans.–[B] **[REET • Hindi (L-2) • 19.01.2026]**

व्याख्या—गद्यांश के वैचारिक संदर्भ के अनुसार, यहाँ आम **जनता को 'भीड़'** की संज्ञा दी गई है।

गद्यांश - 2

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

भारत में कथा आख्यान की परम्परा बहुत समृद्ध और प्राचीन है। भारतीय कविता और इतिहास का भी इन परम्परा के साथ गहरा और निरंतर सम्बन्ध रहा है। अपने समय की सांस्कृतिक, धार्मिक और ऐतिहासिक ज़रूरतों के तहत इसमें कई फेरबदल हुए, लेकिन चित्त विनोद से इनका नाता हमेशा बना रहा। उपदेश की सीमा तक बदल जाने के बावजूद भी इनमें रोचकता हमेशा बनी रही। वेदों में कथा आख्यानों के बीज रूप के बाद में सदियों तक भारतीय साहित्य में विस्तार और पल्लवन होता रहा। बाद में यह परम्परा महाभारत, रामायण आदि के रूप में स्वतंत्र रूप में विकसित हुई।

◈ **उपर्युक्त गद्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक है—**

(A) भारतीय कथा आख्यान की परम्परा
(B) रामायण और महाभारत
(C) चित्त विनोद
(D) वेदों में कथा आख्यान

Ans.–[A] **[PTET Pre. Tea. Edu. 9.06.2024]**

व्याख्या—गद्यांश का शीर्षक चुनते समय यह देखना आवश्यक होता है कि वह पूरे पाठ का सारांश प्रस्तुत करता हो। 'भारतीय कथा आख्यान की परंपरा' शीर्षक इस गद्यांश के लिए उपयुक्त है।

◈ **उपर्युक्त गद्यांश में प्रयुक्त चित्त विनोद का क्या अर्थ है?**

(A) लोक कल्याण (B) मनोरंजन
(C) आदर्श का अनुकरण (D) उपदेश

Ans.–[B] **[PTET Pre. Tea. Edu. 9.06.2024]**

व्याख्या—हिंदी भाषा में 'चित्त' का अर्थ मन और 'विनोद' का अर्थ होता है मनोरंजन। यह शब्द अक्सर ऐसे संदर्भों में प्रयोग किया जाता है जहाँ किसी चीज़ से खुशी या आनंद प्राप्त हो।

◈ **भारतीय कथा आख्यान परम्परा में समय-समय पर कुछ परिवर्तन का क्या कारण था?**

(A) विदेशी प्रभाव के कारण
(B) सांस्कृतिक-धार्मिक और ऐतिहासिक जरूरतें
(C) परम्परा के निर्वाह के लिए
(D) शासकों की रुचि के कारण

Ans.–[B] **[PTET Pre. Tea. Edu. 9.06.2024]**

41 अपठित पद्यांश

पद्यांश-1

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर अगले तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

क्या रोकेंगे प्रलय मेघ ये, क्या विद्युत घन के नर्तन,
मुझे न साथी रोक सकेंगे, सागर के गर्जन-तर्जन।
मैं अविराम पथिक अलबेला रुके न मेरे कभी चरण,
शूलों के बदले फूलों का किया न मैंने मित्र चयन।
मैं विपदाओं में मुसकाता नव आशा के दीप लिए
फिर मुझको क्या रोक सकेंगे जीवन के उत्थान पतन,
मैं अटका कब, कब विचलित मैं, सतत डगर मेरी संबल
रोक सकी पगले कब मुझको यह युग की प्राचीर निबल
आँधी हो, ओले-वर्षा हों, राह सुपरिचित है मेरी,
फिर मुझको क्या डरा सकेंगे ये जग के खंडन-मंडन।
मुझे डरा पाये कब अंधड़, ज्वालामुखियों के कंपन,
मुझे पथिक कब रोक सके हैं अग्निशिखाओं के नर्तन।
मैं बढ़ता अविराम निरंतर तन-मन में उन्माद लिए,
फिर मुझको क्या डरा सकेंगे, ये बादल विद्युत-नर्तन।

◈ **पद्यांश में आये मेघ, विद्युत, सागर की गर्जना किसके प्रतीक हैं?**

(A) संघर्ष के (B) साहस के
(C) बाधाओं के (D) वीरता के

Ans.–[C] **[REET • Hindi (L-2) • 19.01.2026]**

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि एक ऐसे दृढ़-संकल्पी यात्री का वर्णन कर रहा है जो लक्ष्य-प्राप्ति के लिए हर चुनौती का डटकर सामना करता है। कविता में प्रयुक्त **प्रलय मेघ** (विनाशकारी बादल), **विद्युत का नर्तन** (कड़कड़ाती बिजली) और **सागर की गर्जना** जीवन के मार्ग में आने वाली भीषण **बाधाओं और कठिनाइयों** के प्रतीक हैं।

◈ **उपर्युक्त पद्यांश के अनुसार 'युग की प्राचीर' से क्या तात्पर्य है?**

(A) जीवन में समय-समय पर आने वाली बाधाएँ
(B) समय का सच
(C) वर्तमान का संकट
(D) भविष्य के तनाव

Ans.–[A] **[REET • Hindi (L-2) • 19.01.2026]**

व्याख्या—पद्यांश के संदर्भ में **'युग की प्राचीर'** का लाक्षणिक अर्थ मनुष्य के **जीवन में समय-समय पर आने वाली बाधाओं** और संघर्षों से है।

◈ **उपर्युक्त पद्यांश के अनुसार निम्नलिखित में से कौन-सा तद्भव शब्द है?**

(A) मुसकाता (B) विद्युत
(C) मेघ (D) नव

Ans.–[A] **[REET • Hindi (L-2) • 19.01.2026]**

व्याख्या—**'मुसकाता'** एक **तद्भव** शब्द है, जो दैनिक बोलचाल की हिंदी में प्रयुक्त होता है। अन्य विकल्प **(विद्युत, मेघ, नव)** संस्कृत के मूल तत्सम शब्द हैं।

◈ **एक अच्छे परीक्षक हेतु आवश्यक गुण हैं-**

a. विषयनिष्ठता b. विश्वसनीयता
c. विभेदकारिता d. व्यक्तिपरकता
e. शीघ्रता

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए—

(A) a, c और d (B) b, c और d
(C) a, b और c (D) a, d और e

Ans.–[C] **[REET • Hindi (L-2) • 19.01.2026]**

व्याख्या—एक अच्छे परीक्षण या मूल्यांकन उपकरण में तीन वैज्ञानिक और तकनीकी गुण होने आवश्यक हैं – **विषयनिष्ठता/वस्तुनिष्ठता**, **विश्वसनीयता** और **विभेदकारिता**। एक उत्कृष्ट परीक्षण वह है जिसके परिणामों पर समान परिस्थितियों में हमेशा भरोसा किया जा सके **(विश्वसनीयता)**, जो मेधावी, सामान्य और कमजोर छात्रों के बीच स्पष्ट रूप से अंतर कर सके **(विभेदकारिता)**, और जिसमें मूल्यांकनकर्ता के व्यक्तिगत विचारों का अंकों पर कोई प्रभाव न पड़े। **व्यक्तिपरकता** परीक्षण का एक बड़ा दोष है।

पद्यांश-2

निम्नलिखित पद्यांश के आधार पर प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

''ब्रह्मा से कुछ लिखा भाग्य में,
मनुज नहीं लाया है,
अपना सुख उसने अपने
भुजबल से ही पाया है।
प्रकृति नहीं डरकर झुकती है
कभी भाग्य के बल से,
सदा हारती वह मनुष्य से,
उद्यम से श्रमजल से।

◈ **पद्यांश के आधार पर असंगत कथन बताइये—**

(A) श्रम से प्रकृति पर विजय प्राप्त कर इच्छानुसार फल प्राप्ति हो सकती है।
(B) मनुष्य स्वयं अपने भाग्य का निर्माता है।
(C) जन्म से पूर्व ही प्रकृति मनुष्य के भाग्य में सब कुछ लिख देती है।
(D) भाग्यवादी मानते हैं कि ईश्वर ही भाग्य का निर्माता है।

दक्ष की पुस्तकें Online Order करने के लिए www.dakshbooks.com पर जायें

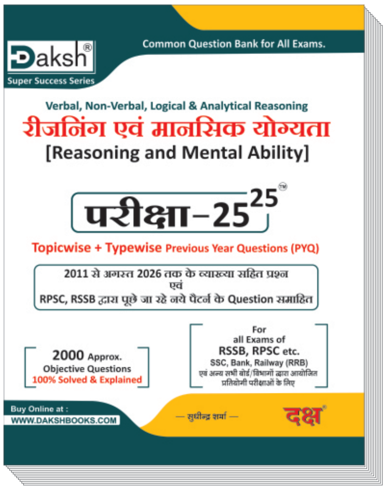

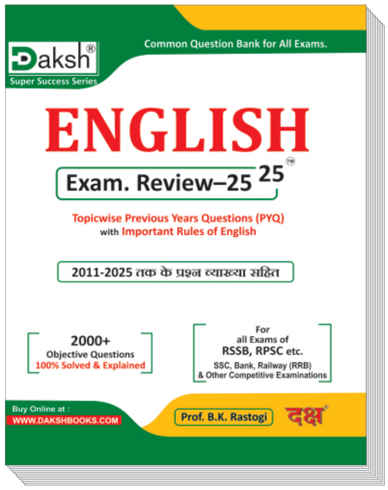

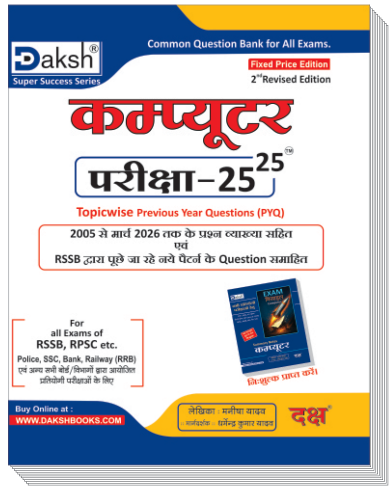

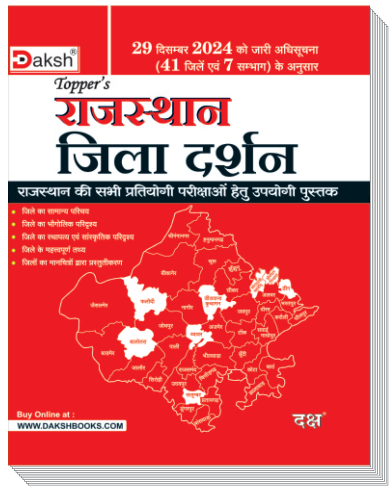

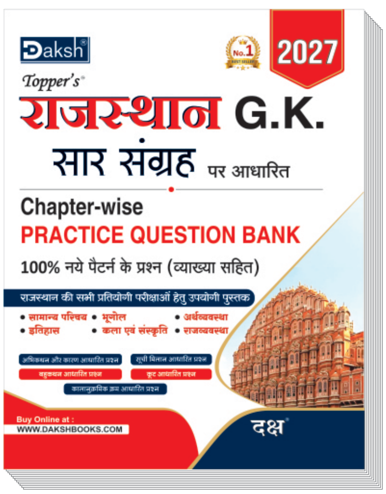

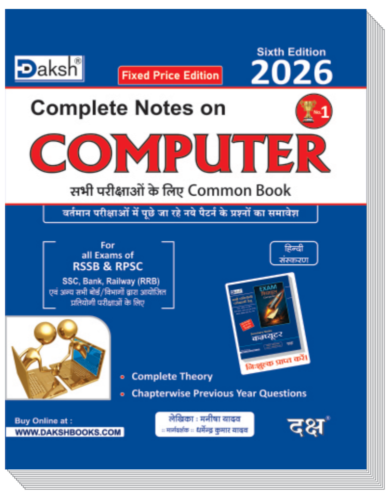

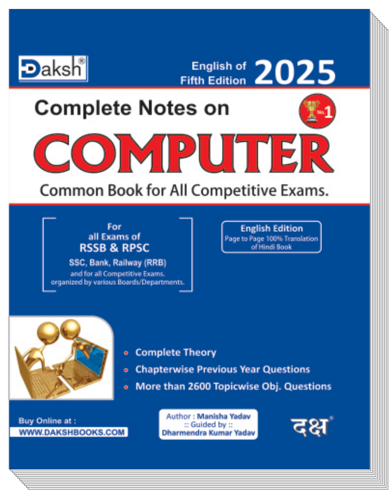

DAKSH PUBLICATIONS
(A Unit of College Book Centre)
A-19, Sethi Colony, Jaipur (Raj.)
Contact : 98291-49659

Code No. D-980 | ₹ 480/-

इस पुस्तक को ONLINE खरीदने हेतु
WWW.DAKSHBOOKS.COM
पर ORDER करें
★ SPECIAL DISCOUNT + FREE DELIVERY ★